

श्री ओघनिर्युक्ति

॥ श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ॥

॥ श्री आगम-गुण-मंजूषा ॥

॥ Sri Agama Guna Manjusa ॥

(सचित्र)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

- १) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र में साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।
- २) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र में दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान में विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।
- ३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक में कितनी वस्तुओं है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।
- ४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण में उपलब्ध है।
- ५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बड़ा सूत्र है, इसमें ४२ शतक है, इनमें भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ में प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुई है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको में वर्णित है। अगर संक्षेप में कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको में उपलब्ध है।
- ६) **ज्ञातार्थधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमें साडेतीन करोड कथाएं थी अब ६००० श्लोको में उन्नीस कथाओं उपलब्ध है।
- ७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको

के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र में सामील है। इसमें ८०० से ज्यादा श्लोक है।

- ८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यतः धर्मकथानुयोग में रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष में जानेवाले उत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको में ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।
- ९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय में चारित्र की आराधना करने अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव में फीर से चारित्र लेकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलिये मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।
- १०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र में मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याघर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र में आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र में भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।
- ११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग में २ श्रुतस्कंध है पहला दुःखविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

- १) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस में चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।
- २) **श्री राजप्रश्रीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

- ३) श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :- यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे में अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्वीप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताई है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपराच पत्रवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।
- ४) श्री प्रज्ञापना सूत्र- यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमें ३६ पदो का वर्णन है। प्रायः ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।
- ५) श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-
- ६) श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र :- इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।
- ७) श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :- यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्वीप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।
- ८) श्री निरयावली सूत्र :- इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।
- ९) श्री कल्पावतंसक सूत्र :- इसमें पचकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।
- १०) श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :- इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।
- ११) श्री पुष्पचुलीका सूत्र :- इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।
- १२) श्री वृष्णिदशा सूत्र :- यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पचक भी कहते है।

- १) श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।
- २) श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :- इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार
- ३) श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।
- ६) श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :- नामानुसार इस पयत्रे में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।
- ७) श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षों में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।
- ८) श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :- मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयत्रे में समजाया गया है।
- ९) श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :- इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।
- १०A) श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :- मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयत्रे में है।
- १०B) श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन है।

१०C) श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :- इस पत्रे में ज्योतिष संबन्धित बड़े ग्रंथों का सार है।

उपरोक्त दसों पयनों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य है। इसके अलावा २२ अन्य पयना भी उपलब्ध हैं। और दस पयनों में चंदाविजय पयनो के स्थान पर गच्छाचार पयना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र
(५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दृष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदृष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) श्री दशवैकालिक सूत्र :- पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विवित्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाई थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) श्री उत्तराध्ययन सूत्र :- परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हैं।

३) श्री निर्युक्ति सूत्र :- चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताई है। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) श्री आवश्यक सूत्र :- छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बड़े सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रातः एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण
(५) कार्यात्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) श्री नंदी सूत्र :- ७०० श्लोक के इस आगम ग्रन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) श्री अनुयोगद्वार सूत्र :- २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गई है। अनुयोग-याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार हैं (१) उत्क्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Introduction

45 Āgamas, a short sketch

I Eleven Āngas :

- (1) **Ācārāṅga-sūtra** : It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.
- (2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra** : It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.
- (3) **Ṭhāṅga-sūtra** : It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.
- (4) **Samavāyāṅga-sūtra** : This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.
- (5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra** : It is also known as Bhagavati-sūtra. It is the largest of all the Āngas. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gapadhara* and answers of Lord Mahāvira. It discusses the four teachings in the centuries. This Āgama is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.
- (6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra** : It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.
- (7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra** : It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvira, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct.

It is of the size of around 800 *Ślokas*.

- (8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra** : It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhārīnī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.
- (9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra** : It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dirghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṅgāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.
- (10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra** : It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvira's answers to the questions put by gods, Vidyādhara, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.
- (11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra** : It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve Upāngas

- (1) **Uvavāyi-sūtra** : It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṛīka's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.
- (2) **Rāyapaseṇī-sūtra** : It is a subservient text to *Sūyagaḍāṅga-sūtra*. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryabha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

- (3) **Jivābhigama-sūtra** : It is a subservient text to Tṛāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.
- (4) **Pannāvaṇā-sūtra** : It is a subservient text to the Samavāyaṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.
- (5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and
- (6) **Candra-prajñapti-sūtra** : These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.
- (7) **Jambūdvipa-prajñapti-sūtra** : It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.
- Nirayāvali-pañcaka** :
- (8) **Nirayāvali-sūtra** : It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king *Śreṇika*'s 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpini*) age.
- (9) **Kalpāvatamsaka-sūtra** : It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king *Śreṇika*, the life-sketch of Padamakumra and others.
- (10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra** : It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śīla, Bala and Anāḍḍhiya.
- (11) **Pupphaculiya-upāṅga-sūtra** : It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.
- (12) **Vahnidaśa-upāṅga sūtra** : It contains 10 stories of Yadu king Anḍhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth

one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣadha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

- (1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra** : It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).
- (2) **Bhattaparinnā-sūtra** : It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) *Ṇgini* devotee (4) *Pādapopagamaṇa*, etc.
- (4) **Santhāraga-payannā-sūtra** : It extols the *Samstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

- (5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra** : The ancient preceptors call this *Payannā-sūtra* as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.
- (6) **Candāvijaya-payannā-sūtra** : It mainly deals with the religious practice that improves one's death.
- (7) **Devendrathui-payannā-sūtra** : It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.
- (8) **Marāṇasamādhi-payannā-sūtra** : It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.
- (9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra** : It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.
- (10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra** : It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 *Payannās* are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 *Payannās* are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The *Gacchācara* is taken, by some, in place of the *Candāvijaya* of the 10 *Payannās*.

IV Six Cheda-sūtras

- (1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
- (3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
- (5) Daśāsruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are

- (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully discerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four Mūlasūtras

- (1) **Daśavaikalika-sūtra** : It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvīdeha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.
- (2) **Uttarādhyayana-sūtra** : It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.
- (3) **Anuyogadvāra-sūtra** : It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate Āgama. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocari*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.
- (4) **Avāśyaka-sūtra** : It is the most useful Āgama for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturvīṃsatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) *Kāyotsarga* and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two Cūlikās

- (1) **Nandī-sūtra** : It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tirthaṅkaras* and 11 *Gaṇadhāras*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.
- (2) **Anuyogadvāra-sūtra** : Though it comes last in the serial order of the 45 Āgamas, the learner needs it first. It is designated as the key to all the Āgamas. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and worldly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

આગમ - ૪૩

ઓઘનિર્યુક્તિ : ૪૩ / ૧

અરિહંત પરમાત્માને નમસ્કાર કરી ચૌદપૂર્વી, દશપૂર્વી અગ્યાર અંગ ના ધારક (સાર્થ) સર્વસાધુઓ ને વંદીને સંક્ષેપથી પણ વિસ્તૃત અર્થ ને ધારણ કરનારી ઓઘ નિર્યુક્તિ હું કહું છું.

ચરણસિત્તરી અને કરણસિત્તરી ના ભેદ કહી સાત દ્વાર જણાવે છે.

- ૧) પ્રતિલેખના ૨) પિંડ ૩) ઉપધિપ્રમાણ ૪) અનાયતન વર્જન ૫) પ્રતિસેવના ૬) આલોચના ૭) વિશુદ્ધિ

સાધુ એકલા ક્યારે વિહાર કરી શકે તેની જુદી જુદી સમજણો આપી છે. રસ્તામા છકાયની જયણા કેવી રીતે કરવી, પગ પોંજવાનું, ગૌચરી કેવી રીતે વહોરવી, ક્યાં વાપરવી, માસકલ્પ, ચોમાસું ક્યાં કરવું ?

શય્યાત્તર પાસેથી શું કલ્પે :- કાલગ્રહણ કેવી રીતે લે, ઠલ્લુ, માત્રુ ક્યાં કરવું, ચોરો ઉપધિવિ ઉપાડી જાય તો પછી શું કરવું. ભીંતને ટેકો ક્યારે આપવું, ગ્લાન, ખાલ, તપસ્વી માટે કેટલીવાર ગૌચરી જવાય, આહાર વધ્યો હોય તો શું કરવું ? દોષ લાગ્યા હોય તો કેવી રીતે પ્રાયચ્છિત લેવું, વિગેરે વાતો કરીને આરાધના માં તત્પર ૩ જે ભવે મોક્ષે જાય અને આ સમાચારી સંયમની વૃદ્ધિ માટે જણાવી છે.

પિંડ-નિર્યુક્તિ - ૪૩ / ૨

(દશ વૈકાલિકના પાંચમા અધ્યયન પિંડેષણા ઉપર રચાયેલી નિર્યુક્તિ)

ગાથા ----- ૬૭૧

ઉપલબ્ધ પાઠ ----- ૮૩૫ સ્લોક પ્રમાણ

આ પિંડ નિર્યુક્તિમાં મુખ્યતથા સાધુ-સાધ્વીના આહાર વગેરે સંબંધી વિસ્તૃત વર્ણન મધગાથાઓમાં કરવામાં આવ્યું છે.

પહેલી ગાથામાં પિંડ નિર્યુક્તિના નામ, સ્થાપના, દ્રવ્ય વગેરે આઠ ભેદો-પ્રભેદો ખતાવીને પૃથ્વી, અપ્(જળ), તેજ, વાયુ, વનસ્પતિ વગેરેના શુદ્ધ-મિશ્ર વગેરે ભેદોનું વર્ણન છે.

તે પછી ૧૬ ઉદ્દગમ દોષના વર્ણનમાં આધાકર્મ વગેરે ૪૨ દોષોનું નિરૂપણ કરીને

પાંચ પ્રકારના વનીપક, પાંચ પ્રકારના શ્રમણો તેમજ કોધ વગેરે ચાર પિંડ અને તેના ઉદાહરણો, ઉદ્દગમ દોષો તથા તેના ૪૩૨ અવાંતર ભંગો વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન છે.

અંતે આહારનું પ્રમાણ, અલ્પ આહારના ગુણ, મિતાહાર, આહાર-પ્રયોજન, આહાર કરવાના અને ન કરવાના છ-છ દોષો અને તેનું વિવેચન કરીને એષણાના ૪૭ દોષો સાથે ઉપસંહાર કરવામાં આવ્યો છે.

सिरि उसहदेवसामिस्स णमो । सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो । नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइमहावीर वद्धमाणसामिस्स । सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं मणमो । सिरि सुगुरु - देवाणं णमो । **कुकुत्तरज्झयणं कुकुत्तरज्झयणं** ॥ अणेयथेरभगवविरइयाणि उत्तरऽज्झयणाणि **☆☆☆ १ पढमं विणयसुयऽज्झयणं ☆☆☆** १. संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो । विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥ २. आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए । इंगियाकारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥२॥ ३. आणाऽनिद्देसकरे गुरूणमणुववायकारए । पडणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥३॥ ४. जहा सुणी पूइकणी णिक्कसिज्जइ सव्वसो । एवं दुस्सीलपडणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥४॥ ५. कणकुंडगं जहित्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरे । एवं सीलं जहित्ताणं दुस्सीले रमई मिए ॥५॥ ६. सुणियाऽभावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य । विणए ठवेज्ज अप्पाणं इच्छंतो हियमप्पणो ॥६॥ ७. तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं पडिलभेज्जओ । बुद्धवुत्ते नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कणहुई ॥७॥ ८. निसंते सियाऽमुहरी बुद्धाणं अंतिए सया । अत्थुजुत्ताइं सिकखेज्जा, निरत्थाणि उ वज्जए ॥८॥ ९. अणुसासिओ न कुप्पेज्जा, खंतिं सेवेज्ज पंडिए । खुट्ठेहिं सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ॥९॥ १०. मा य चंडालियं कासी, बहुयं मा य आलवे । कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाएज्ज एकओ ॥१०॥ ११. आहच्च चंडालियं कट्टु न निणहवेज्ज कयाइ वि । कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नोकडे त्ति य ॥११॥ १२. मा गलिअस्से व कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो । कसं व दट्टुमाइन्ने पावगं परिवज्जए ॥१२॥ १३. अणासवा थूलवया कुसीला मिउं पि चंडं पकरेति सीसा । चित्ताणुया लहु दक्खोववेया पसायए ते हु दुरासयं पि ॥१३॥ १४. नापुट्टो वागरे किंचि पुट्टो वा नालियं वए । कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥१४॥ १५. अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो ॥ अप्पा दंतो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य ॥१५॥ १६. वरं मे अप्पा दंतो संजमेण तवेण य । मा हं परेहि दम्मंतो बंधणेहिं वहेहिं य ॥१६॥ १७. पडणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मणा । आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥ १८. न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्टओ । न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे णो पडिस्सुणे ॥१८॥ १९. नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिंडं व संजए । पाए पसारिए वा वि न चिट्ठे गुरुणंतिए ॥१९॥ २०. आयरिएहिं वाहितो तुसिणीओ न कयाइ वि । पसायपेही नियायट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥ २१. आलवंते लवंते वा न निसिज्जा कयाइ वि । चइऊण आसणं धीरो जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥ २२. आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव सेज्जागओ कयाइ वि । आगम्मुकुडुओ संतो पुच्छेज्जा पंजलीयडो ॥२२॥ २३. एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं । पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुयं ॥२३॥ २४. मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए । भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥२४॥ २५. न लवेज्ज पुट्टो सावज्जं न निरत्थं न मम्मयं । अप्पणट्टा परट्टा वा उभयस्संतरेण वा ॥२५॥ २६. समरेसु अगारेसु संधीसु य मंहापहे । एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥ २७. जं मे बुद्धाऽणुसासंति सीएण फरुसेण वा । मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥२७॥ २८. अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं । हियं तं मन्नई पत्तो, वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥ २९. हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं । वेस्सं तं होइ मूढाणं खंति-सोहिकरं पयं ॥२९॥ ३०. आसणे उवचिट्ठेज्जा अनुच्चे अकुए थिरे । अप्पुट्टाई निरुट्टाई निसीएज्जऽप्पकुक्कुए ॥३०॥ ३१. कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे । अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥३१॥ ३२. परिवाडिए ण चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे । पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥३२॥ ३३. नाइदूरमणासण्णे नऽन्नेसिं चक्खुफासओ । एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्टा लंधिया तं नऽइक्कमे ॥३३॥ ३४. नाइउच्चे व णीए वा नासन्ने नाइदूरओ । फासुयं परकडं पिंडं पडिगाहेज्ज संजए ॥३४॥ ३५. अप्पपाणऽप्पबीयम्मि पडिच्चम्मि संवुडे । समयं संजए भुंजे जयं अप्परिसाडियं ॥३५॥ ३६. सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे । सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥३६॥ ३७. रमए पंडिए सासं हयं भद्दं व वाहए । बालं सम्मति सासंतो गलिअस्सं व वाहए ॥३७॥ ३८. खड्डुगा मे

सौजन्य :- दीर्घसंयमी मुख्य साध्वीश्री हरजश्री ७ म.सा.ना ७५ वर्षना चारित्र पर्यायनी अनुभोदनार्थे श्री परली अयलगरछ जैन संघ, श्री पडाला जैन संघ

चेवडा मे अक्कोसा य वहा य मे । कल्लाणमणुसासंतं 'पावदिट्ठि' त्ति मन्नइ ॥३८॥ ३९. पुत्तो मे भाइ णाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नइ । पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं दासं व मण्णइ ॥३९॥ ४०. न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए । बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥४०॥ ४१. आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिण पसायए । विज्झवेज्ज पंजलिउडे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥४१॥ ४२. धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहारियं सया । तमायरंतो ववहारं गरहं नाभिगच्छई ॥४२॥ ४३. मणोगयं वक्कगयं जाणित्तायरियस्स उ । तं परिगिज्झ वायए कम्मणा उववायए ॥४३॥ ४४. वित्ते अचोइए निच्चं खिप्पं हवइ सुचोयए । जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ॥४४॥ ४५. नच्चा नमइ मेहावी लोए कित्ती से जायए । हवइ किच्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा ॥४५॥ ४६. पुज्जा जस्स पसीयति संबुद्धा पुव्वसंथुया । पसण्णा लाभइस्संति विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥ ४७. स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया । तवो-समायारि-समाहिसंवुडे महाजुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥ ४८. स देव-गंधव्व-मणुस्सपूइए चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं । सिद्धे वा हवइ सासए देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥४८॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ विणयसुयऽज्ज्ञयणं समत्तं ॥१॥ ☆☆☆ २ बिइयं परीसहऽज्ज्ञयणं ☆☆☆ ४९. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जेच्चा अभिभूय मिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ॥१॥ ५०. कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा णच्चा जेच्चा अभिभूय मिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ? इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा णच्चा जेच्चा अभिभूय मिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ? इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जेच्चा अभिभूय मिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंस-मसयपरीसहे ५ अचलेपरीसहे ६ अरइपरीसहे ११ अक्कोसपरीसहे १२ वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्नाणपरीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२ ॥२॥ ५१. परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया । तं भे झदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥३॥ ५२. दिगिंछापरिगए देहे तवस्सी भिक्खु थामवं । न छिदे न छिंदावए न पए न पयावए ॥४॥ ५३. कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए । मायन्ने असण-पाणस्स अदीणमणसो चरे १ ॥५॥ ५४. तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंउ लज्जसंजए । सीओदगं न सेवेज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥६॥ ५५. छिन्नावाएसु पंथेसु आउरे सुपिवासिए । परिसुक्कमुहादीणे तं तितिकखे परीसहं २ ॥७॥ ५६. चरंतं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया । नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चा णं जिणासासणं ॥८॥ ५७. न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई । अहं तु अग्गिं सेवामि इइ भिक्खू न चिंतए ३ ॥९॥ ५८. उसिणपरितावेणं परिदाहेण तज्जिए ॥ धिंसु वा परितावेणं सायं नो परिदेवए ॥१०॥ ५९. उण्हाभितत्ते मेधावी सिणाणं नो वि पत्थए । गायं नो परिसिंचेज्जा न वीएज्जा य अप्पयं ४ ॥११॥ ६०. पुट्ठो य दंस-मसगेहिं समरे व महामुणी । नागो संगामसीसे वा सूरुओ अभिहणे परं ॥१२॥ ६१. न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए । उवेह न हणे पाणे भुंजंते मंस-सोणियं ५ ॥१३॥ ६२. परिजुन्नेहिं वत्थेहिं होक्खामि त्त अचेलए । अदुवा सचलए होक्खं इइ भिक्खू न चिंतए ॥१४॥ ६३. एगया अचेलए होइ सचले यावि एगया । एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ६ ॥१५॥ ६४. गामाणुगामं रीयंतं अणगारं अकिंचणं । अरई अणुप्पवेसे तं तितिकखे परीसहं ॥१६॥ ६५. अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए । धम्मरामे निरारंभे उवसंतं मुणी चरे ७ ॥१७॥ ६६. संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगम्मि इत्थिओ । जस्स एया परिन्नाया सुकडं तस्स सामण्णं ॥१८॥ ६७. एवमादाय मेहावी पंकभूया उ इत्थिओ । नो ताहिं विनिहन्निज्जा चरेज्जऽत्तगवेसए ८ ॥१९॥ ६८. एग एव चरे लाढे अभिभूय परीसहे । गामे वा नगरे वा वि निगमे वा रायहाणिए ॥२०॥ ६९. असमाणो चरे भिक्खू नेय कुज्जा परिग्गहं । असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए ९ ॥२१॥ ७०. सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगओ । अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तसए परं ॥२२॥ ७१. तत्थ से अच्छमाणस्स उवसग्गाऽभिधारए । संकाभीओ

न गच्छेज्जा उट्ठेत्ता अन्नमासणं १० ॥२३॥ ७२. उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खुं थामवं । णाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नई ॥२४॥ ७३. पइरिक्कुवस्सयं लब्धुं कल्लाणं अदुव पावगं । किमेगरायं करिस्सति ? एवं तत्थऽहियासए ११ ॥२५॥ ७४. अक्कोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले । सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥२६॥ ७५. सोच्चा णं फरुसा भासा दारुणा गामकंटगा । तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे १२ ॥२७॥ ७६. हओ ण संजले भिक्खू मणं पि न पओसए । तितिकखं परमं नच्चा भिक्खू धम्मं विचिंतए ॥२८॥ ७७. समणं संजयं दंतं हणेज्जा कोइ कत्थई । नत्थि जीवीस्स नासो त्ति एवं पेहेज्ज संजए १३ ॥२९॥ ७८. दुक्करं खलु भो! निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥३०॥ ७९. गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुपसारए । सेओ अगारवासो त्ति इइ भिक्खू न चिंतए १४ ॥३१॥ ८०. परेसु गासमेसेज्जा भोयणे परिनिट्ठिए । लब्धे पिडे अलब्धे वा नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥३२॥ ८१. अज्जेवाहं न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया । जो एवं कडिसंचिक्खे अलाभो तं न तज्जए १५ ॥३३॥ ८२. नच्चा उप्पत्तियं दुक्खं वेयणाए दुहट्ठिए । अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३४॥ ८३. तेइच्छं नाभिनंदेज्जा संचिक्खेऽत्तगवेसए । एतं खु तस्स सामणं जं न कुज्जा न कारए १६ ॥३५॥ ८४. अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सुयमाणस्स होज्जा गायविराहणा ॥३६॥ ८५. आयवस्स निवाएणं अतुला होइ वेयणा । एवं नच्चा न सेवेति तंतुजं तणतज्जिया १७ ॥३७॥ ८६. किलिण्णगाते मेहावी पंकेण व रएण वा । धिंसु वा परियावेणं सातं नो परिदेवए ॥३८॥ ८७. वेएज्ज निज्जरापेही आरियं धम्मऽणुत्तरं । जाव सरीरभेदो त्ति जल्लं काएण धारए १८ ॥३९॥ ८८. अभिवायणमभुट्ठणं सामी कुज्जा निमंतणं । जे ताइं पडिसेवेति न तेसिं पीहए मुणी ॥४०॥ ८९. अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नातेसी अलोलुए । रसेसु नाणुगेज्जेज्जा नाणुतप्पेज्ज पण्णवं १९ ॥४१॥ ९०. से नूण मए पुव्विं कम्माऽनाणफला कडा । जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कणहुई ॥४२॥ ९१. अह पच्छा उइज्जंति कम्माऽनाणफला कडा । एवमासासे अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं २० ॥४३॥ ९२. निरत्थयम्मि विरओ मेहुणाओ सुसंबुडो । जो सक्खं नाभिजाणामि धम्मं कल्लाणं पावयं ॥४४॥ ९३. तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ । एवं पि विहरओ मे छउमं नो णियट्ठई २१ ॥४५॥ ९४. नत्थि नूणं परे लोए इट्ठी वा वि तवस्सिणो । अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिंतए ॥४६॥ ९५. अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवा वि भविस्सई । मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिंतए २२ ॥४७॥ ९६. एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया । जे भिक्खू न विहण्णेज्जा पुट्ठो केणइ कणहुइ ॥४८॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ परीसहऽज्झयणं समत्तं ॥२॥

☆☆☆ ३ तइयं चाउरंगिज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ९७. चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणिह जंतुणो । माणुसत्तं सुई सद्धा संजमम्मि य वीरियं ॥१॥ ९८. समावण्णा ण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु । कम्मा नाणाविहा कट्ठु पुट्ठो विस्संभिया पया ॥२॥ ९९. एगया देवलोगेसु नरएसु वि एगया । एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥३॥ १००. एगया खत्तिओ होइ तओ चंडाल बोक्कसो । तओ कीड पयंगो य तओ कुंथू पिवीलिया ॥४॥ १०१. एवमावट्ठजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा । न निव्विज्जंति संसारे सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥५॥ १०२. कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा । अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मंति पाणिणो ॥६॥ १०३. कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ । जीवा सोहिमणुप्पत्ता आययंति मणुस्सयं ॥७॥ १०४. माणुस्सं विग्गहं लब्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा । जं सोच्चा कडिवज्जंति तवं खंतिमहिंसयं ॥८॥ १०५. आहच्च सवणं लब्धुं सद्धा परमदुल्लहा । सोच्चा णेयाउयं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥९॥ १०६. सुइं च लब्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं । बहवे रोयमाणा वि नो य णं पडिवज्जई ॥१०॥ १०७. माणुसत्तम्मि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्धे । तवस्सी वीरियं लब्धुं संबुडो निब्बुणे रयं ॥११॥ १०८. सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई । निव्वाणं परमं जाइ घयसित्ते व पावए ॥१२॥ १०९. विगिंच कम्मणो हेउं जसं संचिण खंतिए । पाढवं सरीरं हेच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥१३॥ ११०. विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा । महासुक्का व दिपंता मणंता अप्पुच्चयं ॥१४॥ १११. अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो । उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति पुव्वा वाससया बहू ॥१५॥ ११२. तत्थ ठिच्चा चहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया । उवेति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई

॥१६॥ ११३. खेतं वत्थुं हिरण्णं च पवसो दास-पोरुसं ॥ चत्तारि कामखंधाणि तत्थ से उववज्जई १ ॥१७॥ ११४. मित्तवं २ नायवं ३ होइ उच्चागोए ४ य वण्णवं ५ । अप्पायके ६ महापत्ते ७ अभिजाए ८ जसोए बले १० ॥१८॥ ११५. भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउयं । पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे केवलं बोहि बुज्झिया ॥१९॥ ११६. चउरंगं दुल्लहं मत्ता संजमं पडिवज्झिया । तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆** ॥ चाउरंगिज्जं समत्तं ॥३॥ ४ चउत्थं असंखयं अज्झयणं **☆☆☆** ११७. असंखयं जीविय मा पमायए जरोवणीवस्स हु नत्थि ताणं । एवं वियाणाहि जणे पमत्ते किन्नु विहिंसा अजया गहिति ॥१॥ ११८. जे पावकम्मेहिं धणं मणुस्सा समाययंती अमइं गहाय । पहाय ते पास पयट्टिए नरे वेराणुबद्धा नरगं उवेति ॥२॥ ११९. तेणे जहा संधिमुहे गहीए सकम्मणा कच्चइ पावकारी । एवं पया ! पेच्च इहं च लोए कडाण कम्माण न मोक्खु अत्थि ॥३॥ १२०. परस्स अट्ठा साहारणं जं च करेइ कम्मं । कम्मस्स संसारमावन्न ते तस्स उ वेयकाले न बंधवा बंधवयं उवेति ॥४॥ १२१. वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते इमम्मि लोए अदुवा परत्था । दीवप्पणट्ठे व अणंतमोहे नेयाउयं ददुमददुमेव ॥५॥ १२२. सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी न वीससे पंडिय आसुपत्ते । घोरामुहुत्ता अबलं सरीरं भारुंडपक्खी व चरऽप्पमत्तो ॥६॥ १२३. चरे पयाइं परिसंकमाणो जं किंचि पासं इह मन्नमाणो । लाभंतरे जीविय विहंइत्ता पच्छा परिणाय मलाबघंसी ॥७॥ १२४. उदं निरोहेण उवेइ मोक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी । पुव्वाइं वासाइं चरऽप्पमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥८॥ १२५. स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं । विसीयई सिढिले आउयम्मि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥ १२६. खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे । समेच्च लोगं समया महेसी अप्पाणरक्खी चर मप्पमत्तो ॥१०॥ १२७. मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं अणेगरूवा समणं चरंतं । फासा फुसंती असमंजसं च न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥११॥ १२८. मंदा य फासा बहुलोभणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा । रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं पायं न सेवे पयहिज्ज लोहं ॥१२॥ १२९. जे संख्या तुच्छ परप्पवाई ते पेज्ज-दोसाणुगया परज्झा । 'एए अहम्मे' त्ति दुगुंछमाणो कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥१३॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆** ॥ असंखयं समत्तं ॥४॥ **☆☆☆** ५ पंचमं अकाममरणिज्जं अज्झयणं **☆☆☆** १३०. अन्नवंसि महोहंसि एगे तिन्ने दुरुत्तरं । तत्थ एगे महापत्ते इमं पण्हमुदाहरे ॥१॥ १३१. संतिमे य दुवे ठाणा अक्खाया मारणंतिया । अकाममरणं चेव अकाममरणं तहा ॥२॥ १३२. बालाणं अकामं तु मरणं असइं भवे । पंडियाणं सकामं तु उक्कोसेण सइं भवे ॥३॥ १३३. तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं । कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥४॥ १३४. जे गिद्धे काम-भोगेसु एगे कूडाय गच्छई । न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥५॥ १३५. हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया । को जाणइ परे लोए अत्थि वा पत्थि वा पुणो ? ॥६॥ १३६. 'जणेण सद्धिं होक्खामि' इइ बाले पगब्भई । माक-भोगाणुराणेणं केसं संपडिवज्जई ॥७॥ १३७. तओ से दंडं समारमई तसेसु थावरेसु य । अट्ठाए य अणट्ठाए भूयगामं विहिंसई ॥८॥ १३८. हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे । भुंजमाणे सुरं मंसं 'सेयमेयं' ति मन्नई ॥९॥ १३९. कायसा वयसा मते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु । दुहओ मलं संचिणई सिसुनागो व्व मट्ठियं ॥१०॥ १४०. तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई । पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥ १४१. सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई । बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥ १४२. तत्थोववाइयं ठाणं जहा मे तमणुस्सुयं । आहाकम्मेहिं गच्छंतो सो पच्छा परितप्पई ॥१३॥ १४३. जहा सागडिओ जाणं समं हेच्चा महापहं । विसमं मग्गमोइण्णो अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥ १४४. एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्झिया । बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥ १४५. तओ से मरणंतम्मि बाले संतसई भया । अकाममरणं मरइ धुत्ते वा कलिणा जिए ॥१६॥ १४६. एयं अकागमरणं बालाणं तु पवेइयं उतो सकाममरणं पंडियाणं सुणेइ मे ॥१७॥ १४७. मरणं पि सपुण्णाणं जहा मे तमणुस्सुयं । विप्पसन्नमणाघायं संजयाणं वुसीमओ ॥१८॥ १४८. न इमं सव्वेसु भिक्खूसु न इमं सव्वेसु गारिसु । नाणासीला य गारत्था विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥ १४९. संति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा । गारत्थेहि य सव्वेहिं साधवो संजमुत्तरा ॥२०॥ १५०. चीराजिणं निगिणिणं जडी संघाडि

मुंडिणं । एयाणि वि न तायंति दस्सीलं परियागयं ॥२१॥ १५१. पिंडोलए व्व दुस्सीलो नरगाओ न मुच्चई । भिक्खाए वा गिहत्ये वा सुव्वए कमई दिवं ॥२२॥ १५२. अगारिसामाइयंगाई सद्धी काएण फासए । पोसहं दुहओ पक्खं एगराई न हावए ॥२३॥ १५३. एवं सिक्खासमावन्नो गिहवासे वि सुव्वए । मुच्चई छवि-पव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं ॥२४॥ १५४. अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हमन्नतरे सिया । सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वा वि महिहिए ॥२५॥ १५५. उत्तराई विमोहाई जुइमंताऽणुपुव्वसो । समाइन्नाई जक्खेहिं आवासाई जसंसिणो ॥२६॥ १५६. दीहाउया इह्मिंता समिद्धा कामरूविणो । अहुणोववन्नसंकासा भुज्जोअच्चिमालिप्पभा ॥२७॥ १५७. ताई ठाणाई गच्छंति सिक्खित्ता संजमं तवं । भिक्खाए वा गिहत्ये वा जे संतिपरिनिव्वुडा ॥२८॥ १५८. तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं संजयाणं वुसीमओ । न संतसंति मरणंते सीलमंता बहुस्सुया ॥२९॥ १५९. तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खंतिए । विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥ १६०. तओ काले अभिप्पेए सद्धी तालिसमंतिए । विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥ १६१. अह कालम्मि आघायाय समुस्सयं । सकाममरणं मरइ तिण्हमण्णतरं मुणि ॥३२॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆** ॥ अकाममरणिज्जं अज्झयणं समत्तं ॥५॥ **☆☆☆** ६ छट्ठं खुट्ठागनियंठिज्जं अज्झयणं **☆☆☆** १६२. जावंतऽविज्जापुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा । लुप्पंति बहुसो मूढा संसारम्मि अणंतए ॥१॥ १६३. समिक्ख पंडिए तम्हा पासजाईपडे बहू । अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए ॥२॥ १६४. माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा । नालं ते मम ताणाय लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥३॥ १६५. एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे । छिंदं गिद्धिं सिणेहं च न कंखे पुव्वसंथवं ॥४॥ १६६. गवासं मणि-कुडलं पसवो दास-पोरुसं । सव्वमेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥५॥ १६७. अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए । न हणे पाणिणो पाणे भय-वेराओ उवरए ॥६॥ १६८. आयाणं निरयं दिस्स नाइएज्ज तणामवि । दोगुंछी अप्पणो पाए दिन्नं भुजेज्ज भोयणं ॥७॥ १६९. इहमेगे तु मत्तंति अपच्चक्खाय पावगं । आयरियं विदित्ता णं सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥८॥ १७०. भणंता अकरंता य बंध-मोक्खपइन्निणो । वायाविरिमंतेणं समासासेति अप्पयं ॥९॥ १७१. न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ? । विसंन्ना पावकम्मेहिं बाला पंडियमाणिणो ॥१०॥ १७२. जे केइ सरीरे सत्ता वन्ने रूवे य सव्वसो । मणसा काय-वक्केणं सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥११॥ १७३. आवण्णा दीहमद्धाणं संसारम्मि अणंतए । तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥१२॥ १७४. बहिया उट्ठमादाय नावकंखे कयाइ वि । पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥१३॥ १७५. विविच्च कम्मणो हेउं कालकंखी परिव्वए । मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥१४॥ १७६. सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए । पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो परिव्वए ॥१५॥ १७७. एसणासमिओ लज्जू गामे अनियओ चरे । अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवायं गवेसए ॥१६॥ १७८. एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाण-दंसणधरे अरहा नायपुत्ते भगवं वेंसालीए वियाहिए ॥१७॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆** ॥ खट्ठागनियंठिज्जं समत्तं ॥६॥ **☆☆☆** ७ सत्तमं एलइज्जं अज्झयणं **☆☆☆** १७९. जहाऽऽएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलगं । ओयणं जवसं देज्जा पोसेज्जा वि सयंगणे ॥१॥ १८०. तओ से पुट्ठे परिव्वूढे जायमेदे महोदरे । पीणिए विपुले देहे आएसं पडिकंखए ॥२॥ १८१. जाव न एइ आएसे ताव जीवइ से दुही । अह पत्तम्मि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥३॥ १८२. जहा खलु से ओरब्भे आएसाय समीहिए । एवं बाले अधम्मिट्ठे ईहई निरयाउयं ॥४॥ १८३. हिंसे बाले मूसावाई अद्धाणम्मि विलोवए । अण्णऽदत्तहरे तेणे माई कण्णुहरे सढे ॥५॥ १८४. इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे । भुंजमाणे सुरं मंसं परिव्वूढे परंदमे ॥६॥ १८५. अयकक्करभोई य तुंदिले चियलोहिए । आउयं निरए कंखे जहाऽऽएसं व एलए ॥७॥ १८६. आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया । दुस्साहडं धणं हेच्चा बहुं संचिणिया रयं ॥८॥ १८७. तओ कम्मगुरू जंतू पच्चुप्पणपरायणे । अय व्व आगयाऽऽएसे मरणंतम्मि सोयई ॥९॥ १८८. तओ आउपरिक्खीणे चुया देहा विहिंसगा । आसुरियं दिसं बाला गच्छंति अवसा तमं ॥१०॥ १८९. जहा कागणिए हेउं सहस्सं हारए नरो । अपत्थं अंबगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥११॥ १९०. एवं माणुस्साया कामा देवकामाण अंतिए । सहस्सगुणिया भुज्जो आउं कामा य दिव्विया ॥१२॥ १९१. अणगेवासानउया जासा

पणवओ ठिई । जाणि जीयंति दुम्मेहा ऊणे वाससताउए ॥१३॥ १९२. जहा य तिणिण वणिया मूलं घेतूण निग्गया । एगोऽत्थ लभते लाभं एगो मूलेण आगओ ॥१४॥ १९३. एगो मूलं पि हारेत्ता आगओ तत्थ वाणिओ । ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥१५॥ १९४. माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे । मूलच्छेदेण जीवाणं नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ॥१६॥ १९५. दुहओ गई बालस्स आवई-वहमूलिया । देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासढे ॥१७॥ १९६. तओ जिए सई होइ दुविहं दोग्गई गए । दुल्लहा तस्स उम्मग्गा अब्बाए सुचिरादपि ॥१८॥ १९७. एवं जिए सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं । मूलियं ते पवेसंति माणुसं जोणिमिति ते ॥१९॥ १९८. वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहि-सुव्वया । उवेति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥२०॥ १९९. जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया । सीलवंता सवीसेसा जंति देवयं ॥२१॥ २००. एवमद्दीणवं भिक्खुं अगारिं च वियाणिया । कहं णु जिच्चमेलिक्खं जिच्चमाणो न संविदे ॥२२॥ २०१. जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे । एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अंतिए ॥२३॥ २०२. कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धम्मि आउए । कस्स हेउं पुरेकाउं जोगक्खेमं न संविदे ? ॥२४॥ २०३. इय कामाऽणियद्वस्स अत्तट्ठे अवरज्झई । सौच्चा नेयाउयं मग्गं अं भुज्जो परिभस्सई ॥२५॥ २०४. इह कामाऽणियद्वस्स अत्तट्ठे नावरज्झई । पूइदेहनिराहेणं भवे देवे त्ति मे सुयं ॥२६॥ इही जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं । भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई ॥२७॥ २०६. बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया । चेच्चा धम्मं अहम्मिद्वे नए उववज्जई ॥२८॥ २०७. धीरस्स पस्स धीरत्तं सब्बधम्माणुवत्तिणो । चेच्चा अधम्मं धम्मिद्वे देवेसु उववज्जई ॥२९॥ २०८. तुलिआण बालभावं अबालं चेव पंडिए । चइऊण बालभावं अबालं सेवई मुणि ॥३०॥ त्ति बेमि ॥☆☆☆॥ एलइज्जं समत्तं ॥७॥ ☆☆☆ ८ अट्ठमं काविलीयं अज्झयणं ☆☆☆ २०९. अधुवे असासयम्मी संसारम्मि दुक्खपउराए । किं नाम होज्ज तं कम्मगं जेणाहं दोग्गई न गच्छेज्जा ? ॥१॥ २१०. विजहित्तु पुव्वसंजोगं न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा । असिणेह सिणेहकरेहिं दोस-पओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥२॥ २११. तो पाण-दंसणसमग्गो हियनिस्सेसाए य सब्बजीवाणं । तेसिं विमोक्खणट्ठाए भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥३॥ २१२. सब्बं गंथं कलहं च विप्पजहे तहाविहं भिक्खू । सब्बेसु कामजाएसु पासमाणो न लिप्पई ताई ॥४॥ २१३. भोगामिसदोसविसण्णे हियनिस्सेसबुद्धिवोच्चत्थे । बाले य मंदिए मूढे बज्झई मच्छिया व खेलम्मि ॥५॥ २१४. दुपरिच्चया इमे कामा नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं । अह संति सुव्वया साहू जे तरंति अतरं वणिया व ॥६॥ २१५. समणा मु एगे वदमाणा पाणवहं मिया अजाणंता । मंदा निरयं गच्छंति बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥७॥ २१६. न हु पाणवहं अणुजाणे मुच्चेज्जा कयाइ सब्बदुक्खाणं । एवायरिएहिं अक्खायं जेहिं इमो साहुधम्मो पणत्तो ॥८॥ २१७. पाणे य नाइवाएज्जा से समिए त्ति वुच्चई ताई । तओ से पावगं कम्मं निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥९॥ २१८. जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरेहिं च । नो तेसिं आरभे दंडे मणसा वयस कायसा चेव ॥१०॥ २१९. सुद्धेसणाओ नच्चा णं तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं । जायाए घासमेसेज्जा रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥ २२०. पंताणि चेव सेवेज्जा सीयपिंडं पुराणकुम्मासं । अदु वक्कसं पुलागं वा जवणट्ठा वा निसेवए मंथुं ॥१२॥ २२१. जे लक्खणं च सुविणं च अंगविज्जं च जे पउंजंति । न हु ते समणा वुच्चंति एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥१३॥ २२२. इह जीवियं अनियमेत्ता पब्बट्ठा समाहिजोगेहिं । ते कामभोगरसगिद्धा उववज्जंति आसुरे काए ॥१४॥ २२३. तत्तो वि य उव्वट्ठित्ता संसारं बहुं अणुपरिंति । बहुकम्मलेवलित्ताणं बोही होई सुदुल्लहा तेसिं ॥१५॥ २२४. सिणं पि गो इमं लोयं पडिपुन्नं दलेज्ज एक्कस्स । तेणावि से ण संतुस्से इइ दुप्पूरए इमे आया ॥१६॥ २२५. जहा लाभो तहालाभो लाभा लोभो पवह्णई । दोमासकयं कज्जं कोडीए वि न निट्ठियं ॥१७॥ २२६. नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा गंडवच्छासु णेगचित्तासु । जाओ पुरिसं पलोभित्ता खेलंति जहा व दासेहिं ॥१८॥ २२७. नारीसु नो पगिज्जेज्जा इत्थी विप्पजहे अणगारे । धम्मं च पेसलं नच्चा तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥१९॥ २२८. इति एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं । तरिहित्ति जे उ काहित्ति तेहिं आराहिया दुवे लोग ॥२०॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ काविलीयं समत्तं ॥८॥ ☆☆☆ ९ नवमं नमिपव्वज्जाअज्झयणं ☆☆☆ २२९. चइऊण देवलोगाओ उववण्णो माणुसम्मि लोयम्मि ।

उवसंतमोहणिज्जो सरई पोरणिणं जाइं ॥१॥ २३०. जाइं सरित्तु भगवं सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे । पुत्तं ठवित्तु रज्जे अभिनिक्खमई नमी राया ॥२॥ २३१. सो देवलोगसरिसे अंतेउरवरगओ वरे भोए । भुंजित्तु नमी राया बुद्धो भोए परिच्चयइ ॥३॥ २३२. मिहिलं सपुरजणवयं बलमोरोहं च परिजणं सव्वं । चेच्चा अभिनिक्खंतो एगंतमहिद्धिओ भयवं ॥४॥ २३३. कोलाहलगम्भूतं आसी मिहिलाए पव्वयंतम्मि । तइया रायरिसिम्मि नमिम्मि अभिनिक्खमंतम्मि ॥५॥ २३४. अब्भुद्धियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं । सक्को माहरुवेणं इमं वयणमब्बवी ॥६॥ २३५. किं णु भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला । सुव्वंति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य ? ॥७॥ २३६. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । ततो नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥८॥ २३७. मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे । पत्त-पुप्फ-फलोवेए बहूणं बहुगुणे सय ॥९॥ २३८. वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे । दुहिया असरणा अत्ता एए कंदंति भो ! खगा ॥१०॥ २३९. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं देविदो इणमब्बवी ॥११॥ २४०. एस अग्गी य वाओ य एयं डज्झति मंदिरं । भगवं ! अंतेउरतेणं कीस णं नाववेक्खह ? ॥१२॥ २४१. एयमट्ठं निसामित्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥१३॥ २४२. सुहं वसामो जीवामो जेसि मो नत्थि किंचणं । मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचणं ॥१४॥ २४३. चत्तपुत्त-कलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो । पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥ २४४. बहुं खु मुणिणो भइं अणगारस्स भिक्खुणो । सव्वतो विप्पमुक्कस्स एगंतमणुपस्सओ ॥१६॥ २४५. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं देविदो इणमब्बवी ॥१७॥ २४६. पागारं कारइत्ताणं गोपुरऽट्टालगाणि य । ओमूलग सयग्धीओ तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥१८॥ २४७. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥१९॥ २४८. सद्धं नगरं किच्चा तवसंवरमग्गलं । खत्तिं निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पहंसयं ॥२०॥ २४९. धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया । धिइं च केयणं किच्चा सच्चेणं पलिमंथए ॥२१॥ २५०. तवनारायजुत्तेणं भेत्तूणं कम्मकंचुयं । मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चई ॥२२॥ २५१. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिरायरिसिं देविदो इणमब्बवी ॥२३॥ २५२. पासाए कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य । वालग्गपोइयाओ य ततो गच्छसि खत्तिया ! ॥२४॥ २५३. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥२५॥ २५४. संसयं खलु कुणइ जो मग्गे कुणई घरं । जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥२६॥ २५५. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं देविदं इणमब्बवी ॥२७॥ २५६. आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे । नगरस्स खेमं काऊणं ततो गच्छसि खत्तिया ! ॥२८॥ २५७. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥२९॥ २५८. असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छादंडो पउंजई । अकारिणोऽत्थ बज्झंति मुच्चई कारओ जणो ॥३०॥ २५९. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं देविदो इणमब्बवी ॥३१॥ २६०. जे केइ पत्थिवा तुब्भं नाऽऽणमंति नराहिवा ! वसे ते ठावइत्ताणं ततो गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥ २६१. एयमट्ठं निसामित्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥३३॥ २६२. जो सहस्सं सहस्साणं संगमे दुज्जए जिणे । एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥३४॥ २६३. अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ । अप्पाणमेव अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥ २६४. पंचिदियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोभं च । दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वमप्पे जिए जियं ॥३६॥ २६५. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं देविदो इणमब्बवी ॥३७॥ २६६. जइत्ता विपुले जण्णे भोएत्ता समण-माहणे । दत्ता भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥ २६७. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥३९॥ २६८. जो सहस्सं सहस्साणं मासै मासे गवं दए । तस्सावि संजमो सेओ अदिंतस्स वि किंचिणं ॥४०॥ २६९. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसिं देविदो इणमब्बवी ॥४१॥ २७०. घोरासमं चइत्ताणं अण्णं पत्थेसि आसमं । इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥४२॥ २७१. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥४३॥ २७२. मासे मासे उ जो बालो कुसग्गेण तु भुंजए । न सो सक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥ २७३. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसीं देविदो इणमब्बवी ॥४५॥ २७४. हिरण्णं सुवण्णं मणि-मुत्तं कंसं

दूसं च वाहणं । कोसं वह्णावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥४६॥ २७५. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥४७॥
 २७६. सुवण्ण-रुपस्स उ पव्वया भवे सिया हु केलाससमा असंख्या । नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि इच्छा हु आगाससमा अणंतिया ॥४८॥ २७७. पुढवी साली
 जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह । पडिपुण्णं नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥ २७८. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं देविदो
 इणमब्बवी ॥५०॥ २७९. अच्छेरयमब्भुदए भोए चयसि पत्थिवा ! । असंते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहण्णसि ॥५१॥ २८०. एयमट्ठं निसामेत्ता हेऊ-कारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी देविदं इणमब्बवी ॥५२॥ २८१. सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा । कामे पत्थेमाणा अकामा जंति दुग्गइं ॥५३॥ २८२. अहे वयइ
 कोहेणं माणेणं अहमा गई । माया गइपडिग्घाओ लोहाओ दुहओ भयं ॥५४॥ २८३. अवइज्झिऊण माहणरूवं विउरुव्विऊण इंदत्तं । वंदइ अभित्थुणंतो इमाहिं
 महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥ २८४. अहो ! ते निज्जिओ कोहो अहो ! माणो पराजिओ । अहो ते निरक्किया माया अहो ! लोहो वसीकओ ॥५६॥ २८५. अहो ! ते अज्जवं
 साहु अहो ! ते साहु मद्दवं । अहो ! ते उत्तमा खंती अहो ! ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥ २८६. इहं सि उत्तमो भंते ! पेच्चा होहिसि उत्तमो । लोगुत्तमुत्तमं ठाणं सिद्धिं गच्छसि
 नीरओ ॥५८॥ २८७. एवं अभित्थुणंतो रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए । पयाहिणं करंतो पुणो पुणो वंदई सक्को ॥५९॥ २८८. तो वंदिऊण पाए चक्ककुसलक्खणे
 मुणिवरस्स । आगासेणुप्पइओ ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥ २८९. नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ
 ॥६१॥ २९०. एवं करेति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा । विणियट्ठंति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆ नमिपव्वज्जाऽज्ज्ञयणं समत्तं**
॥९॥ ☆☆☆ १० दसमं दुमपत्तयं अज्ज्ञयणं ☆☆☆ २९१. दुमपत्तए पंडुयए जहा निवडइ राइगणाण अच्चइ । एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम ! मा
 पमायए ॥१॥ २९२. कुसग्गे जह ओसबिंदुए थोवं चिट्ठइ लंबमाणए । एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥२॥ २९३. इइ इत्तिरियम्मि आउए जीवियए
 बहुपच्चवायए । विहुणाहि रयं पुरेकडं समयं गोयम ! मा पमायए ॥३॥ २९४. दुल्लभे खलु माणुसे भवे चिरकालेण वि सब्बपाणिणं । गाढा य विवाग कम्मणो समयं
 गोयम ! मा पमायए ॥४॥ २९५. पुढवीकायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । कालं संखाईयं समयं गोयम ! मा पमायए ॥५॥ २९६. आउक्कायमइगओ उक्कोसं
 जीवो उ संवसे । कालं संखातीयं समयं गोयम ! मा पमायए ॥६॥ २९७. तेउक्कायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । कालं संखातीयं समयं गोयम ! मा पमायए ॥७॥
 २९८. वाउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे । कालं संखाईयं समयं गोयम ! मा पमायए ॥८॥ २९९. वणस्सइकायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । कालमणंत
 दुरंतं समयं गोयम ! मा पमायए ॥९॥ ३००. बेइंदियकायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । कालं संखेज्जसन्नियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥ ३०१.
 तेइंदियकायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । कालं संखेज्जसन्नियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥११॥ ३०२. चउरिंदियकायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । कालं
 संखेज्जसन्नियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥१२॥ ३०३. पंचिंदियकायमइगओ उक्कोस्सं जीवो उ संवसे । सत्तड्ढ भवग्गहणे समयं गोयम ! मा पमायए ॥१३॥ ३०४.
 देवे नेरइए य अइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे । एक्केक्कभवग्गहणे समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥ ३०५. एवं भवसंसारे संसरइ सुभासुभेहिं कम्मेहिं । जीवो
 पमायबहुलो समयं गोयम ! मा पमायए ॥१५॥ ३०६. लद्धूण वि माणुसत्तणं आयरियत्तं पुणरावि दुल्लहं । बहवे दसुया मिलक्खुया समयं गोयम ! मा पमायए
 ॥१६॥ ३०७. लद्धूण वि आयरियत्तणं अहीणपंचिंदियता हु दुल्लहा । विगालिंदियता हु दीसई समयं गोयम ! मा पमायए ॥१७॥ ३०८. अहीणपंचेदियत्तं पि से लभे
 उत्तम धम्मसुई हु दुल्लहा । कुत्तिथिनिसेवए जणे समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥ ३०९. लद्धूण वि उत्तमं सुइं सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा । मिच्छत्तनिसेवए जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥१९॥ ३१०. धम्मं पि हु सद्दहंतया दुल्लभया काएण फासया । इह कामगुणेसु मुच्छिया समयं गोयम ! मा पमायए ॥२०॥ ३११.
 परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरया भवन्ति ते । से सोयबले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥ ३१२. परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरया भवन्ति ते । से

चक्खुबले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥ ३१३. परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरया भवंति ते । से घाणबले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥
 ३१४. परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरया भवंति ते । से जिब्भबले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ॥२४॥ ३१५. परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरया भवंति ते ।
 से फासबले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥ ३१६. परिजूरइ ते सरीरयं केसा पंडुरया भवंति ते । से सव्वबले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥
 ३१७. अरई गंडं विसूइया आयंका विविहा फुसंति ते । विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं समयं गोयमं ! मा पमायए ॥२७॥ ३१८. वोच्छिंदं सिणेहमप्पणो कुमुयं सारइयं
 व पाणियं । से सव्वसिणेहवज्जिए समयं गोयमं ! मा पमायए ॥२८॥ ३१९. चेच्चा ण धणं च भारियं पव्वइओ हि सि अणगारियं । मा वंतं पुणो वि आविए समयं गोयमं !
 मा पमायए ॥२९॥ ३२०. अवइज्झिय मित्त-बंधवं विउलं चैव धणोहसंचयं । मा तं बितियं गवेसए समयं गोयमं ! मा पमायए ॥३०॥ ३२१. न हु जिणे अज्ज दीसई
 बहुमए दीसइ मग्गदेसिए । संपइ नेआउए पहे समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥ ३२२. अवसोहिय कंटगापहं ओइण्णो सि पहं महालयं । गच्छसि मग्गं विसोहिया
 समयं गोयमं ! मा पमायए ॥३२॥ ३२३. अबले जह भारवाहए मा मग्गे विसमेऽवगाहिया । पच्छा पच्छाणुतावए समयं गोयमं ! मा पमायए ॥३३॥ ३२४. तिण्णो
 हु सि अन्नवं महं किं पुण चिद्धसि तीरमागओ ? । अभितुर पारं गमित्तए समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥ ३२५. अकलेवरसेणामुस्सिया सिद्धिं गोयम ! लोयं
 गच्छसि । खेमं च सिवं अणुत्तरं समयं गोयमं ! मा पमायए ॥३५॥ ३२६. बुद्धे परिनिव्वुए चरे गाम गए नगरे व संजए । संतिमग्गं च वूहए समयं गोयम ! मा पमायए
 ॥३६॥ ३२७. बुद्धस्स निसम्म भासियं सुकहियमद्वपदोवसोहियं । रागं दोसं च छिदिया सिद्धिगइं गए गोयमे ॥३७॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ दुमपत्तयं अज्झयणं
 समत्तं ॥१०॥ ☆☆☆ ११ एगारसमं बहुस्सुयपुज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ३२८. संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो । आयारं पाउकरिस्सामि
 आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥ ३२९. जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अनिग्गहे । अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥२॥ ३३०. अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं
 सिक्खा न लब्भई । थंभा १ कोहा २ पमाएणं ३ रोगेणाऽऽलस्सएण य ४-५ ॥३॥ ३३१. अह अट्टहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई । अहस्सिरे १ सया दंते २ न
 य मम्ममुयाहरे ३ ॥४॥ ३३२. नासीले ४ ण विसीले ५ न सिया अइलोलुए ६ । अकोहणे ७ सच्चरए ८ सिक्खासीले त्ति वुच्चइ ॥५॥ ३३३. अह चोदसहिं ठाणेहिं
 वट्टमाणे उ संजए । अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च ण गच्छई ॥६॥ ३३४. अभिक्खणं कोही भवइ १ पबंधं च पकुव्वई २ । मित्तिज्जमाणो वमई ३ सुयं लद्धूण
 मज्जई ४ ॥७॥ ३३५. अवि पावपरिक्खेवी ५ अवि मित्तेसु कुप्पई ६ । सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ७ ॥८॥ ३३६. पइण्णवाई ८ दुहिले ९ थद्धे १० लुद्धे
 ११ अणिग्गहे १२ । असंविभागी १३ अचियत्ते १४ अविणीए त्ति वुच्चई ॥९॥ ३३७. अह पण्णरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई । नीयावत्ती १ अचवले २ अमाई
 ३ अकुतूहले ४ ॥१०॥ ३३८. अप्पं च अभिक्खिवई ५ पबंधं च न कुव्वई ६ । मित्तिज्जमाणो भवई ७ सुयं लद्धुं न मज्जई ८ ॥११॥ ३३९. न य पावपरिक्खेवी न य
 मित्तेसु कुप्पई । अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई ॥ ३४०. कलह-डमरवज्जए १२ बुद्धे अभिजाइए १३ । हिरिमं १४ पडिसंलीणे १५ सुविणीए त्ति वुच्चई
 ॥१३॥ ३४१. वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं । पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरि हई ॥१४॥ ३४२. जहा संखम्मि पयं निहियं दुहओ वि विरायई । एवं
 बहुस्सुए भिक्खू धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥ ३४३. जहा से कंबोयाणं आइण्णे कंथए सिया आसे जवेण पवरे एवं भवइ बहुस्सुए ॥१६॥ ३४४. जहाऽऽइण्ण
 समारूढे सूरे दढपरक्कमे । उभओ नंदिघोसेणं एवं भवइ बहुस्सुए ॥१७॥ ३४५. जहा करेणुपरिकिन्ने कुजरे सट्ठिहायणे । बलवंते अप्पडिहए एवं भवइ बहुस्सुए ॥१८॥
 ३४६. जहा से तिक्खसिंगे जायक्खंधे विरायई । वसहे जूहाहिवई एवं भवइ बहुस्सुए ॥१९॥ ३४७. जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए । सीहे मियाण पवरे एवं
 भवइ बहुस्सुए ॥२०॥ ३४८. जहा से वासुदेवे संख-चक्क-गदाधरे । अप्पडिहयबले जोहे एवं भवइ बहुस्सुए ॥२१॥ ३४९. जहासे चाउरंते चक्कवट्ठी महिहिए ।
 चोदसरयणाहिवई एवं भवइ बहुस्सुए ॥२२॥ ३५०. जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरंदरे । सक्के देवाहिवई एवं भवइ बहुस्सुए ॥२३॥ ३५१. जहा से तिमिरविद्धंसे

उत्तिट्ठंते दिवाकरे । जलंते इव तेएणं एवं भवइ बहुस्सुए ॥२४॥ ३५२. जहा से उडुवई चंदे नक्खत्तपरिवारिए । पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं भवइ बहुस्सुए ॥२५॥ ३५३. जहा से सामाइयाणं कोट्टागारे सुरक्खिए । नाणाधन्नपडिपुत्ते एवं भवइ बहुस्सुए ॥२६॥ ३५४. जहा सा दुमाण पवरा जंबू नाम सुदंसणा । अणाढियस्स देवस्स एवं भवइ बहुस्सुए ॥२७॥ ३५५. जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा । सीया नीलवंतपहवा भवइ बहुस्सुए ॥२८॥ ३५६. जहा से नगाण पवरे सुमहं मंदरे गिरी । नाणोसहिपज्जलिए एवं भवइ बहुस्सुए ॥२९॥ ३५७. जहा से सयंभुरमणे उदही अक्खओदए । नाणारयणपडिपुण्णे एवं भवइ बहुस्सुए ॥३०॥ ३५८. समुद्दगंभीरासमा दुरासया अचक्किया केणइ दुप्पहंसया । सुयस्स पुण्णा विपुलस्स ताइणो खवेत्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥३१॥ ३५९. तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा उत्तमट्ठगवेसए । जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणिज्जासि ॥३२॥त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ बहुसुयपुज्जं समत्तं ॥११॥ ☆☆☆ १२ बारसमं हरिएसिज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ३६०. सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी । हरिएस बलो नाम आसि भिक्खू जिइंदिओ ॥ ३६१. इरिएसण-भासाए उच्चारसमिईसु य । जओ आदाण-निक्खेवे संजमो सुसमाहिओ ॥२॥ ३६२. मणगुत्तो वइगुत्तो कायगुत्तो जिइंदिओ । भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि जन्नवाडमुवट्ठिओ ॥३॥ ३६३. तं पासिरुणमेज्जंतं तवेण परिसोसियं । पंतोवहिउवगरणं ओहसंति अणारिया ॥४॥ ३६४. जाईमयपडिबद्धा हिंसगा अजिइंदिया । अबंभचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ॥५॥ ३६५. कयरे आगच्छइ दित्तरूवे काले विकराले फोक्कणासे । ओमचेलगे पंसुपिसायभूए संकरदूसं परिहरिय कंठे ? ॥६॥ ३६६. कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे ? काए व आसा इह मागओ सि ? । ओमचेलया ! पंसुपिसायभूया ! गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओ सि ? ॥७॥ ३६७. जक्खो तहिं त्तिदुयरुक्खवासी अणुकंपसो तस्स महामुणिस्स । पच्छायइत्ता नियगं सरीरं इमाइं वयणाइं उदाहरित्था ॥८॥ ३६८. समणो अहं संजओ बंभचारी विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ । परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले अण्णस्स अट्ठा इह मागओ मि ॥९॥ ३६९. विटरिज्जइ खज्जई भुज्जई य अण्णं पभूयं भवयाणमेयं । जाणेह मे जायणजीविणो त्ति सेसावसेसं लहऊ तवस्सी ॥१०॥ ३७०. ऊवक्खडं भोयण माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं । न ऊ वयं एरिसमण्ण-पाणं दाहामु तुज्जं किमिहं ठिओ सि ? ॥११॥ ३७१. थलेसु बीयाइं ववंति कासगा तहेव निन्नेसु य आससाए । एयाए सद्धाए दलाह मज्झं आराहएपुण्णमिणं तु खेत्तं ॥१२॥ ३७२. खेत्तेणि अमहं विइयाणि लोए जहिं पइण्णा विरुहंति पुण्णा । जे माहणा जाइ-विज्जोववेया ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१३॥ ३७३. कोहो य माणो य वहो य जेसिं मोसं अदत्तं च परिग्गहो य । ते माहणा जाइ-विज्जाविहूणा ताइं तु खेत्ताइं सुपावगाइं ॥१४॥ ३७४. तुब्भेऽत्थ भो ! भारहरा गिराणं अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए । उच्चावयाइं मुणिणो चरंति ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१५॥ ३७५. अज्झावयाणं पडिकूलभासी पभाससे किण्णु सगासे अमहं । अवि एयं विणस्सउ अण्ण-पाणं न य णं दाहामु तुहं नियंठा ! ॥१६॥ ३७६. समिईहिं मज्झं सुसमाहियस्स गुत्तीहिं गुत्तस्स जिइंदियस्स । जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं किमज्ज जण्णाण लभित्थ लाभं ? ॥१७॥ ३७७. के एत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं । एयं दंडेण फलेण हंता कंठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥ ३७८. अज्झवयाणं वयणं सुणेत्ता उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा । दंडेहिं वेत्तेहिं कसेहिं चेव समागया तं इसि तालयंति ॥१९॥ ३७९. रत्तो तहिं कोसलियस्स धूया भद्द त्ति नामेण अनिदियंगी । तं पासिया संजयं हम्ममाणं कुद्धे कुमारे परिनिव्वेवइ ॥२०॥ ३८०. देवभिओगेण निओइएणं दिन्ना मु रण्णा मणसा न झाया । नरिंद-देविंदऽभिवंदिएणं जेणामि वंता इसिणां स एसो ॥२१॥ ३८१. एसो हु सो उग्गतवो महप्पा जिइंदिओ संजओ बंभयारी । जो मे तथा नेच्छइ दिज्जमाणी पिउणा सयं कोसलिएण रण्णा ॥२२॥ ३८२. महाजसो एस महाणुभागो घोरव्वओ घोरपरक्कमो य । मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं मा सव्वे तेएण भे निदहेज्जा ॥२३॥ ३८३. एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा पत्तीए भद्दाए सुभासियाइं । इसिस्स वेयावडियट्ठयाए जक्खा कुमारे विनिवारयंति तहिं तं जणं तालयंति ॥२४॥ ३८४. ते घोररवा ठिय अंतलिक्खे असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति । ते भिन्नदेहे रूहियं वमन्ते पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥ ३८५. गिरिं नहेहिं खणह अयं दंतेहिं खायह । जायतेयं पाएहिं हणह जे भिक्खुं अवमण्णह ॥२६॥ ३८६. आसीविसो उग्गतवो महेसी घोरव्वओ घोरपरक्कमो य । अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥ ३८७. सीसेण एयं सरणं उवेह समागया सव्वजणेण तुब्भे । जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा लोयं

पि कुविओ डहेज्जा ॥२८॥ ३८८. अवहेडियपट्टिसउत्तमंगे पसारियाबाहु अकम्मचेट्टे । निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते उड्डम्मुहे निग्गयजीह-नेते ॥२९॥ ३८९. ते पासिया खंडिय कट्टभूए विमणो विसन्नो अह माहणो सो । इसिं पसाएइ सभारियाओ हीलं च निदं च खमाह भंते ! ॥३०॥ ३९०. बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं जं हीलिया तस्स खमाह भंते ! । महप्पसाया इसिणो भवंति न हू मुणी कोवपरा भवंति ॥३१॥ ३९१. पुब्बिं च इण्हिं च अणागयं च मणप्पओसो न मे अत्थि कोई । जक्खा हु वेयावडियं करेति तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥ ३९२. अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा तुब्भे न वि कुप्पह भूइपत्ता । तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥ ३९३. अच्छेमो ते महाभाग ! न ते किंचि, न अच्छिमो । भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजणसंजुयं ॥३४॥ ३९४. इमं च मे अत्थि पभूयमणं तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्टा । बाढं ति पडिच्छइ भत्त-पाणं मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥ ३९५. तहियं गंधोदय-पुप्फवासं दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्टा । पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं आगासे अहोदाणं च घुट्टं ॥३६॥ ३९६. सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो न दीसई जाइविसेसो कोई । सोवागपुत्तं हरिएससाहुं जस्सेरिसा इह्मि महाणुभागा ॥३७॥ ३९७. किं माहणा ! जोइसमारभंता उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ? । जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥ ३९८. कुसं च जूवं तण-कट्टमग्गिं सायं च पायं उदगं फुसंता । पाणाइं भूयाइं विहेडयंता भुज्जो वि मंदा ! पकरेह पावं ॥३९॥ ३९९. कहं चरे भिक्खु ! वयं जयामो पावाइं कम्माइं पणुल्लयामो ? । अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया ! कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ? ॥४०॥ ४००. छज्जीवकाए असमारभंता मोसं अदत्तं च असेवमाणा । परिग्गहं इत्थिओ माण मायं एयं परिन्नाय चरंति दंता ॥४१॥ ४०१. सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं इह जीवियं अणवकंखमाणा । वोसट्टकाया सुचिचत्तदेहा महाजयं जयई जन्नई जन्नसिट्ठं ॥४२॥ ४०२. के ते जोई ? के व ते जोइठाणा ? का ते सुया ? किं व ते कारिसंगं ? । एहा य ते कयरा संति भिक्खु ? कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥४३॥ ४०३. तवो जोई जीवो जोइठाणं जोया सुया सरीरं कारिसंगं । कम्मं एहा संजमजोग संती होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥४४॥ ४०४. के ते हरए ? के य ते संतितित्थे ? कहिं सि ण्हाओ व रयं जहासि ? । आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया ! इच्छामु नाउं भवओ सकासे ॥४५॥ ४०५. धम्मे हरए बंभे संतितित्थे अणाइले अत्तपसण्णलेसे । जहिसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥ ४०६. एयं सिणाणं कुसलेहिं दिट्ठं महासिणाणं इसिणं पसत्थं । जहिसि ण्हाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमं ठाण पत्त ॥४७॥ ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ हरिएसिज्जं समत्तं ॥ ☆☆☆ १३ तेरसमं चित्त-सभूइज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ४०७. जाईपराजिओ खलु कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि । चुलणीए बंभदत्तो उववण्णो पउमगुम्माओ ॥१॥ ४०८. कपिल्ले संभूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि । सेट्टिकुलम्मि विसाले धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥२॥ ४०९. कम्पिलाम्मि य नयरे समागया दो वि चित्तसंभूया । सुहदुक्खफलविवागं कहेति ते एगमेगस्स ॥३॥ ४१०. चक्कवट्ठी महिड्ढिओ बंभदत्तो महायसो । भायरं बहुमाणेण इमं वयणमब्बवी ॥४॥ ४११. आसिमो भायरो दो वि अण्णमण्णवसाणुगा । अण्णमण्णमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥५॥ ४१२. दासा दसन्ने आसी मिगा कालिंजरे नगे । हंसा मयंगतीराए सोवागा कासभूभिए ॥६॥ ४१३. देवा य देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया । इमा णो छट्टिया जाई अण्णमण्णेण जा विणा ॥७॥ ४१४. कम्मा निदाणपगडा तुमे रायं ! विचित्तिया । तेसिं फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥८॥ ४१५. सच्च-सोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा । ते अज्ज परिभुंजामो किं नु चित्तो वि से तहा ? ॥९॥ ४१६. सव्वं सुच्चिण्णं सफलं नराणं कडाण कम्माण न मोक्खु अत्थि । अत्थेहिं कामेहिं य उत्तमेहिं आया ममं पुण्णफलोववेए ॥१०॥ ४१७. जाणाहि संभूय ! महाणुभागं महिड्ढियं पुन्नफलोववेयं । चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं ! इह्मि जुई तस्स वि य प्पभूया ॥११॥ ४१८. महत्थरूवा वयणऽप्पभूया गाहाऽणुगीया नरसंघमज्झे । जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया इहं जयंते समणो मि जाओ ॥१२॥ ४१९. उच्चोदए १ महु २ कक्के ३ य बंभे ५ पवेइया आवसहा य रम्मा । इमं गिहं वित्तधणप्पभूयं पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥ ४२०. नट्टेहिं गीएहिं य वाइएहिं नारीजणाइं परिचारयंतो । भुंजाहि भोगाइं इमाइं भिक्खु ! मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥ ४२१. तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं नराहिवं कामगुणेषु गिद्धं । धम्मस्सिओ तस्स

हियाणुपेही चित्तो इमं वक्कमुदाहरित्था ॥१५॥ ४२२. सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडंबियं । सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥ ४२३. बालाभिरामेसु दुहावहेसु न तं सुहं कामगुणेसु रायं ! । विरत्तकामाण तवोधणाणं जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥ ४२४. नरिंद ! जाई अधमा नराणं सोवागजाई दुहओ गयाणं । जहिं वयं सव्वजरस्स वेसा वसीय सोवागनिवेशणेसु ॥१८॥ ४२५. तीसे य जाईय उ पावियाए वुत्था मु सोवागनिवेशणेसु । सव्वस्स लोगस्स दुगुंछणिज्जा, इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥१९॥ ४२६. सो दाणि सिं राय ! महाणुभागो महिद्धिओ पुण्णफलोववेओ । चइत्तु भोगाइं असासयाइं आदाणहेउं अभिनिक्खमाहि ॥२०॥ ४२७. इह जीविए राय ! असासयम्मि धणियं तु पुत्ताइं अकुव्वमाणो । से सोयईं मच्चुमुहोवणीए धम्मं अकाऊण परम्मि लोए ॥२१॥ ४२८. जहेह सीहो व मियं गहाय मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले । न तस्स माया व पिया व भाया कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ॥२२॥ ४२९. न तस्स दुक्खं विभयंति नायओ न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा । एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं कत्तारमेवा अणुजाइ कम्मं ॥२३॥ ४३०. चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च खेत्तं गिहं धण धन्नं च सव्वं । सकम्मबिइओ अवसो पयाइ परं भवं सुंदर पावगं वा ॥२४॥ ४३१. तमेगयं तुच्छसरीरगं से चिईगयं दहिय उ पावगेणं । भज्जा य पुत्तो वि य नायओ य दायारमण्णं अणुसंकमंति ॥२५॥ ४३२. उवणिज्जइ जीवियमप्पमायं वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ! । पंचालराया ! वयणं सुणाहि मा कासि कम्माणि महालयाणि ॥२६॥ ४३३. अहं पि जाणाभि जहेह साहू ! जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं । भोगा इमे संगकरा भवंति जे दुज्जया अज्जो ! अम्हारिसेहिं ॥२७॥ ४३४. हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! दट्टूणं नरवइं महिद्धीयं । कामभोगेसु गिद्धेणं निदाणमसुहं कडं ॥२८॥ ४३५. तस्स मे अपडिकंतस्स इमं एयारिसं फलं । जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥ ४३६. नागो जहा पंकजलावसत्तो दट्टुं थलं नाभिसमेइ तीरं । एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥ ४३७. अच्चेइ कालो तूरंति राइओ न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा । उवेच्च भोगा पुरिसं चयंति दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥३१॥ ४३८. जइ ता सि भोगे चइउं असत्तो अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ! । धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकंपी तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥ ४३९. न तुज्झ भोए चइऊण बुद्धी गिद्धो सि आरंभ-परिग्गहेसु । मोहं कओ एत्तिओ विप्पलावो गच्छामि रायं ! आमंतिओ सि ॥३३॥ ४४०. पंचालराया वि य बंभदत्तो साहुस्स तस्सा वयणं अकाउं । अणुत्तरे भुजिय कामभोए अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥ ४४१. चित्तो वि कामेहिं विरत्तकामो उदत्तचारित्त-तवो महेसी । अणुत्तरं संजम पालइत्ता अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥३५॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ चित्त-संभूइज्जं समत्तं ॥१३॥ ☆☆☆ १४

चउदसमं उसुयारिज्जं अज्ज्ञयणं ☆☆☆ ४४२. देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी केई चुया एगविमाणवासी । पुरे पुराणे उसुयारनामे खाए समिद्धे सुरलोयरम्मि ॥१॥ ४४३. सकम्मसेसेण पुराकएणं कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया । निव्विण्ण संसारभया जहाय जिणिंदमग्गं सरणं पवण्णा ॥२॥ ४४४. पुमत्तमागम्म कुमार दो वि पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती । विसालकिती य तहोसुयारो रायऽत्थ देवी कमलावई य ॥३॥ ४४५. जाई-जरा-मच्चुभयाभिभूया बहिविहाराभिनिविट्ठचित्ता । संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा दट्टूण ते कामगुणे विरत्ता ॥४॥ ४४६. पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स । सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं तहा सुचिण्णं तव संजमं च ॥५॥ ४४७. ते कामभोगेसु असज्जमाणा माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा । मोक्खाभिकंखी अभिजायसट्ठा तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥६॥ ४४८. असासयं दट्टु इमं विहारं बहुअंतरायं न य दीहमाउं । तम्हा गिहंसि न रइं लभामो आमंतयामो चरिस्सामो मोणं ॥७॥ ४४९. अह तायओ तत्थ मुणीण तेसिं तवस्स वाघायकरं वयासी । इमं वयं वेयविदो वयंति जहां न होई असुयाण लोगो ॥८॥ ४५०. अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जया ! भोच्चा ण भोए सह इत्थियाहिं आरण्णा होह मुणी पसत्था ॥९॥ ४५१. सोयग्गिणा आयगुणिंधणेणं मोहानिला पज्जलणाहिणं । संतत्तभावं परितप्पमाणं लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥१०॥ ४५२. पुरोहियं तं कमसोऽणुणेतं निमंतयंतं च सुए धणेणं । जहक्कमं कामगुणेहिं चेव कुमारगा ते पसमिक्ख वक्क ॥११॥ ४५३. वेया अधीया न भवंति ताणं, भुत्ता दिया णेति तमं तमेणं । जाया य पुत्ता न भवंति ताणं, को नाम ते अणुमण्णेज्ज एयं ? ॥१२॥ ४५४. खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा पकामदुक्खा

अनिकामसोक्खा । संसारमोक्खस्स विपक्खभूया खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥ ४५५. परिव्वयंते अनियत्तकामे अहो य राओ परितप्पमाणे । अण्णप्पमत्ते धणमेसमाणे पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥१४॥ ४५६. इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं । तं एवमेवं लालप्पमाणं हरा हरंति त्ति कहां पमाओ ? ॥१५॥ ४५७. धणं पभूयं सह इत्थियाहिं सयणा तहा कामगुणा पकामा । तवं कए तप्पइ जस्स लोगो तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥ ४५८. धणेण किं धम्मधुराधिगारे सयणेण वा कामगुणेहिं चैव ? । समणा भविस्सामो गुणोहधारी बहिंविहारा अहिगम्म भिक्खं ॥१७॥ ४५९. जहा य अग्गी अरणीअसंतो खीरे-घयं तेल्लमहा तिलेसु । एमेव जाया ! सरीरंसि सत्ता सम्मुच्छई नासइ नावचिद्धे ॥१८॥ ४६०. नो इंदियग्गेज्झो अमुत्तभावा अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो । अज्झत्थहेउं निययऽस्स बंधो संसारहेउं च वयंति बंधं ॥१९॥ ४६१. जहा वयं धम्ममयाणमाणा पावं पुरा कम्ममकासि मोहा । ओरुब्भमाणा परिरक्खियंता तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥ ४६२. अब्भाहयम्मि लोयम्मि सव्वओ परिवारिए । अमोहाहिं पडंतीहिं गिहंसि न रइं लभे ॥२१॥ ४६३. केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ? । का वा अमोहा वुत्ता ? जाया ! चिंतावरो हुमि ॥२२॥ ४६४. मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ । अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय ! वियाणह ॥२३॥ ४६५. जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई । अधम्मं कुणमाणस्स अफला जंति राइओ ॥२४॥ ४६६. जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई । धम्मं च कुणमाणस्स सफला जंति राइओ ॥२५॥ ४६७. एगओ संवसित्ता णं दुहओ सम्मत्तसंजुया । पच्छा जाया ! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥ ४६८. जस्सऽत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स चऽत्थि पलायणं । जो जाणइ न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥ ४६९. अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो जहिं पवण्णा न पुणब्भवामो । अणागयं नेव य अत्थि किंचि सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥२८॥ ४७०. पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो, वासिट्ठि ! भिक्खायरियाए कालो । साहाहिं रुक्खो लभई समाहिं छिन्नाहिं साहाहिं तमेव खाणुं ॥२९॥ ४७१. पंखाविहूणो व जहेव पक्खी भिच्चविहूणो व्व रणे नरिंदो । विवण्णसारो वणिओ व्व पोए पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥३०॥ ४७२. सुसंभिया कामगुणा इमे ते संपिडिया अग्गरसा पभूया । भुंजामु ता कामगुणे पकामं पच्छा गमिस्सामो पहाणंमग्गं ॥३१॥ ४७३. भुत्ता रसा भोइ ! जहाति णे वओ, न जीवियद्धा पयहामि भोए । लाभं अलाभं च सुह च दुक्खं संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥ ४७४. मा हू तुमं सोयरियाण संभरे जुत्रो व हंसो पडिसोयगामी । भुंजाहि भोगाइं मए समाणं, दुक्खं खु भिक्खाचरिया विहारो ॥३३॥ ४७५. जहा य भोई ! तणुयं भुजंगमो निम्मोयणिं अेच्च पलेइ मुत्ते । एमए जाया पयहंति भोए ते हं कहां नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥ ४७६. छिदित्तु जालं अबलं व रोहिया मच्छा जहा कामगुणे पहाय । धोरेज्जसीला तवसा उदारा धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ॥३५॥ ४७७. नहे व्व कोंचा समइक्कमंता तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा । पलित्ति पुत्ता य पई य मज्झं ते हं कहां नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥ ४७८. पुरोहियं तं ससुयं सदारं सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोगे । कुडुंबसार विउलुत्तमं तं रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥ ४७९. वंतासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ । माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥३८॥ ४८०. सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वा वि धणं भवे । सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताण्णए तं तव ॥३९॥ ४८१. मरिहिसि रायं ! जया तया वा मणोरमे कामगुणे पहाय । एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं, न विज्जए अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥ ४८२. नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा संताणछिन्ना चरिसामि मोणं ! अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा परिग्गहारंभनियत्तदोसा ॥४१॥ ४८३. दवग्गिणा जहाऽरन्ने डज्झमाणेसु जंतुसु । अन्ने सत्ता पमोयंति राग-दोसवसं गया ॥४२॥ ४८४. एवमेव वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया । डज्झमाणं न बुज्झामो राग-दोसग्गिणा जयं ॥४३॥ ४८५. भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारणो । आमोयमाणा गच्छंति दिया कामकमा इव ॥४४॥ ४८६. इमे य बद्धा फंदंति मम हत्थऽज्जमागया । वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥ ४८७. सामिसं कुललं दिस्सा बज्झमाणं निरामिसं । आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा ॥४६॥ ४८८. गिद्धोवमे उ नच्चा णं कामे संसारवद्धणे ! उरगो सुवण्णपासे व्वं संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥ ४८९. नागो व्व बंधणं छेत्ता अप्पणो वसहिं वए । एयं पत्थं महारायं ! उसुयार ! त्ति मे सुयं ॥४८॥ ४९०. चइत्ता विउलं रट्टं कामभोगे य दुच्चए । निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥ ४९१. सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे । तवं पगिज्झऽहक्खायं घरं

घोरपरक्कमा ॥५०॥ ४९२. एवं ते कमसो बुद्धा सव्वे धम्मपरायणा । जम्म-मच्चुभउव्विग्गा दुक्खस्संतगवेसिणो ॥५१॥ ४९३. सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया । अचिरेणेव कालेण दुक्खस्संतमुवागया ॥५२॥ ४९४. राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ । माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड ॥५३॥ त्ति बेमि ॥

☆☆☆॥ उसुयारिज्जं समत्तं ॥१४॥ १५ पण्णरसमं सभिकखुयं अज्झयणं ☆☆☆ ४९५. मोणं चरिस्सामि समेच्च धम्मं सहिए उज्जुकडे निदाणछिन्ने । संथवं जहेज्ज अकामकामे अण्णाएसी परिव्वए स भिकखू ॥१॥ ४९६. राओवरयं चरेज्ज लाढे विरए वेदवियाऽऽयरक्खिए । पन्ने अभिभूय सव्वदंसी जे कम्महिचि न मुच्छिए स भिकखू ॥२॥ ४९७. अक्कोस-वहं विइत्तु धीरे मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिकखू ॥३॥ ४९८. पंतं सयणासणं भइत्ता सीउण्हं विविहं च दंस-मसगं । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिकखू ॥४॥ ४९९. नो सक्कियमिच्छई न पूयं नो वि य वंदणयं कुओ पसंसं ? । से संजए सुव्वए तवस्सी सहिए आयगवेसए स भिकखू ॥५॥ ५००. जेण पुण जहाइ जीवियं मोहं वा कसिणं नियच्छई । नर-नारिं पजहे सया तवस्सी न य कोऊहलं उवेइ स भिकखू ॥६॥ ५०१. छिन्नं सरं भोम्मं अंतलिकखं सुविणं लक्खण दंड वत्थुविज्जं । अंगवियारं सरस्स विजयं जे विज्जाहिं न जीवई स भिकखू ॥७॥ ५०२. नंतं मुलं विविहं वैज्जचित्तं वमण-विरेयण-धुम-नेत्त-सिणाणं । आतुरे सरणं तिगिच्छियं च तं परिण्णाय परिव्वए स भिकखू ॥८॥ ५०३. खत्तिय-गण-उग्ग रायपुत्ता माहण भोइय विविहा य सिप्पिणो । नो तेसिं वइइ सिलोग-पूयं तं परिन्नाय परिव्वए स भिकखू ॥९॥ ५०४. गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा अपव्वइएण व संथुया हवेज्जा । तेसिं इहलोगफलट्ठयाए जो संथवं न करेइ स भिकखू ॥१०॥ ५०५. सयणासण-पाण-भोयणं विविहं खाइम-साइमं परेसिं । अदए पडिरेहिए नियंते जे तत्थं न पउस्सतो स भिकखू ॥११॥ ५०६. जं किंत्ताऽऽहार-पाणं विविहं खाइम-साइमं परेसिं लब्धुं । जो तं तिविहेण नाणुकंपे मण-वइ-पायसुसुवुडे स भिकखू ॥१२॥ ५०७. आयामगं चेत्त जवोयणं च सीयं सोवीर-जवोदगं च । नो हीलए पिंडं नीरसं तु पंतकुलाइं परिव्वए स भिकखू ॥१३॥ ५०८. सद्दा विविहा भवंति लोए दिव्वा माणुसया तहा तिरिच्छा । भीमा भयभेरवा उराला जे सोच्चा ण वहिज्जई स भिकखू ॥१४॥ ५०९. वायं विविहं समेच्च लोए सहिए खेयाणुगए स कोवियप्पा । पन्ने अभिभूय सव्वदंसी उवसंते अविहेडए स भिकखू ॥१५॥ ५१०. असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते जिइंदिए सव्वओ विप्पमुक्के । अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी चेच्चा गिहं एगचरे स भिकखू ॥१६॥ त्ति बेमि ॥

☆☆☆॥ सभिकखुयऽज्झयणं पण्णरसमं समत्तं ॥१५॥ ☆☆☆ १६ सोलसमं बंभचेरसमाहिट्ठाणं अज्झयणं ☆☆☆ ५११. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, जे भिकखू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ॥१॥ ५१२. १ कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, जे भिकखू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता जाव अप्पमत्ते विहरेज्ज त्ति । तं जहा २ विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गंथे, नो इत्थि-पसु-पंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति । तं कहमिति ? निग्गंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सवमाणस्स बंभचारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विचिगिंछा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणेज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थि-पसु-पंडगसंसत्ताइं सयणासणाहिं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे १ । ३ नो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवति से निग्गंथे । तं कहमिति ? निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभचारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिंछा वा समुप्पज्जेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा २ । ४ नो इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेत्ता हवइ से निग्गंथे । तं कहमिइ ? निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स विहरमाणस्स बंभचारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं

सन्निसेज्जाए विहरेज्जा ३ । ५ नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवति से निग्गंथे । तं कहमिइ ? निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोअमाणस्स निज्झायमाणस्स बंभचारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्जा निज्झाएज्जा ४ । ६ नो इत्थीणं कुडुंतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्तिअंतरंसि वा कूइयसदं वा रुइयसदं वा गीयसदं वा हसियसदं वा थणियसदं वा कंदियसदं वा विलवियसदं वा सुणेत्ता भवइ से निग्गंथे । तं कहमिति ? निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुडुंतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्तिअंतरंसि वा कूइयसदं वा जाव विलवियसदं सुणमाणस्स बंभचारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिंछा वा जाव केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं कुडुंतरंसि वा जाव सुणमाणे विहरेज्जा ५ । ७ नो निग्गंथे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता भवइ । तं कहमिति ? निग्गंथस्स खलु पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ६ । ८ नो पणीयं आहारं आहारित्ता भवइ से निग्गंथे । तं कहमिति ? निग्गंथस्स खलु पणीयं पाण-भोयणं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिपणत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहारं आहारेज्जा ७ । ९ नो अइमायाए पाण-भोयणं आहारित्ता भवइ से निग्गंथे । तं कहमिति ? निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाण-भोयणं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाण-भोयणं भुंजेज्जा ८ । १० नो विभूसाणुवाई भवइ से निग्गंथे । तं कहमिइ ? विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अहिलसणिज्जे भवइ । तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अहिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिंछा वा समुप्पजेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणेज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे विभूसाणुवाई सिया ९ । ११ नो सद-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई भवति से निग्गंथे तं कहमिति ?- निग्गंथस्स खलु सद-रूव-रस गंध फासाणुवाइस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिंछा वा समुप्पजेज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणेज्जा, दीकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो सद-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई हवइ से निग्गंथे । दसमे बंभचेरसमाहिट्ठाणे हवइ ॥१०॥२॥ ५१३. भवति एत्थ सिलोगा, तं जहा जं विवित्तमणाइण्णं रहियं इत्थिजणेण य । बंभचेरस्स रक्खद्वा आलयं तु निसेवए ॥३॥ ५१४. मणपल्हायजणणिं कामरागविवह्णिं । बंभचेरओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए ॥४॥ ५१५. समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं । बंभचेरओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥५॥ ५१६. अंग-पच्चंगसंठाणं चारुल्लविय-पेहियं । बंभचेरओ थीणं चक्खुगेज्झं विवज्जए ॥६॥ ५१७. कुइयं रुइयं गीयं हसियं थणियं कंदियं । बंभचेरओ थीणं सोयगेज्झं विवज्जए ॥७॥ ५१८. हासं किडुं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि य ॥ बंभचेरओ थीणं नाणुचिते कयाइ वि ॥८॥ ५१९. पणीयं भत्त-पाणं तु खिप्पं मयविवह्णं । बंभचेरओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥९॥ ५२०. धम्मलब्धं मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं । नाइमत्तं तु भुंजेज्जा बंभचेरओ सया ॥१०॥ ५२१. विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमंडणं । बंभचेरओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥११॥ ५२२. सद्दे रूवे य गंधे य रसे फासे तहेव य । पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥१२॥ ५२३. आलओ थीजणाइत्तो थीकहा य मणोरमा । संथवो चैव नारीणं तासिं इंदियदरिसणं ॥१३॥ ५२४. कुइयं रुइयं गीयं सहभुत्तासियाणि य । पणीयं भत्त-पाणं च अइमायं पाण-भोयणं ॥१४॥ ५२५. गत्तभूसणमिट्ठं च कामभोगा य दुज्जया । नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥१५॥ ५२६. दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए । संकाठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१६॥ ५२७. धम्मरामे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही । धम्मरामरए दंते बंभचेरसमाहिए ॥१७॥ ५२८. देव-दाणव-गंधव्वा जक्ख-रक्खस-किन्नरा । बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करंति तं ॥१८॥ ५२९. एस धम्मे धुवे नियए सासए जिणदेसिए । सिद्धा सिज्झंति चाणेणं सिज्झिस्संति तहाऽवरे ॥१९॥ ति बेमि ☆☆☆ ॥ बंभचेरसमाहिट्ठाणं

सोलसमं समत्तं ॥१६॥ ☆☆☆ १७ सत्तरसमं पावसमणिज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ५३०. जे केइ उ पव्वइए नियंते धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने । सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥१॥ ५३१. सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं । जाणामि जं वट्टइ आउसो त्ति, किं नाम काहामि सुएण भंते ! ॥२॥ ५३२. जे केइ उ पव्वइए निद्दासीले पकामसो । भोच्चा पेच्चा सुहं सुयइ पावसमणे त्ति वुच्चई ॥३॥ ५३३. आयरिय-उवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए । ते चैव खिंसई बाले पावसमणे त्ति वुच्चई ॥४॥ ५३४. आयरिय-उवज्झायाणं सम्मं न पडितप्पई । अप्पडिपूयए थद्ध पावसमणे त्ति वुच्चई ॥५॥ ५३५. सम्मद्दमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य । असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणे त्ति वुच्चई ॥६॥ ५३६. संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकंबलं । अपमज्जिय आरुहइ पावसमणे त्ति वुच्चई ॥७॥ ५३७. दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खणं । उल्लंघणे य चंडे य पावसमणे त्ति वुच्चई ॥८॥ ५३८. पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पाय-कंबलं । पडिलेहणाअणाउत्ते पावसमणे त्ति वुच्चई ॥९॥ ५३९. पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया । गुरुपरिभावए निच्चं पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१०॥ ५४०. बहुमाई पमुहरी थद्दे लुद्धे अणिग्गहे । असंविभागी अचियत्ते पावसमणे त्ति वुच्चई ॥११॥ ५४१. विवायं च उदीरेइ अधम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१२॥ ५४२. अथिरासणे कुक्कुइए जत्थ तत्थ निसीयई । आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१३॥ ५४३. ससरक्खपाए सुवति सेज्जं न पडिलेहए । संथारए अणाउत्ते पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१४॥ ५४४. दुद्ध-दधी विगईओ आहारेइ अभिक्खणं । अरए य तवोकम्मे पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१५॥ ५४५. अत्थंतम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं । चोइओ पडिचोएइ पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१६॥ ५४६. आयरियपरिच्चाई परपासंडसेवए । गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१७॥ ५४७. सयं गेहं परिच्चज्ज परगेहंसि वावरे । निमित्तेण यववहरई पावसमणेत्ति वुच्चई ॥१८॥ ५४८. सन्नायपिढं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं । गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१९॥ ५४९. एयारिसे पंचकुसीलऽसंबुडे रूवंघरे मुणिपवराण हेट्ठिमे । अयंसि लोए विसमेव गरहिए न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥ ५५०. जे वज्जए एए सया उ दोसे से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे । अयंसि लोए अमयं व पूइए आराहए दुहओ लोगमणिं ॥२१॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ पावसमणिज्जं समत्तं ॥१७॥ ☆☆☆ १८ अट्टारसमं संजइज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ५५१. कंपिल्ले नयरे राया उदिन्नबल-वाहणे । नामेणं संजए नाम मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥ ५५२. हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य । पायत्ताणीए महया सब्बओ परिवारिए ॥२॥ ५५३. मिए छिवेत्ता ह्यगए कंपिल्लुज्जाणकेसरे । भीए संते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥३॥ ५५४. अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे । सज्झाय-ज्झाणसंजुत्ते धम्मज्झाणं झियायइ ॥४॥ ५५५. अप्फोयमंडवम्मी झायई झवियासवे । तस्सागए मिए पासं वहेइ से नराहिवे ॥५॥ ५५६. अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहिं । हए मिए उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥६॥ ५५७. अह राया तत्थ संभंतो अणगारो मणाऽऽहओ । मए उ मंदपुत्तेणं रसगिद्धेण घच्चुणा ॥७॥ ५५८. आसं विसज्जइत्ता णं अणगारस्स सो निवो । विणएण वंदई पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥८॥ ५५९. अह मोणेण सो भयवं अणगारो ज्ञाणमासिओ । रायाणं न पडिमंतेइ तओ राया भयहुओ ॥९॥ ५६०. संजओ अहमंसीति भयवं वाहराह मे । कुद्धे तेएण अणगारे इहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥ ५६१. अभओ पत्थिवा ! तुज्झं अभयदाया भवाहि य । अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसी ? ॥११॥ ५६२. जया सब्बं परिच्चज्ज गंतव्वमवसस्स ते । अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसी ? ॥१२॥ ५६३. जीवियं चैव रूवं च विज्जुसंपायचंचलं । जत्थ तं मुज्झसी रायं ! पेच्चत्थं नावबुज्झसी ॥१३॥ ५६४. दाराणि य सुया चैव मित्ता य तह बंधवा । जीवंतमणुजीवंति मयं नाणुवयंति य ॥१४॥ ५६५. नीहरंति मयं पुत्ता पियरं परमदुक्खिया । पियरो वि तहा पुत्ते बंधू रायं ! तवं चरे ॥१५॥ ५६६. तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए । कीलंतऽन्ने नरा रायं ! हट्टतुट्टमलंकिया ॥१६॥ ५६७. तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइवा दुहं । कम्मणा तेण संजुत्ते गच्छती तु परं भवं ॥१७॥ ५६८. सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अंतिए । महया संवेग-निव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥१८॥ ५६९. संजओ चइउं रज्जं निक्खंतो जिणसासणे । गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अंतिए ॥१९॥ ५७०. चैच्चा रट्टं पव्वइए खत्तिए परिभासइ । जहा

ते दीसती रूवं पसन्नं ते जहा मणो ॥२०॥ ५७१. किं नामे ? किं गोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? । कहं पडियरसि बुद्धे ? कहं विणीए त्ति वुच्चसि ? ॥२१॥ ५७२. संजओ नाम नामेणं तहा गोत्तेण गोयमो । गह्भाली ममायरिया विज्जा-चरणपारगा ॥२२॥ ५७३. किरियं अकिरियं विणयं अण्णाणं च महामुणी ! । एएहिं चउहिं ठाणेहिं मेयन्ने किं पभासई ॥२३॥ ५७४. इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए । विज्जा-चरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥ ५७५. पडंति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो । दिव्वं च गइं गच्छंति चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥ ५७६. मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया । संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥२६॥ ५७७. सव्वे ते विदिया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया । विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥ ५७८. अहमंसि महापाणे जुइमं वरिससओवमे । जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥ ५७९. से चुए बंभलोगाओ माणुस्सं भवमागए । अप्पणो य परेसिं च आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥ ५८०. नाणा रुइं च छंदं च परिवज्जेज्ज संजए । अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥ ५८१. पडिक्कमामि पसिणाणं परमंतेहिं वा पुणो । अहो ! उट्ठिए अहोरायं इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥ ५८२. जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण चेषसा । ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥ ५८३. किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए । दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्मं चर सुदुच्चरं ॥३३॥ ५८४. एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थ-धम्मोवसोहियं । भरहो वि भारहं वासं चेच्चा कामाई पव्वए ॥३४॥ ५८५. सगरो वि सागरंतं भरहवासं नराहिवो । इस्सरियं केवलं हेच्चा दयाए परिनिव्वुओ ॥३५॥ ५८६. चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिद्धिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥३६॥ ५८७. सणंकुमारो मणुस्सेंदो चक्कवट्ठी महिद्धिओ । पुत्तं रज्जे ठवेऊणं सो वि राया तवं चरे ॥३७॥ ५८८. चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिद्धिओ । संती संतिकरो लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥ ५८९. इक्खागरायवसहो कुंथू नाम नरीसरो । विक्खायकित्ती धिइमं पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥ ५९०. सागरंतं चइत्ता णं भरहं नरवरीसरो । अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥ ५९१. चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिद्धिओ । चेच्चा य उत्तमे भोए महापउमो दमं चरे ॥४१॥ ५९२. एणछत्तं पसाहेत्ता महिं माणनिसूरणो । हरिसेणो मणुस्सेंदो पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥ ५९३. अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे । जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥ ५९४. दसण्णरज्जं मुइयं चइत्ता णं मुणी चरे । दसण्णभदो णिक्खंतो सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥ ५९५. नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥ ५९६. करकंडु कलिगेषु पंचालेषु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेषु गंधारेसु य नग्गई ॥४६॥ ५९७. एए नरिंदवसभा निक्खंता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊणं सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥ ५९८. सोवीररायवसभो चेच्चो ण मुणी चरे । उदायणो पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥ ५९९. तहेव कासीराया वि सेओ-सच्चपरक्कमो । कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥४९॥ ६००. तहेव विजओ राया अणट्ठा कित्ति पव्वए । रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥५०॥ ६०१. तहेवुगं तवं किच्चा अब्बक्खित्तेण चेतसा । महब्बलो रायरिसी आदाय सिरसा सिरिं ॥५१॥ ६०२. कहं धीरो अहेऊहिं उम्मतो व महिं चरे ? । एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥ ६०३. अच्चंतनियाणखमा सच्चा मे भासिया वई । अतरिंसु तरंतेगे तरिस्संति अणागया ॥५३॥ ६०४. कहं धीरे अहेऊहिं आयाय परियावसे ? । सव्वसंगविणिम्मुक्के सिद्धे भवइ नीरए ॥५४॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ संजइज्जं समत्तं ॥ १८॥ ☆☆☆ १९ एगूणवीसइमं मियापुत्तिज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ६०५. सुग्गीवे नगरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए । राया बलभद्रे त्ति मिया तस्सऽग्गमाहिसी ॥१॥ ६०६. तेसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए । अम्मा-पितीण दइए जुवराया दमीसरे ॥२॥ ६०७. नंदणे सो उ पासाए कीलए सह इत्थिहिं । देवो दोगुंदुगो चैव निच्चं मुइयमाणसो ॥३॥ ६०८. मणि-रयणकोट्टिमतले पासायालयणे ठिओ । आलोएइ नगरस्स चउक्क-तिय-चच्चरे ॥४॥ ६०९. अह तत्थ अइच्छंतं पासई समण संजयं । तव-नियम-संजमधरं सीलहुं गुणआगरं ॥५॥ ६१०. तं देहती मियापुत्ते दिट्ठीए अनमिसाए उ । कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ? ॥६॥ ६११. साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणाम्मि सोहणे । मोहं गयस्स संतस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥७॥ ६१२. देवलोगा चुओ संतो माणुसं भवमागओ । सण्णिणाणे समुप्पन्ने जाइं सरइ पुराणियं ॥८॥ ६१३. जाईसरणे

समुप्पन्ने मियापुत्ते महिद्धिए । सरई पोरणिणं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥९॥ ६१४. विसएहिं अरज्जंतो रज्जंतो संजमम्मि य । अम्मा-पियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥१०॥ ६१५. सुयाणि मे पंच महव्वयाणि नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु । निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ अणुजाणह पव्वइस्सामो अम्मो ! ॥११॥ ६१६. अम्म ! ताय ! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा । पच्छा कडुयविवागा अणुबंधदुहावहा ॥१२॥ ६१७. इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं । असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥१३॥ ६१८. असासए सरीरम्मि रइं नोवलभामहं । पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे ॥१४॥ ६१९. माणुसत्ते असारम्मि वाही-रोगाण आलए । जरा-मरणघत्थम्मि खणं पि न रमामहं ॥१५॥ ६२०. जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य । अहो ! दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसंति जंतवो ॥१६॥ ६२१. खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पुत्त-दारं च बंधवा । चइत्ताणं इमं देहं गंतव्वमवसस्स मे ॥१७॥ ६२२. जहा किंपागफलाणं परिणामो न सुंदरो । एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुंदरो ॥१८॥ ६२३. अब्धाणं जो महंतं तु अपाहेज्जो पवज्जई । गच्छंते से दुही होइ छुहा-तण्हाए पीलिए ॥१९॥ ६२४. एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं । गच्छंते से दुही होइ वाहि-रोगेहिं पीलिए ॥२०॥ ६२५. अब्धाणं जो महंतं तु सपाहेज्जो पवज्जई । गच्छंते से सुही होइ छुहा-तण्हाविवज्जिए ॥२१॥ ६२६. एवं धम्मं पि काऊणं जो गच्छइ परं भवं । गच्छंते से सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥२२॥ ६२७. जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू । सारभंडाणि नीणेइ असारं अवइज्जइ ॥२३॥ ६२८. एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य । अप्पाणं तारयिस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥२४॥ ६२९. तं बेंतऽम्मा-पियरो सामन्नं पुत्त ! दुच्चरं । गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणा ॥२५॥ ६३०. समता सव्वभूएसु सत्तु-मित्तेसु वा जगे । पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करं ॥२६॥ ६३१. निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं । भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥२७॥ ६३२. दंतसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं । अणवज्जेसणिज्जस्स गेणहणा अवि दुक्करं ॥२८॥ ६३३. विरई अबंभचेरस्स कामभोगरसन्नुणा । उग्गं महव्वयं बंभं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२९॥ ६३४. धण-धन्न-पेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणा । सव्वारंभपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥३०॥ ६३५. चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा । सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३१॥ ६३६. छुहा तण्हा य सीउण्हं दंस-मसगवेयणा । अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥३२॥ ६३७. तालणा तज्जणा चेव वध-बंधपरीसहा । दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥३३॥ ६३८. कावोया जा इमा वित्ती कैसलोओ य दारुणो । दुक्खं बंभव्वयं घोरं धारेउं अमहप्पणो ॥३४॥ ६३९. सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो य सुमज्जिओ । न हु सी पभू तुमं पुत्ता ! सामण्णमणुपालिया ॥३५॥ ६४०. जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महब्भरो । गरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥३६॥ ६४१. आगासे गंगसोओ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो । बाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोदही ॥३७॥ ६४२. वालुयाकवलो चेव निरस्सादे उ संजमे । असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥३८॥ ६४३. अहीवेगंतदिट्ठीए चरित्ते पुत्त ! दुक्करे । जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३९॥ ६४४. जहा अगिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं । तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥४०॥ ६४५. जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो । तह दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥४१॥ ६४६. जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मंदरो गिरी । तहा निहुय नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ॥४२॥ ६४७. जहा भुयाहिं तरिउं जे दुक्करं रयणायरो । तहा अणुवसंतेणं दुत्तरो दमसागरो ॥४३॥ ६४८. भुंज माणुस्सए भोए पंचलक्खणए तुमं । भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४४॥ ६४९. सो बेंतऽम्मा-पियरो एवमेयं जहाफुडं । इहलोगे निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥४५॥ ६५०. सारीर-माणसा चेव वेयणाओ अणंतसो । मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥४६॥ ६५१. जरा-मरणकंतारे चाउरंते भयागरे । मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥४७॥ ६५२. जहा इहं अगणी उण्हो एत्तोऽणंतगुणो तहिं । नरएसु वेयणा उण्हा असाया वेदिया मए ॥४८॥ ६५३. जहा इमं इहं सीयं एत्तोऽणंतगुणं तहिं । नरएसु वेयणा सीया असाया वेइया मए ॥४९॥ ६५४. कंदंतो कंदुकुंभीसु उद्धपाओ अहोसिरो । हुयासणे जलंतम्मि पक्कपुव्वो अणंतसो ॥५०॥ ६५५. महादवग्गिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए । कलंबवालुयाए य दह्पुव्वो अणंतसो ॥५१॥ ६५६. रसंतो कंदुकुंभीसु उद्धं बद्धो अबंधवो । करवत्त-करकयादीहिं छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥५२॥ ६५७. अइतिक्खकंटकाइण्णे तुंगे सिंबलिपायवे । खेवियं पासबद्धेणं

कह्लोकह्वाहिं दुक्करं ॥५३॥ ६५८. महाजंतोसु उच्छ्र वा आरसंतो सुभेरवं । पीलिओ मि सकम्महेहिं पावकम्मो अणंतसो ॥५४॥ ६५९. कूवंतो कोलसुणहेहिं सामेहिं सबलेहि य । पाडिओ फाडिओ छिण्णो विप्फुरंतो अणेगसो ॥५५॥ ६६०. असीहिं अदसिवत्तेहिं भल्लीहिं पट्टिसेहि य । छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य ओइण्णो पावकम्मणा ॥५६॥ ६६१. अवसो लोहरहे जुत्तो जलंतो समिलाजुए । चोइओ तोत्त-जुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ ॥५७॥ ६६२. हुयासणे जलंतम्मि चियासु महिसो विव । दह्लो पक्को य अवसो हं पावकम्महेहिं पाविओ ॥५८॥ ६६३. बला संडासतुंडेहिं लोहतुंडेहिं पक्खिहिं । विलुत्तो विलवंतो हं ढंक-गिद्धेहिं णंतसो ॥५९॥ ६६४. तण्हाकिलंतो धावंतो पत्तो वेयरणिं नइं । जलं पाहं ति चिंतंतो खुरधाराहिं विवाइओ ॥६०॥ ६६५. उण्हाभित्ततो संपत्तो असिपत्तं महावणं । असिपत्तेहिं पडंतोहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥६१॥ ६६६. मोग्गरेहिं मुसंडीहिं सूलेहिं मुसलेहि य । गयासं भग्गत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणंतसो ॥६२॥ ६६७. खुरेहिं तिक्खधाराहिं छुरियाहिं कप्पणीहिं य । कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो य अणेगसो ॥६३॥ ६६८. पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं । वाहिओ बद्धरुद्धो य बहुसो चेव विवाइओ ॥६४॥ ६६९. गलेहिं मगरजालेहिं मच्छो वा अवसो अहं । उल्लितो पाडिओ गहिओ मारिओ य अणंतसो ॥६५॥ ६७०. वीदंसएहिं जालेहिं लेप्पाहिं सउणो विव । गहिओ लग्गो य बद्धो य मारिओ य अणंतसो ॥६६॥ ६७१. कुहाड-फरसुमाईहिं वड्ढईहिं दुमो विव । कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओ य अणंतसो ॥६७॥ ६७२. चवेड-मुट्टिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव । ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो चुण्णिओ य अणंतसो ॥६८॥ ६७३. तत्ताइं तंब-लोहाइं तउयाइं सीसगाणि य । पाइओ कलकलेताइं आरसंतो सुभेरवं ॥६९॥ ६७४. तुहं पियाइं मंसाइं खंडाइं सोल्लगाणि य । खाविओ मि समंसाइं अग्गिवन्नाइं णेगसो ॥७०॥ ६७५. तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य मधूणि य । पज्जिओ मि जलंतीओ वसाओ रुहिराणि य ॥७१॥ ६७६. निच्चं भीएण तत्थेणं दुहिएणं वहिएण य । परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥७२॥ ६७७. तिक्खचंडपगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा । महब्भयाओ भीमाओ नरएसुं वेइया मए ॥७३॥ ६७८. जारिसा माणुसे लोए ताया ! दीसंति वेयणा । एत्तो अणंतगुणिया नरएसुं दुक्खवेयणा ॥७४॥ ६७९. सव्वभवेसु असाया वेयणा वेइया मए । निमिसंतरमेत्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥७५॥ ६८०. तं बेत्तं अम्मा-पियरो छंदेणं पुत्त ! पव्वय । नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥७६॥ ६८१. सो बेत्तं अम्मा-पियरो एवमेयं जहाफुडं । परिकम्मं को कुणई अरण्णे मिय-पक्खिणं ? ॥७७॥ ६८२. एगब्भूए अरण्णे वा जहा उ चरई मिए । एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥७८॥ ६८३. जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई । अच्छंतं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिंछई ? ॥७९॥ ६८४. को वा से ओसहं देह ? को वा से पुच्छई सुहं ? । को से भत्तं व पाणं वा आहारित्तु पणामए ? ॥८०॥ ६८५. जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं । भत्त-पाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥८१॥ ६८६. खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहिं य । मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥८२॥ ६८७. एवं समुट्टिए भिक्खू एवमेव अणेगए । मिगचारियं चरित्ताणं उहं पक्कमई दिसं ॥८३॥ ६८८. जहा मिए एग अणेगचारी अणेगवासे धुवगोयरे य । एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥८४॥ ६८९. मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं । अम्मा-पिऊहिं अणुत्ताओ जहाइ उवेहिं तओ ॥८५॥ ६९०. मिगजारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं । तुब्भेहिं अंबुअणुत्ताओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८६॥ ६९१. एवं सो अम्मा-पियरं अणुमाणेत्ताण बहुविहं । ममत्तं छिंदई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥८७॥ ६९२. इहं वित्तं च मित्ते य पुत्त-दारं च नायओ । रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८८॥ ६९३. पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य । सब्भित्तरबाहिए तवोकम्मम्मि उज्जुओ ॥८९॥ ६९४. निम्ममो निरहंकारो नीसंगो चत्तगारवो । समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥९०॥ ६९५. लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा । समो निंदो-पसंसासु तहा माणावमाणओ ॥९१॥ ६९६. गारवेसु कसाएसु दंड-सल्ल-भएसु य । नियत्तो हास-सोगाओ अनियाणो अबंधणो ९२॥ ६९७. अनिस्सिओ इहं लोए परलोए अनिस्सिओ । वासी-चंदणक्कप्पो य असणे अणसणे तहा ॥९३॥ ६९८. अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवो । अज्झप्पझाणजोगेहिं पसत्थदम-सासणो ॥९४॥ ६९९. एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य । भावणाहिं य सुद्धाहिं सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥९५॥ ७००. बहुयाणि उ वासाणि सामण्णमणुपालिया । मासिएणं तु भत्तेणं सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥९६॥ ७०१. एवं करेति संबुद्धा

पंडिया पवियक्खणा । विणियद्वंति भोगेसु मियापुत्ते जहा मिसी ॥९७॥ ७०२. महापभावस्स महाजसस्स मियाए पुत्तस्स निसम्म भासियं । तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥९८॥ ७०३. वियाणिया दुक्खविवह्वणं धणं ममत्तबंधं च महाभयावहं । सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं धारेह निव्वाणगुणावहं महं ॥९९॥ ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ मियापुत्तिज्ज समत्तं ॥१९॥ ☆☆☆ २० वीसइम महानियंठिज्जं अज्झयण ☆☆☆ ७०४. सिद्धाण नमो किच्चा संजयाणं च भावओ । अत्थधम्मगइं तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥१॥ ७०५. पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्तं निज्जाओ मंडिकुच्छिसि चेइए ॥२॥ ७०६. नाणादुम-लयाइणं नाणापक्खिनिसेवियं । नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नंदणोवमं ॥३॥ ७०७. तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं । निसन्नं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥४॥ ७०८. तस्स रूवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए । अच्चंतपरमो आसी अतुलो रूवविम्हओ ॥५॥ ७०९. अहो ! वण्णो अहो ! रूवं अहो ! अज्जस्स सोमया । अहो ! खंती अहो ! मुत्ती अहो ! भोगे असंगया ॥६॥ ७१०. तस्स पाए उ वंदित्ता काउण य पयाहियं । नाइदूरमणासन्ने पंजली पडिपुच्छई ॥७॥ ७११. तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ भोगकालम्मि संजया ! । उवट्ठिओ सि सामण्णे एयमद्वं सुणेमु ता ॥८॥ ७१२. अणाहो मि महारायं ! नाहो मज्झ न विज्जई । अणुकंपगं सुहिं वा वि कंची नाभिसमेमइहं ॥९॥ ७१३. तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्ढिमंतस्स कहं नाहो न विज्जई ॥१०॥ ७१४. होमि नाहो भयंताणं भोगे भुंजाहि संजया । मित्त-नाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥ ७१५. अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिवा ! अप्पणा अणाहो संतो कस्स नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥ ७१६. एवं वुत्तो नरिंदो सो सुसंभंतो सुविम्हिओ । वयणं असुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्नितो ॥१३॥ ७१७. अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अंतेउरं च मे । भुंजामि माणुसे भोए आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥ ७१८. एरिसे संपयग्गम्मि सब्बकामसमप्पिए । कहं अणाहो भवइ मा हु भंते ! मुसं वए ॥१५॥ ७१९. न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं पोत्थं व पत्थिवा ! जहा अणाहो भवइ सणाहो वा नराहिवा ! ॥१६॥ ७२०. सुणेह मे महारायं ! अब्बक्खित्तेण चेयसा । जहा अणाहो भवति जहा मे य पवत्तियं ॥१७॥ ७२१. कोसंबी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी । तत्थ आसी पिया मज्झं पभूयधणसंचओ ॥१८॥ ७२२. पढमे वए महारायं ! अतुला मे अच्छिवेयणा । अहोत्था विउलो दाहो सब्बगत्तेसु पत्थिवा ॥२०॥ ७२३. सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरवियरंतरे । पविसेज्ज अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥ ७२४. तियं मे अंतरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई । इंदासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥२१॥ ७२५. उवट्ठिया मे आयरिया विज्जा-मंतचिगिच्छगा । अभीया सत्थकुसला मंत-मूलविसारया ॥२२॥ ७२६. ते मे तिगिच्छं कुव्वंति चाउप्पायं जहाहियं । न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥ ७२७. पिया मे सब्बसारं पि देज्जाहि मम कारणा । न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥ ७२८. माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगसुहइट्ठिया । न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥ ७२९. भायरो मे महाराय सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥ ७३०. भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोयंति एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥ ७३१. भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया । असुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिंचई ॥२८॥ ७३२. अन्नं पाणं च ण्हाणं च गंध मल्ल-विलेवणं । मए णायमणायं वा सा बाला नोवभुंजई ॥२९॥ ७३३. खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्ठई । न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥ ७३४. तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो । वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणंतए ॥३१॥ ७३५. सइं च जइ मुच्चिज्जा वेयणा विउला इओ । खंतो दंतो निरारंभो पव्वए अणगारियं ॥३२॥ ७३६. एवं च चिंतइत्ताणं पासुत्तो मि नराहिवा ! परियत्तंतीए राईए वेयणा मे खयं गया ॥३३॥ ७३७. तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बंधवे । खंतो दंतो निरारंभो पव्वइओ अणगारियं ॥३४॥ ७३८. तो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य । सब्बेसिं चैव भूयाणं तसाणं थावराण य ॥३५॥ ७३९. अप्पा नदी वेयरणी अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नंदणं वणं ॥३६॥ ७४०. अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥३७॥ ७४१. इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा ! तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि मे । नियंठधम्मं लभियाण वी जहा

सीयंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥ ७४२. जे पव्वइत्ताण महव्वयाइं सम्मं नो फासयती पमाया । अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे न मूलओ छिंदइ बंधणं से ॥३९॥
 ७४३. आउत्तया जस्स य नत्थि काई इरियाए भासाए तहेसणाए । आयाण-निक्खेव दुगुंछणाए न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०॥ ७४४. चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता
 अधिरव्वए तव-नियमेहिं भट्टे । चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥ ७४५. पोल्लेव मुट्ठी जह से असारे अयंतिए कूडकहावणे वा । राढामणीं
 वेरूलियप्पकासे अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥४२॥ ७४६. कुसीललिगं इह धारइत्ता इसिज्झयं जीविय विहइत्ता । असंजए संजय लप्पमाणे विणिघायमागच्छइ से
 चिरं पि ॥४३॥ ७४७. विसं तु पीयं जह कालकूडं हणाइ सत्थं जह कुग्गिहीयं । एसेव धम्मो विसओववन्नो हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥४४॥ ७४८. जे लक्खणं सुविणं
 पउंजमाणे निमित्त-कोउहलसंपगाढे । कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥४५॥ ७४९. तमं तमेणेव उ जे असीले सया दुही विप्परियासुवेई । संघावई
 नरग-तिरिक्खजोणिं मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥४६॥ ७५०. उद्देसियं कीयगडं नियागं न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं । अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता इओ चुए
 गच्छइ कट्टु पावं ॥४७॥ ७५१. न तं अरी कंठछेत्ता करेइ जं से करे अप्पणिया दुरप्पा । से णाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते पच्छाणुतावेण दयाविहूणे ॥४८॥ ७५२. निरद्विया
 नग्गरुई उ तस्स जे उत्तिमडुं विवज्जासमेइ । इमे वि से नत्थि परे वि लोए दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥४९॥ ७५३. एमेवऽहाछंद-कुसीलरूवे मग्गं विराहेत्तु
 जिणुत्तमाणं । कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा निरद्वसोया परितावमेइ ॥५०॥ ७५४. सोच्चाण मेहावि ! सुभासियं इमं अणुसासणं नाणगुणोववेयं । मग्गं कुसीलाण
 जहाय सव्वं महानियंठाण वए पहेणं ॥५१॥ ७५५. चरित्तमायारगुणन्निए तओ अणुत्तरं संजम पालियाणं । निरासवे संखवियाण कम्मं उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥५२॥
 ७५६. एवुग्गदंते वि महातवोधणे महामुणी महापइत्ते महाजसे । महानियंठिज्जमिणं महासुयं से काहए महया वित्थरेणं ॥५३॥ ७५७. तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु
 कयंजली । अणाहत्तं जहाभूयं सुट्टु मे उवदंसियं ॥५४॥ ७५८. तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! । तुब्भे सणाहा य सबंधवा य जं भे ठिया
 मग्गे जिणुत्तमाणं ॥५५॥ ७५९. तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ! । खामेमि ते महाभाग ! इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥ ७६०. पुच्छिऊण मए तुब्भं
 झाणविग्घो उ जो कओ । निमतिया य भोगेहिं तं सव्वं मरिसेहि मे ॥५७॥ ७६१. एवं धुणित्ताण स रायसीहो अणगारसीहं परमाए भत्तिए । सओरोहो सपरिजणो य
 धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥ ७६२. ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं । अभिवंदिऊण सिरसा अतियाओ नराहिवो ॥५९॥ ७६३. इयरो वि गुणसमिद्धो
 तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ य । विहग इव विप्पमुक्को विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆ ॥महानियंठिज्जं समत्तं ॥२०॥ ☆☆☆२१**
इगवीसइमं समुद्दपालिज्जं अज्झयणं☆☆☆ ७६४. चंपाए पालिए नामं सावए आसि वाणिए । महावीरस्स भगवओ सीसो सो उ महप्पणो ॥१॥ ७६५.
 निग्गंथे पावयणे सावए से विकोविए । पोएण ववहरंते पिहुंडं नगरमागए ॥२॥ ७६६. पिहुंडे ववहरंतस्स वाणिओ देइ धूरं । तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिए
 ॥३॥ ७६७. अह पालियस्स घरिणी समुद्दम्मि पसवई । अह दारए तहिं जाए समुद्दपाले त्ति नामए ॥४॥ ७६८. खेमेण आगए चंपं सावए वाणिए घरं । संबहुए घरे
 तस्स दारए से सुहोइए ॥५॥ ७६९. बावत्तरिं कलाओ य सिक्खिए नीइकोविए । जोव्वणेण य संपन्ने सुरुवे पियदंसणे ॥६॥ ७७०. तस्स रूववईं भज्जं पिया आणेह
 रूविणिं । पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुंदुगो जहा ॥७॥ ७७१. अह अन्नया कयाई पासायालोयणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥८॥ ७७२. तं
 पासिऊण संवेगं समुद्दपालो इमं बवी । अहो असुहाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥९॥ ७७३. संबुद्धो सो तहिंभगवं परं संवेगमागओ । आपुच्छऽम्मा-पियरो
 पव्वए अणगारियं ॥१०॥ ७७४. जहित्तु संगं थ महाकिलेसं महंतमोहं कसिणं भयावहं । परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥ ७७५.
 अहिंसं सच्चं च अतेणयं च तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च । पडिवज्जिया पंच महव्वयाइं चरेज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू ॥१२॥ ७७६. सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी
 खंतिक्खमे संजयबंभयारी । सावज्जजोगं परिवज्जयंतो चरेज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥१३॥ ७७७. कालेण कालं विहरेज्ज रट्टे बलाबलं जाणिय अप्पणो उ । सीहो

व सद्देण न संतसेज्जा वइजोग सोच्चा न असब्भमाहु ॥१४॥ ७७८. उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा पियमप्पियं सव्व तितिकखएज्जा । न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा न यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥ ७७९. अणेगच्छंदा मिह माणवेहिं जे भावओ संपकरेइ भिक्खू । भयभेरवा तत्थ उदेति भीमा दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥ ७८०. परीसह दुव्विसहा अणेगे सीयंति जत्था बहुकायरा नरा । से तत्थ पत्ते न वहेज्ज भिक्खू संगामसीसे इव नागराया ॥१७॥ ७८१. सीओसिणा दंसमसा य फासा आयंका विविहा फुसंति देहं । अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥१८॥ ७८२. पहाय रागं च तहेव दोसं मोहं च भिक्खू सततं वियक्खणे । मेरु व्व वाएण अकंपमाणे परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥ ७८३. अणुन्नए नावणए महेसी न यावि पूयं गरहं च संजए । से उज्जभावं पडिवज्ज संजए निव्वाणमगं विरए उवेइ ॥२०॥ ७८४. अरइ-रइसहे पहीणसंथवे विरए आयहिए पहाणवं । परमद्वपदेहिं चिट्ठई छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥ ७८५. विवित्तलयणाइं भएज्ज ताई निरोवलेवाइं असंथडाइं । इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥२२॥ ७८६. सन्नाणनाणोवगए महेसी अणुत्तरं चरिय धम्मसंचयं । अणुत्तरेनाणधरे जसंसी ओभासई सूरिए वंतलिकखे ॥२३॥ ७८७. दुविहं खवेऊण य पुण्ण-पावं निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के । तरित्ता समुद्वं व महाभवोहं समुद्वपाले अपुणागमं गइं गए ॥२४॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ समुद्वपालितिज्जयं समत्तं ॥२१॥ ☆☆☆ २२ बावीसइमं रहनेमिज्जं अज्ज्ञयणं ☆☆☆ ७८८. सोरियपुरम्मि नयरे आसि राया महिद्धिए । वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥१॥ ७८९. तस्स भज्जा दुवे आसि रोहिणी देवई तहा । तासिं दोणहं पि दो पुत्ता इट्ठा राम-केसवा ॥२॥ ७९०. सोरियपुरम्मि नयरे आसि राया महिद्धिए । समुद्वविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥३॥ ७९१. तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्ते महायसे । भगवं अरिद्वनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥४॥ ७९२. सो रिद्वनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ । अद्वसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥५॥ ७९३. वज्जरिसहसंधयणो समचउरं सो झसोदरो । तस्स राईमई कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥६॥ ७९४. अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी । सव्वलक्खणसंपन्ना विज्जुसोयामणिप्पभा ॥७॥ ७९५. अहाऽऽह जणओ तीसे वासुदेवं महिद्धियं । इहाडडगच्छउ कुमारो जा से कन्नं दलामहं ॥८॥ ७९६. सव्वोसहीहिं ण्हविओ कयकोउय-मंगलो । दिव्वजुयलपरिहिओ आहरणेहिं विभसिओ ॥९॥ ७९७. मत्तं च गंधहत्थिं वासुदेवस्स जेद्वगं । आरूढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥१०॥ ७९८. अह ऊसिएण छत्तेणं चामराहिं य सोहिओ । दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥११॥ ७९९. चउरंगिणीए सेणाए रइयाए जहक्कमं । तुरियाणं सन्निनाएणं दिव्वेणं गयणंफुसे ॥१२॥ ८००. एयारिसीए इड्डीए जुईए उत्तमाए य । नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥ ८०१. अह सो तत्थ निज्जंतो दिस्स पाणे भयदुए । वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरूद्धे सुदुक्खिए ॥१४॥ ८०२. जीवियंतं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए । पासेत्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्बवी ॥१५॥ ८०३. कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरूद्धा य अच्छहिं ? ॥१६॥ ८०४. अह सारही तओ भणइ एए भद्दा उ पाणिणो । तुब्भं विवाहकज्जम्मि भोयावेउं बहुं जणं ॥१७॥ ८०५. सोऊण तस्स वयणं बहुपाणविणासणं । चित्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥१८॥ ८०६. जइ मज्झ कारणा एए हम्मंति सुबहू जिया । न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥१९॥ ८०७. सो कुंडलाण जुयलं सुत्तगं च महायसो । आभरणाणि य सव्वाणि सारहिस्स पणामए ॥२०॥ ८०८. मणपरिणामे य कए देवा य जहोइयं समोइण्णा । सविद्धीए सपरिसा निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥ ८०९. देव-मणुस्सपरिवुडो सीयारयणं तओ समारूढो । निक्खमिय बारगाओ रेवययम्मिं ठिओ भयवं ॥२२॥ ८१०. उज्जाणं संपत्तो ओइण्णो उत्तमाओ सीयाओ । साहस्सीय परिवुडो अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥ ८११. अह सो सुगंधगंधिए तुरियं मउयकुंचिए । सयमेव लुंचई केसे पंचट्ठाहिं समाहिओ ॥२४॥ ८१२. वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिईदियं । इच्छियमणोरहं तुरियं पावसू तं दमीसरा ॥२५॥ ८१३. नाणेण दंसणेणं च चरित्तेण तवेण य । खंतीए मुत्तीए वद्धमाणो भवाहि य ॥२६॥ ८१४. एवं ते राम-केसवा दसारा य बहू जणा । अरिद्वनेमि वंदित्ता अइगया बारगापुरिं ॥२७॥ ८१५. सोऊण रायकन्ना पव्वज्जं सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणंदा सोगेण उ समुच्छया ॥२८॥ ८१६. राईमई विचित्तेइ धिरत्थु मम जीवियं । जा हं तेणं परिचत्ता सेयं पव्वइउं मम ॥२९॥ ८१७. अह सा भमरसन्निभे कुच्च-फणगपसाहिए । सयमेव लुंचई केसे धिइमंता ववस्सिया ॥३०॥

८१८. वासुदेवो यं भणइ लुत्तकेसिं जिइंदियं । संसारसागरं घोरं तर कच्चे ! लहुं लहुं ॥३१॥ ८१९. सा पव्वइया संती पव्वावेसी तहिं बहुं । सयणं परिजणं च व सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥ ८२०. गिरिं रेवतकं जंती वासेणोल्ला उ अंतरा । वासंते अंधकारम्मि अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥ ८२१. चीवराइं विसारेंती जहाजाय त्ति पासिया । रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥ ८२२. भीया य सा तहिं दहुं एगंते संजयं तयं । बाहाहिं काउ संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥३५॥ ८२३. अ सोह वि रायपुत्तो समुद्धविजयंगओ । भीयं पवेइयं दहुं इमं वक्कमुदाहरे ॥३६॥ ८२४. रहनेमी अहं भदे ! सुरुवे ! चारुपेहिणि ! । ममं भयाहि सुतणू ! न ते पीला भविस्सई ॥३७॥ ८२५. एहि ता भुंजिमो भोगे माणुस्सं खु सुदुल्लहं । भुत्तभोगा तओ पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥ ८२६. दडूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं । राईमई असंभंता अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥ ८२७. अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए । जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वदे ॥४०॥ ८२८. जइ सि रूवेण वेसमणो ललिणण नलकुब्बरो । तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥ ८२९. धिरत्थु ते जसो कामी ! जो तं जीवियकारणा । वंतं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥ ८३०. अहं च भोगरायस्स तं च सि अंधगवण्हिणो । मा कुले गंधणा होमो संजमं निहुओ चर ॥४३॥ ८३१. जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ । वायाइद्धो व हठो अट्ठियप्पा भविस्ससि ॥४४॥ ८३२. गोवालो भंडपालो वा जहा तद्वव्वऽणीसरो । एवं अणीसरो तं पि सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥ ८३३. तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं । अंकुसेण जहा नागो धम्मो संपडिवाइओ ॥४६॥ ८३४. मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइंदिओ । सामण्णं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥४७॥ ८३५. उग्गं तवं चरित्ताणं जाया दोन्नि वि केवली । सव्वं कम्मं खवेत्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥ ८३६. एवं करेति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा । विणियट्ठंति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमे ॥४९॥ त्ति बेमि ॥ **☆☆☆** ॥ रहनेमिज्जं समत्तं ॥ **☆☆☆** २३ तेवीसइमं केसि-गोयमिज्जं अञ्जयणं **☆☆☆** ८३७. जिणे पासे त्ति नामेणं अरहा लोगपूइए । संबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतिथ्यरे जिणे ॥१॥ ८३८. तस्सलोगप्पदीवस्स आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे विज्जा-चरणपारगे ॥२॥ ८३९. ओहिनाण-सुए बुद्धे सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयंते सावत्थिं नगरिमागए ॥३॥ ८४०. तेंदुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमंडले । फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥४॥ ८४१. अह तेणेव कालेणं धम्मतिथ्यरे जिणे । भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥५॥ ८४२. तस्स लोगप्पदीवस्स आसि सीसे महायसे । भगवं गोयमे नामं विज्जा-चरणपारए ॥६॥ ८४३. बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयंते से वि सावत्थिमागए ॥७॥ ८४४. कोट्टुगं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमंडले । फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥८॥ ८४५. केसी कुमारसमणे गोयमे य महायसे । उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा सुसमाहिया ॥९॥ ८४६. उभओ सीससंघाणं संजयाण तवस्सिणं । तत्थ चिंता समुप्पन्ना गुणवंताण ताइणं ॥१०॥ ८४७. 'केरिसो वा इमो धम्मो ?' इमो धम्मो व केरिसो ? । आयारधम्मप्पणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥ ८४८. चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेणं पासेण य महामुणी ॥१२॥ ८४९. अचेलगो य जो धम्मो जो इमो संतरुत्तरो । एककज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ॥१३॥ ८५०. अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्कियं । समागमे कयमती उभओ केसि-गोयमा ॥१४॥ ८५१. गोयमे पडिरूवन्नू सीससंघसमाकुले । जेइं कुलमवेक्खंतो तेंदुयं वणमागओ ॥१५॥ ८५२. केसी कुमारसमणे गोयमं दिस्स मागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥१६॥ ८५३. पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुस-तणाणि य । गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥१७॥ ८५४. केसी कुमारसमणे गोयमे य महायसे । उभओ निसण्णा सोहंति चंद-सूरसमप्पभा ॥१८॥ ८५५. समागया बहू तत्थ पासंडा कोउगा मिया । गिहत्थाण य णेगाओ साहस्सीओ समागया ॥१९॥ ८५६. देव-दाणव-गंधव्वा जक्ख-रक्खस-किन्नरा । अहिस्साण य भूयाणं आसि तत्थ समागमो ॥२०॥ ८५७. 'पुच्छामि ते महाभाग !' केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥२१॥ ८५८. 'पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते' केसिं गोयममब्बवी । तओ केसी अणुत्ताए गोयमं इणमब्बवी ॥२२॥ ८५९. 'चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ

वद्धमाणेणं पासेण य महामुणी ॥२३॥ ८६०. एककज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? । धम्मे दुविहे मेहावी ! कहां विप्पच्चओ न ते ? ॥२४॥ ८६१. तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी । 'पन्ना समिक्खए धम्मंतत्तं तत्तविणिच्छयं ॥२५॥ ८६२. पुरिमा उज्जुजडा उ वंकजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपन्ना उ तेण धम्मो दुहा कओ ॥२६॥ ८६३. पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ चरिमाणं दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाणं तु सुविसोज्झो सुपालओ ॥२७॥ ८६४. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥ ८६५. अचेलगो य जो धम्मो जो इमो संतरुत्तरो । देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ! ॥२९॥ ८६६. एककज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? । लिंगे दुविहे मेहावी ! कहां विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥ ८६७. तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी । 'विन्नाणेणं समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥ ८६८. पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं । जत्तत्थं गहणत्थं च लोए लिंगप्पओयणं ॥३२॥ ८६९. अह भवे पइन्ना उ मोक्खसम्भूयसाहणा । नाणं च दंसणं चैव चरित्तं चैव निच्छए ॥३३॥ ८७०. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥ ८७१. अणेगाणं सहस्साणं मज्झे चिट्ठसि गोयमा ! । ते य ते अभिगच्छंति कहां ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥ ८७२. 'एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस । दसधा उ जिणित्ता णं सब्बसत्तू जिणामहं ॥३६॥ ८७३. 'सत्तू य इति के वुत्ते ?' केसी गोयमम्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बी ॥३७॥ ८७४. 'एगऽप्पा अजिए सत्तू कसाया इंदियाणि य । ते जिणित्तु जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥३८॥ ८७५. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥३९॥ ८७६. दीसंति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो । मुक्कपासो लहुम्भूओ कहां तं विहरसी मुणी ! ॥४०॥ ८७७. ते पासे सब्बसो छेत्ता निहंतूण उवायओ । मुक्कपासो लहुम्भूओ विहरामि अहं मुणी ! ॥४१॥ ८७८. 'पासा य इति के वुत्ता ?' केसी गोयमम्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥ ८७९. 'राग-द्वोसादओ तिब्वा नेहपासा भयंकरा । ते छिदित्तु जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥४३॥ ८८०. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥४४॥ ८८१. अंतोहिययसंभूया लया चिट्ठइ गोयमा ! ॥ फलेइ विसभक्खीणं सा उ उद्धरिया कहां ? ॥४५॥ ८८२. 'तं लयं सब्बसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं । विहरामि जहानायं मुक्को मि विसभक्खणं ॥४६॥ ८८३. 'लया य इति का वुत्ता ?' केसी गोयमम्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥४७॥ ८८४. 'भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया । तमुद्धिच्च जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥४८॥ ८८५. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥४९॥ ८८६. संपज्जलिया धोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा ! ॥ जे डहंति सरीरत्था कहां विज्झाविया तुमे ? ॥५०॥ ८८७. 'महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं । सिंचामि सययं ते उ सित्ता नो व डहंति मे ॥५१॥ ८८८. 'अग्गी य इति के वुत्ता ?' केसी गोयमम्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमा इणमब्बवी ॥५२॥ ८८९. 'कसाया अग्गिणो वुत्ता सुय-दील-तवो जलं । सुयधाराभिहया संता भिन्ना हु न डहंति मे ॥५३॥ ८९०. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥५४॥ ८९१. अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई । जंसि गोयम ! आरूढो कहां तेण न हीरसि ? ॥५५॥ ८९२. 'पहावंतं निगिण्हामि सुयरस्सिसमाहियं । न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जई ॥५६॥ ८९३. 'अस्से य इति के वुत्ते ?' केसी गोयमम्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥ ८९४. 'मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई । तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कंथगं ॥५८॥ ८९५. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥५९॥ ८९६. कुप्पहा बहवे लोए जेहिं नासंति जंतवो । अब्बाणे कह वट्ठंतो तं न नाससि गोयमा ! ॥६०॥ ८९७. 'जे य मग्गेण गच्छंति जे य उम्मग्गपट्टिया । ते सब्बे विदिया मज्झं तो न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥ ८९८. 'मग्गे य इति के वुत्ते ?' केसी गोयमम्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥ ८९९. 'कुप्पवयणपासंडी सब्बे उम्मग्गपट्टिया । सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥ ९००. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥ ९०१. महाउदगवेगेणं वुज्झमाणान पाणिणं । सरणं गइं पइट्ठा य दीवं कं मन्नसी मुणी !? ॥६५॥ ९०२. 'अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ । महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥६६॥'

९०३. 'दीवे य इति के वुत्ते ?' केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥६७॥ ९०४. 'जरा-मरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं । धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं ॥६८॥' ९०५. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥६९॥ ९०६. अन्नवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई । जंसि गोयम ! आरूढो कहं पारं गमिस्ससि ? ॥७०॥' ९०७. 'जा उ आसाविणी नावा न सा पारस्स गामिणी । जा निरस्साविणी नावा सा तु पारस्स गामिणी ॥७१॥' ९०८. 'नावा य इति का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥ ९०९. 'सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ । संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरंति महेसिणो ॥७३॥' ९१०. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥ ९११. अंधयारे तमे घोरे चिट्ठंति पाणिणो बहू । को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगम्मि पाणिणं ? ॥७५॥' ९१२. 'उग्गओ विमलो भाणु सव्वलोकपभंकरो । सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगम्मि पाणिणं ॥७६॥' ९१३. 'भाणू य इति के वुत्ते ?' केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥७७॥ ९१४. 'उग्गओ खीणसंसारो सव्वणु जिणभक्खरो । सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगम्मि पाणिणं ॥७८॥' ९१५. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥ ९१६. सारीर-माणसे दुक्खे बज्झमाणाण पाणिणं । खेमं सिवं अणाबाहं ठाणं किं मन्नसी मुणी ! ॥८०॥' ९१७. 'अत्थि एगं धुवं ठाणं लोग्गम्मि दुरारुहं । जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥' ८१८. 'ठाणे य इति के वुत्ते ?' केसी गोयममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥८२॥ ९१९. 'निव्वाणं ति अबाहं ति सिद्धी लोग्गमेव य । खेमं सिवं अणाबाहं जं चरंति महेसिणो ॥८३॥ ९२०. तं ठाणं सासयंवासं लोग्गम्मि दुरारुहं । जं संपत्ता न सोयंति भवोहंतकरा मुणी ॥८४॥' ९२१. 'साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो । नमो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोदही ! ॥८५॥ ९२२. एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे । अभिवंदित्ता सिरसा गोयमं तु महायसं ॥८६॥ ९२३. पंचमहव्वय धम्मं पडिवज्जइ भावओ । पुरिमस्स पच्छिमम्मी मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥ ९२४. केसी-गोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे । सुय-सीलसमुक्करिसो महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥ ९२५. तोसिया परिसा सव्वा सम्मग्गं समुवट्ठिया । संथुया ते पसीयंतु भयवं केसि-गोयम ॥८९॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ केसि-गोयमिज्जं समत्तं ॥२३॥ ☆☆☆ २४ चउवीसइमं पवयणमायं अज्झयणं ☆☆☆ ९२६. अट्ठ पवयणमायाओ समिती गुत्ती तहेव य । पंचेव य समितीओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥१॥ ९२७. इरिया-भासेसणादाणे १-४ उच्चारे ५ समिती इय । मणगुत्ती ६ वइगुत्ती ७ कायगुत्ती ८ य अट्ठमा ॥२॥ ९२८. एयाओ अट्ठ समितीओ समासेण वियाहिया । दुवालसंगं जिणऽक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥ ९२९. आलंबणेण कालेणं मग्गेण जयणाय य । चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥४॥ ९३०. तत्थ आलंबणं नाणं दंसणं चरणं तहा । काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥ ९३१. दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥ ९३२. दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमेत्तं च खेत्तओ । कालओ जाव रीएज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥ ९३३. इंदियत्थे विवज्जेत्ता सज्झायं चेव पंचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते रियं रिए १ ॥८॥ ९३४. कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया । हासे भय मोहरिए विगहासु तहेव य ॥९॥ ९३५. एयाई अट्ठ ठाणाई परिवज्जितु संजए । असावज्जं मितं काले भासं भासेज्ज पन्नवं २ ॥१०॥ ९३६. गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा । आहारोवहि-सेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥११॥ ९३७. उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं । परिभोगम्मि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ३ ॥१२॥ ९३८. ओहोवहोवग्गहियं भंडगं दुविहं मुणी । गिण्हंतो निक्खिवंतो य पउंजेज्ज इमं विहिं ॥१३॥ ९३९. चक्खुसा पडिलेहिता पमज्जेज्जा जयं जई । आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ४ ॥१४॥ ९४०. उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाण जल्लियं । आहारं उवहिं देहं अन्नं वा वि तहाविहं ॥१५॥ ९४१. अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए । आवायमसंलोए आवाए चेव संलोए ॥१६॥ ९४२. अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए । समे अज्जुसिरे यावि अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥ ९४३. वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए । तसपाण-बीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ५

॥१८॥ ९४४. एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया । एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९॥ ९४५. सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य । चउत्थी असच्चमोसा य मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥ ९४६. संरंभ-समारंभे आरंभे य तहेव य । मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ६ ॥२१॥ सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य । चउत्थी असच्चमोसा य वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥ ९४८. संरंभ-समारंभे आरंभे य तहेव य । वइं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ७ ॥२३॥ ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे । उल्लंघण पल्लंघण इंदियाण य जुंजणे ॥२४॥ ९५०. संरंभ-समारंभे आरंभे य तहेव य । कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ८ ॥२५॥ ९५१. एयाओ पंच समितीओ चरणस्स य पवत्तणे । गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥ ९५२. एया पवयणमाया जे सम्मं आयेरे मुणी । से खिप्पं सव्वसंसारो विप्पमुच्चति पंडिए ॥२७॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ पवयणिज्जं पवयणमायं) समत्तं ॥२४॥ ☆☆☆ २५ पंचवीसइमं जन्नइज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ९५३. माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजन्नम्मि जयघोसि त्ति नामओ ॥१॥ ९५४. इंदियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी । गामाणुगामं रीयंते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥२॥ ९५५. वाणारसीय बहिया उज्जाणम्मि मणोरमे । फासुए सेज्जसंधारे तत्थ वासमुवागए ॥३॥ ९५६. अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे । विजयघोसे त्ति नामेणं जन्नं जयइ वेयवी ॥४॥ ९५७. अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे । विजयघोसस्स जन्नाभि भिक्खमट्ठा उवट्टिए ॥५॥ ९५८. समुवट्ठियं तहिं संतं जायगो पडिसेहए । 'न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू ! जायाहि अन्नओ ॥६॥ ९५९. जे य वेयविकु विप्पा जन्नट्ठा य जे दिया । जाइसंगविकु जे य जे य धम्माण पारगा ॥७॥ ९६०. जे समत्था समद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य । तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू ! सव्वकामियं ॥८॥ ९६१. सो तत्थ एव पडिसिद्धो जायगेण महामुणी । न वि रुद्धो न वि तुद्धो उत्तिमट्ठगवेसओ ॥९॥ ९६२. नऽन्नट्ठं पाणहेउं वा न निव्वाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणट्ठाए इमं वयणमव्ववी ॥१०॥ ९६३. 'न वि' जाणसि वेयमुहं, न वि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥ ९६४. जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य । न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥ ९६५. तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयंतो तहिं दिओ । सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महामुणिं ॥१३॥ ९६६. 'वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥१४॥ ९६७. जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य । एयं मे संसयं सव्वं साहू ! कहय पुच्छिओ ॥१५॥ ९६८. 'अग्गिहोत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसां मुहं । नक्खत्ताण मुहं चंदो, धम्माणंकासवो मुहं ॥१६॥ ९६९. जहा चंदं गहाईया चिट्ठंती पंजलीयडा । वंदमाणा नमंसंता उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥ ९७०. अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया । गूढा सज्झाय-तवसा भासच्छन्ना इवऽग्गिरो ॥१८॥ ९७१. जे लोए बंभणा वुत्ता अग्गी वा महिओ जहा । सया कुसलसंदिट्ठं तं वयं बूम माहणं ॥१९॥ ९७२. जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो न सोयई । रमई अज्जवयणम्मि तं वयं बूम माहणं ॥१९॥ १९३. जायरूवं जहामट्ठं निद्धंतमलपावगं । राग-दोस-भयातीयं तं वयं बूम माहणं ॥२१॥ ९७४. तसपाणे वियाणित्ता संगहेण य थावरे । जो न हिंसइ तिविहेणं तं वयं बूम माहणं ॥२१॥ ९७५. कोहा वा जइ वा हासा लोभा वा जइ वा भया । मुसं न वयई जो उ तं वयं बूम माहणं ॥२३॥ ९७६. चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं । न गेणहति अदत्तं जे तं वयं बूम माहणं ॥२४॥ ९७७. दिव्व-माणुस-तेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं । मणसा काय-वक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥२५॥ ९७८. जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा । एवं अलित्त कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥२६॥ ९७९. अलोलुयं मुहाजीवी अणगारं अकिंचणं । असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥२७॥ जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइसंगे य बंधवे । जो न सज्जइ एएहिं तं वयं बूम माहणं ॥ ९८०. पसुबंधा सव्ववेदा जट्ठं च पावकम्मुणा । न तं तायंति दुस्सीलं कम्माणि बलवंतिह ॥२८॥ ९८१. न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो । न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥२९॥ ९८२. समयए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो । नऽणोण य मुणी होइ, तवेणं होइ तावसो ॥३०॥ ९८३. कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ । वइसो कम्मुणा होइ, सुद्धो होइ उ कम्मुणा ॥३१॥ ९८४. एए पाउकरे बुद्धे जेहिं होइ सिणायओ । सव्वकम्मविणिम्मुककं तं वयं बूम माहणं ॥३२॥ ९८५. एवं गुणसमाउत्ता जे भवंति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ॥३३॥ ९८६. एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे । समुदाय तओ तं तु जयघोसं महामुणिं ॥३४॥ ९८७. तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु

कयंजली । 'माहणत्तं जहाभूयं सुद्धु मे उवदंसियं ॥३५॥ ९८८. तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविकु विकु । जोइसंगविकु तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३६॥ ९८९. तुब्भे समत्था उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य । तमणुगहं करेहऽम्हं भिक्खेणं भिक्खुत्तमा ! ॥३७॥ ९९०. 'ने कज्जं मज्झ भिक्खेणं खिप्पं निक्खमसू दिया ! । मा भम्मिहिसि भयावत्ते घोरे संसारसागरे ॥३८॥ ९९१. उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई । भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥३९॥ ९९२. उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया । दो वि आवडिया.कुड्डे जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई ॥४०॥ ९९३. एवं लग्गंति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा । विरत्ता उ न लग्गंति जह्वां से सुक्कगोलए ॥४१॥ ९९४. एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अंतिए । अणगारस्स निक्खंते धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४२॥ ९९५. खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य । जयघोस-विजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४३॥ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ जन्नइज्जं समत्तं ॥२५॥ ☆☆☆ २६ छव्वीसइमं सामायारिज्जं अञ्जयणं ☆☆☆ ९९६. सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं । जं चरित्ता ण निग्गंथा तिण्णा संसारसागरं ॥१॥ ९९७. पढमा आवस्सिया नामं बिइया य निसीहिया । आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥ ९९८. पंचमा छंदणा नामं इच्छकारो य छट्ठओ । सत्तमो मिच्छकारो य तहक्कारो य अट्ठमो ॥३॥ ९९९. अब्भुट्ठाणं नवमं दसमा उवसंपदा । एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥४॥ १०००. गमणे आवस्सियं कुज्जा १, ठाणे कुज्जा निसीहियं २ । आपुच्छणा सयंकरणे ३, परकरणे पडिपुच्छणा ४ ॥ ५॥ १००१. छंदणा दव्वजाएणं ५, इच्छाकारो य सारणे ६ । मिच्छाकारोऽप्पनिंदाए ७, तहक्कारो पडिस्सुए ८ ॥६॥ १००२. अब्भुट्ठाणं गुरुपूया ९, अच्छणे उवसंपदा १० । एवं दुपंचसंजुत्ता सामायारी पवेइया ॥७॥ १००३. पुव्विल्लम्मि चउब्भागे आइच्चम्मि समुट्टिए । भंडगं पडिलेहिता वंदित्ता य तओ गुरुं ॥८॥ १००४. पुच्छेज्ज पंजलियडो 'किं कायव्वं मए इहं ? इच्छं निओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्झाए' ॥९॥ १००५. वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वमगिलायओ । सज्झाए वा निउत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥१०॥ १००६. दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणे । तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥ १००७. पढमं पोरिसि सज्झायं बितियं ज्ञाणं झियायई । तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥१२॥ १००८. आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥१३॥ १००९. अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेणं तु दुयंगुलं । वट्ठए हायए वा वि मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥ १०१०. आसाढ बहुलपक्खे भद्वए क्तिए य पोसे य । फग्गुण-वइसाहेसु य नायव्वा ओमरत्ता उ ॥१५॥ १०११. जेट्टामूले आसाढ-सावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा । अट्टहिं बिइय तियम्मी, तइए दस, अट्टहिं चउत्थे ॥१६॥ १००१२. रत्तिं पि चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणे । तओ उत्तरगुणे कुज्जा राईभागेसु चउसु वि ॥१७॥ १०१३. पढमं पोरिसि सज्झायं बितियं ज्ञाणं झियायई । तइयाए निद्वमोक्खं तु चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥१८॥ १०१४. जं नेइ जया रत्तिं नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भागे । संपत्ते विरमेज्जा सज्झाय पओसकालम्मि ॥१९॥ १०१५. तम्मेव य नक्खत्ते गयण चउब्भागसावसेसम्मि । वेरत्तियं पि कालं पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥२०॥ १०१६. पुव्विल्लम्मि चउब्भागे पडिलेहिताण भंडयं । गुरुं वंदित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥२१॥ १०१७. पोरिसीए चउब्भागे वंदित्ताण तओ गुरुं । अपडिक्कमित्तु कालस्स भायणं पडिलेहए ॥२२॥ १०१८. मुहपत्तिं पडिलेहिता पडिलेहिज्ज गोच्छयं । गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥ १०१९. उहं थिरं अतुरियं पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे । तो बिइयं प्पफोडे, तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥२४॥ १०२०. अणच्चावियं अवलियं अणाणुबंधि अमोसलिं चेव । छप्पुरिमा नव खोडा पाणीपाणिविसोहणं ॥२५॥ १०२१. आरभडा १ सम्महा २ वज्जेयव्वा य मोसली तइया ३ । प्पफोडणा चउत्थी ४ विक्खित्ता ५ वेइया छट्ठा ६ ॥२६॥ १०२२. पसिढिल-पलंब-लोला एगामोसा अणेगरूवधुणा । कुणइ पमाणि पमायं संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥ १०२३. अणूणाइरित्तपडिलेहा अविवच्चासा तहेव य । पढमं पयं पसत्थं, सेसाइं उ अप्पसत्थाइं ॥२८॥ १०२४. पडिलेहणं कुणंतो मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा । देइ व पच्चक्खाणं वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥ १०२५. पुढवी-आउक्काए तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं । पडिलेहणापमत्तो छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥ १०२६. तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए । छण्हं अन्नयरागम्मि कारणम्मि समुट्टिए ॥३१॥ १०२७. वेयण वेयावच्चे १-२ इरियट्टाए ३ य संजमट्टाए ४ । तह पाणवत्तियाए

५ छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥३२॥ १०२८. निग्गंधो धितिमंतो निग्गंधी वि न करेज्ज छहिं चेव । ठाणेहिं तु इमेहिं अणइक्कमणा य से होइ ॥३३॥ १०२९. आयंके उवसग्गे तितिकखया बंभचेरगुत्तीसु । पाणिदया-तवहेउं सरीरवोच्छेयणद्वाए ॥३४॥ १०३०. अवसेसं भंडगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए । परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥३५॥ १०३२. पोरिसीए चउब्भागे वंदित्ताण तओ गुरुं । पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥३७॥ १०३३. पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहेज्ज जयं जई । काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥३८॥ १०३४. देसियं च अईयारं चित्तेज्ज अणुपुव्वसो । नाणम्मि दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य ॥३९॥ १०३५. पारियकाउस्सग्गो वंदित्ताण तओ गुरुं । देसियं तु अईयारं आइयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥४०॥ १०३६. पडिकमित्तु निस्सल्लो वंदित्ताण तओ गुरुं । काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४१॥ १०३७. पारियकाउस्सग्गो वंदित्ताण तओ गुरुं । थुइमंगलं च काऊणं कालं संपडिलेहए ॥४२॥ १०३८. पढमं पोरिसि सज्जायं, बिइए ज्ञाणं झियायई । तइयाए निद्वमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए ॥४३॥ १०३९. पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया । सज्झायं तु तओ अबोहेंतो असंजए ॥४४॥ १०४०. पोरिसीए चउब्भागे वंदिऊण तओ गुरुं । पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥४५॥ १०४१. आगते कायवोसग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे । काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४६॥ १०४२. राइयं च अईयारं चित्तेज्जं अणुपुव्वसो । नाणम्मि दंसणम्मि चरित्तम्मि तवम्मि य ॥४७॥ १०४३. पारियकाउस्सग्गो वंदित्ताण तओ गुरुं । राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥४८॥ १०४४. पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वंदित्ताण तओ गुरुं । काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४९॥ १०४५. 'किं तव पडिवज्जामि ?' एवं तत्थ विचिंतए । काउस्सग्गं तु पारित्ता वंदिऊण तओ गुरुं ॥५०॥ १०४६. पारियकाउस्सग्गो वंदित्ताण तओ गुरुं । तवं संपडिवज्जित्ता करेज्ज सिद्धाण संथवं ॥५१॥ १०४७. एसा सामायारी समासेण वियाहिया । जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥५२॥ ॥त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥सामायारिज्जं समत्तं ॥२६॥ ☆☆☆ २७ सत्तावीसइमं खलुंकियं अज्झयणं ☆☆☆ १०४८. थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए । आइन्ने गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए ॥५३॥ १०४९. वहणे वहमाणस्स कंतारं अइवत्तई । जोगे वहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥२॥ १०५०. खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई । असमाहिं च वेदेति तोत्तओ य से भज्जई ॥३॥ १०५१. एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विंधइअभिकखणं । एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥४॥ १०५२. एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निविज्जई । उक्कुइ उप्फिडई सढे बालगवी वए ॥५॥ १०५३. माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिपहं । मयलक्खेण चिद्वाई, वेगेण य पहावई ॥६॥ १०५४. छिन्नाले छिंदई सिल्लिं दुद्धंते भंजई जुगं । से वि य सुस्सुयाइत्ता उज्जुहिता पलायए ॥७॥ १०५५. खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइया धम्मजाणम्मि भज्जंती थिइदुब्बला ॥८॥ १०५६. इहीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥९॥ १०५७. भिक्खालसिए एगे. एगे ओमाणभीरुए थद्धे । एगं च अणुसासम्मि हेऊहिं कारणेहिं य ॥१०॥ १०५८. सो वि अंतरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई । आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेइ अभिकखणं ॥११॥ १०५९. 'न सा ममं वियाणाइ, न वि सा मज्झ दाहिई । निग्गया होहिती मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥१२॥' १०६०. पेसिया पलिउंचंति ते परियंति समंतओ । रायवेट्ठिं व मन्नंता करेति भिउडिं मुहे ॥१३॥ १०६१. वाइया संगहिया चेव भत्तपाणेण पोसिया । जायपक्खा जहा हंसा पक्कमंति दिसोदिसिं ॥१४॥ १०६२. अह सारही विचिंतेइ खलुंकेहिं समागओ । 'किं मज्झ दुइसीसेहिं ? अप्पा मे अवसीयई ॥१५॥ १०६३. जारिसा मम सीसा उ तारिसा गलिगद्दभा । गलिगद्दभे चईत्ता णं दढं पणिण्हई तवं ॥१६॥' १०६४. मिउ मद्दवसंपन्नो गंभीरो सुसमाहिओ । विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पण ॥१७॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ खलुंकियं समत्तं ॥२७॥ ☆☆☆ २८ अट्ठावीसइमं मोक्खमग्गगतीनामं अज्झयणं ☆☆☆ १०६५. मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं । चउकारणसंजुत्तं नाण-दंसणलक्खणं ॥१॥ १०६६. नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा । एस मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥ १०६७. नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा । एयं मग्गमणुप्पत्ता जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥३॥ १०६८. तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं । ओहीनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥४॥ १०६९. एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य । पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहिं देसियं ॥५॥

१०७०. गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा । लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ॥६॥ १०७१. धम्मो अहम्मो आकासं कालो पोग्गल जंतवो । एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वसदंसिहिं ॥७॥ १०७२. धम्मो अहम्मो आकासं दव्वं इक्किक्कमाहियं । अणंताणि य दव्वाणि कालो पोग्गल-जंतवो ॥८॥ १०७३. गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायणं सव्वदव्वाणं नहं ओगाहलक्खणं ॥९॥ १०७४. वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो । नाणेण दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥१०॥ १०७५. नाणं च दंसणं चैव चरित्तं च तवो तहा । वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥११॥ १०७६. सद्दंधयार उज्जोओ पहा छायाऽऽतवे त्ति वा । वण्ण-रस-गंध-फासा पोग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥ १०७७. एकत्तं च पुहत्तं च संखा संठाणमेव य । संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥ १०७८. जीवाऽजीवा य बंधो य पुण्ण-पावाऽऽसवा तहा । संवरो निज्जरा मोक्खो संतेए तहिया नव ॥१४॥ १०७९. तहियाणं तु भावाणं सब्भावे उवएसणं । भावेण सद्दहंतस्स सम्मत्तं तं वियाहियं ॥१५॥ १०८०. निसग्गुवदेसरुई १-२ अणारूइ ३ सुत्त- बीयरूइ ४-५ मेव । अभिगम-वित्थाररूई ६-७ किरिया-संखेव-धम्मरूई ८-१० ॥१६॥ १०८१. भूयत्थेणाहिगया जीवाऽजीवा य पुण्ण पावं च । सहसम्मूइयाऽऽसव-संवरे य रोएइ उ निसग्गो ॥१७॥ १०८२. जो जिणदिट्ठे भावे चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव । एमेय नऽन्नह त्ति य निसग्गरूइ त्ति नायव्वो १ ॥१८॥ १०८३. एए चैव हु भावे उवइट्ठे जो परेण सद्दहइ । छउमत्थेण जिणेण व उवएसरूइ त्ति नायव्वो २ ॥१९॥ १०८४. रागो दोसो मोहो अन्नाणं जस्स अवगयं होइ । आणाए रोयंतो सो खलु आणारूई नामं ३ ॥२०॥ १०८५. जो सुत्तमहिज्जंतो सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं । अंगेण बाहिरेण व सो सुत्तरूइ त्ति नायव्वो ४ ॥२१॥ १०८६. एणेण अणेगाइं पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं । उदए व्व तेल्लबिंदू सो बीयरूइ त्ति नायव्वो ५ ॥२२॥ १०८७. सो होइ अभिगमरूई सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं । एक्कारस अंगाइं पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ६ ॥२३॥ १०८८. दव्वाण सव्वभावा सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा । सव्वाहिं नयविहीहिं य वित्थाररूइ त्ति नायव्वो ७ ॥२४॥ १०८९. दंसण-नाण-चरित्ते तव-विणए सच्चसमिइ-गुत्तीसु । जो किरियाभावरूई सो खलु किरियारूई नामं ८ ॥२५॥ १०९०. अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरूइ त्ति होइ नायव्वो । अविसारओ पवयणे अणभिग्गहिओ य सेसेसु ९ ॥२६॥ १०९१. जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च । सद्दहइ जिणाभिहियं सो धम्मरूइ त्ति नायव्वो १० ॥२७॥ १०९२. परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि । वावन्न-कुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥ १०९३. नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं । सम्मत्त-चरित्ताइं जुगवं, पुवं व सम्मत्तं ॥२९॥ १०९४. नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न होति चरणगुणा । अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमुक्कस्स निव्वाणं ॥३०॥ १०९५. निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिंछा अमूढदिट्ठी य । उववूह-थिरीकरणे वच्छल्ल-पभावणे अट्ट ॥३१॥ १०९६. सामाइयं थ पढं छेओवट्ठावणं भवे बितियं । परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥ १०९७. अकसायमहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥ १०९८. तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरऽऽभंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भित्तरो तवो ॥३४॥ १०९९. नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे । चरित्तेण न गिण्हाइ तवेण परिसुज्झई ॥३५॥ ११००. खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य । सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो ॥३६॥ त्ति बेमि ॥ ★★ ★ ।

मोक्खमग्गतीनामऽज्जयणं समत्तं ॥२८॥ ★★ ★ २९ एगूणतीसइमं सम्मत्तपरक्कमं अज्जयणं ★★ ★ ११०१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नामऽज्जयणे; समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए, जं सम्मं सद्दहिता पत्तइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥१॥ ११०२. तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तं जहा-संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरु-साहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निंदणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउवीसत्थए ९ वंदणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थय-थुइमंगले १४ कालपडिलेहणा १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० परियट्ठणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसन्निवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वीयाणे २८

सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणिवट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सभावपच्चक्खाणे ४१ पडिरुवया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपु(१प)ण्णया ४४ वीयरगया ४५ खंती ४६ मुत्ती ४७ मह्वे ४८ अज्जवे ४९. भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वइगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाहारणया ५६ वइसमाहारणया ५७ कायसमाहारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खिदियनिग्गहे ६३ घाणिदियनिग्गहे ६४ जिब्भियनिग्गहे ६५ फासिदियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥२॥ ११०३. संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणपइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ, अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोभे खवेई, कम्मं न बंधइ, तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ, दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्जइ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ १ ॥३॥ ११०४. निव्वेएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? निव्वेएणं दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ, सव्वविसएसु विरज्जइ, सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिच्चायं करेइ, आरंभपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ, सिद्धिमग्गपडिवन्ने य भवइ २ ॥४॥ ११०५. धम्मसद्धाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ, अगारधम्मं च णं चयइ, अणगारे णं जीवे सारीर-माणसाणं दुक्खाणं छेयण-भेयण-संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ, अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ ३ ॥५॥ ११०६. गुरु-साहम्मियसुस्सूसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? गुरु-साहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ । विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइय-तिरिक्खजोगिय-मणुस्स-देवदुग्गईओ निरुंभइ, वण्णसंजलण-भत्ति-बहुमाणयाए मणुस्स-देवसोग्गईओ निबंधइ, सिद्धिसोग्गइ च विसोहेइ, पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ, अन्ने य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ४ ॥६॥ ११०७. आलोयणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? आलोयणयाए णं माया-नियाण-मिच्छादरिसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणंतसंसारवद्धणाणं उद्धरणं करेइ, उज्जुभावं च णं जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेय नपुंसगवेयं च न बंधइ, पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ५ ॥७॥ ११०८. निंदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ । पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ । करणगुणसेढीपडिवन्ने य अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ६ ॥८॥ ११०९. गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? गरहणयाए णं अपुरेक्कारं जणयइ । अपुरेक्कारणं जीवे अप्पसत्थेहितो जोगेहितो नियत्तेइ, पसत्थेहि य पवत्तइ । पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणंतघाई पज्जवे खवेइ ७ ॥९॥ ११११. चउवीसत्थएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चउवीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ९ ॥११॥ १११२. वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं निबंधइ, सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ १० ॥१२॥ १११३. पडिक्कमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिक्कमणेणं वयच्छिदाइं पिहेइ । पिहियवयच्छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्टसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ११ ॥१३॥ १११४. काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पन्न पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरु व्व भारवहे पसत्थज्ञाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ १२ ॥१४॥ १११५. पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुंभइ १३ ॥१५॥ १११६. थय-थुइमंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? थय-थुइमंगलेणं नाण-दंसण-चरित्तबोहिलाभं जणयइ । नाण-दंसण-चरित्तबोहिलाभसंपण्णे जीवे अंतकिरियं कप्प-विमाणोववत्तियं आराहणं आराहेइ १४ ॥१६॥ १११७. कालपडिलेहणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कालपडिलेहणाए नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ १५ ॥१७॥ १११८. पायच्छित्तकरणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ । पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ १६ ॥१८॥ १११९. खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? खमावणयाए णं

पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु मेत्तीभावं उप्पाएइ । मेत्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ १७ ॥१९॥ ११२०. सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणवइ । सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ १८ ॥२०॥ ११२१. वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वायणाए णं निज्जरं जणयइ, सुयस्स य अणासायणयाए वट्टइ । सुयस्स अणासायणयाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ । तित्थधम्मं अवलंबमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ १९ ॥२१॥ ११२२. पडिपुच्छणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिपुच्छणाए णं सुत्तत्थ-तदुभयाइं विसोहेइ, कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ २० ॥२२॥ ११२३. परियट्टणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ २१ ॥२३॥ ११२४. अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिद्धिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्टिइयाओ हस्सकालट्टिइयाओ पकरेइ, तिब्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतरं खिप्पामेव वीईवयइ २२ ॥२४॥ ११२५. धम्मकहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ, पवयणपभावए णं जीवे आगमेसस्सभद्धताए कम्मं निबंधइ २३ ॥२५॥ ११२६. सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सुयस्स आराहणयाए अन्नाणं खवेइ, न य संकिलिस्सइ २४ ॥२६॥ ११२८. संजमेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संजमेणं अणणहयत्तं जणयइ २६ ॥२८॥ ११३०. वोयाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वोयाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ २८ ॥३०॥ ११३१. सुहसाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुए णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ २९ ॥३१॥ ११३२. अप्पडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगगचित्ते दिया वा राओ वा असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ३० ॥३२॥ ११३३. विवित्तसयणासणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्टविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ३१ ॥३३॥ ११३४. विणिवट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? विणिवट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्टेइ, पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ, तओ पच्छा चाउरंतं संसारकंतरं वीइवयइ ३२ ॥३४॥ ११३५. संभोगपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संभोगपच्चक्खाणेणं आलंबणाइं खवेइ । निरालंबणस्स य आयतट्टिया जोगा भवंति, सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परस्स लाभं नो आसाएइ, परलाभं नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ । परस्स लाभं अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसेमाणे दोच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ३३ ॥३५॥ ११३६. उवहिपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ । निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ३४ ॥३६॥ ११३७. आहारपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? आहारपच्चक्खाणेणं जीवीयासंसप्पओगं वोच्छिंदइ । जीवीयासंसप्पओगं वोच्छिदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ३५ ॥३७॥ ११३८. कसायपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कसायपच्चक्खाणेणं वीयरगभावं जणयइ । वीयरगभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुह-दुक्खे भवइ ३६ ॥३८॥ ११३९. जोगपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ । अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ३७ ॥३९॥ ११४०. सरीरपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तं निव्वत्तेइ । सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोग्गमुवगए परमसुही भवइ ३८ ॥४०॥ ११४१. सहायपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए य णं जीवे एगगं भावेमाणे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ३९ ॥४१॥ ११४२. भत्तपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुंभइ ४० ॥४२॥ ११४३. सब्भावपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्टिं जणयइ । अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ, तं जहा वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं ।

तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ४१ ॥४३॥ ११४४. पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ । लहुभूए य णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु वाससणिज्जरूवे अप्पपडिलेहे जिइंदिए विपुलतव-समिइसमन्नाए यावि भवइ ४२ ॥४४॥ ११४५. वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेणं तित्थगरनाम-गोयं कम्मं निबंधइ ४३ ॥४५॥ ११४६. सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्तिं पत्तए णं जीवे सारीर-माणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ४४ ॥४६॥ ११४७. वीयरागयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वीयरागयाए णं नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि य वोच्छिंदइ, मणुत्तेसु सह-फरिस-रस-रूव-गंधेसु चेव विरज्जइ ४५ ॥४७॥ ११४८. खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? खंतीए णं परीसहे जिणइ ४६ ॥४८॥ ११४९. मुत्तीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे यजीवे अत्थलोलानं पुरिसाणं अपत्थणिज्जे भवइ ४७ ॥४९॥ ११५०. अज्जवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ४८ ॥५०॥ ११५१. मद्दवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मद्दवयाए णं मिउमद्दवसंपन्ने अट्ट मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ ४९ ॥५१॥ ११५२. भावसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ५० ॥५२॥ ११५३. करणसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणो जीवो जहावाई तहाकारी यावि भवइ ५१ ॥५३॥ ११५४. जोगसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ ५२ ॥५४॥ ११५५. मणगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मणगुत्तयाए णं जीवे एगगं जणयइ । एगगचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ५३ ॥५५॥ ११५६. वइगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वइगुत्तयाए णं निव्विकारं जणयइ । निव्विकारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि भवइ ५४ ॥५६॥ ११५७. कायगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ५५ ॥५७॥ ११५८. मणसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मणसमाहारणयाए णं एगगं जणयइ । एगगं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च निज्जरेइ ५६ ॥५८॥ ११५९. वइसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वइसमाहारणयाए णं वइसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वइसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलभबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लभबोहियत्तं निज्जरेइ ५७ ॥५९॥ ११६०. कायसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ५८ ॥६०॥ ११६१. नाणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? नाणसंपन्नयाए णं जीवे सव्वभावाभिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरंते संसारकंतारे ण विणस्सइ । जहा सूई ससुत्ता पडिया न विणस्सइ । तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ ॥१॥ नाण-विणय-तव-चरित्तजोगे संपाउणइ, ससमय-परसमयसंघायणिज्जे भवइ ५९ ॥६१॥ ११६२. दंसणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? दंसणसंपन्नयाए णं जीवे भवमिच्छत्तछेयणं करेइ, परं न विज्झायइ, अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ६० ॥६२॥ ११६३. चरित्तसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ६१ ॥६३॥ ११६४. सोइंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सोइंदियनिग्गहेणं मणुत्तामणुत्तेसु सहसु राग-दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६२ ॥६४॥ ११६५. चक्खिदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चक्खिदियनिग्गहेणं मणुत्तामणुत्तेसु रूवेसु राग-दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६३ ॥६५॥ ११६६-६८. घाणिदिए एवं चेव ६४ ॥६६॥ जिब्भिए वि ६५ ॥६७॥ फासिदिए वि ६६ ॥६८॥ नवरं गंधेसु रसेसु फासेसु वत्तवं । ११६९. कोहविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कोहविजएणं खंतिं जणयइ, कोहवेयणिज्जं

कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६७ ॥६९॥ ११७०-७२. एवं माणे ६८ ॥७०॥ मायाए ६९ ॥७१॥ लोभे ७० ॥७२॥ नवरं मद्दवं उज्जुभावं संतोसीभावं वत्तव्वं । ११७३. पिज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पिज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजणं नाण-दंसण-चरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ अट्टविहस्स कम्मस्स कम्मगंठिविमोयणयाए । तप्पढमयाए जहाणुपुव्विं अट्टावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं पंचविहं अंतरायं एए तिन्नि वि कम्मसे जुगवं खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुत्तं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोपालोपपभासगं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं कम्मं बंधइ सुहफरिसं दुसमयट्ठिइयं; तं पढमसमए बद्धं, बिइयसमए वेइयं, तइयसमए निज्जिण्णं । तं बद्धं पुट्टं उदीरियं वेइयं, निज्जिण्णं सेयाले अकम्मं चावि भवइ ७१ ॥७३॥ ११७४. अहाउयं पालइत्ता अंतोमुहुत्तद्धावसेसाउए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ, वइजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभइ, आणापाणुनिरोहं करेइ, ईसिपंचहस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अणियट्ठिं सुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं च एए चत्तारि कम्मसे जुगवं खवेइ ७२ ॥७४॥ ११७५. तओ ओरालिय-कम्माइ च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहिता उज्जुसेट्ठिपत्ते अफुसमाणगई उद्धं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ७३ ॥७५॥ ११७६. एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्टे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए निर्दंसिए उवदंसिए त्ति बेमि ॥७६॥ ☆☆☆ ॥ सम्मत्तपरक्कमं अज्झयणं समत्तं ॥२९॥ ☆☆☆ ३० तीसइमं तवमग्गइज्जं अज्झयणं ☆☆☆ ११७७. जहा उ पावगं कम्मं राग-दोससमज्जियं । खवेति तवसा भिक्खू तमेग्गमणो सुण ॥१॥ ११७८. पाणिवह-मुसावाया अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ । राईभोयणविरओ जीवो भवइ अणासवो ॥२॥ ११७९. पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइंदिओ । अगारवो य निस्सल्लो जीवो भवइ अणासवो ॥३॥ ११८०. एएसिं तु विवच्चासे राग-दोससमज्जियं । खवेइ तं जहा भिक्खू तं मे एगमाणे सुण ॥४॥ ११८१. जहा महातलागस्स सन्निरुद्धे जलागमे । उस्सिंचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥५॥ ११८२. एवं तु संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे । भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जई ॥६॥ ११८३. सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरऽभंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमभंतरो तवो ॥७॥ ११८४. अणसणभूणोयरिया १-२ भिक्खायरिया ३ य रसपरिच्चाओ ४ । कायकिलेसो ५ संलीणया ६ य बज्झो तवो होइ ॥८॥ ११८५. इत्तरिय मरणकाला य अणसणा दुविहा भवे । इत्तरिय सावकंखा निरवकंखा उ बिइज्जिया ॥९॥ ११८६. जो सो इत्तरियतवो सो समासेण छव्विहो । सेट्ठितवो पयरतवो घणो य तह होइ वग्गो य ॥१०॥ ११८७. तत्तो य वग्गवग्गो उ पंचमो छट्ठओ पइन्नतवो । मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥ ११८८. जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया । सवियारा अवियारा कायचेट्ठं पई भवे ॥१२॥ ११८९. अहवा सप्परिकम्मा अपरिकम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि १ ॥१३॥ ११९०. ओमोयरणं पंचहा समासेण वियाहियं । दव्वओ खेत्त-कालेणं भावेणं पज्जवेहिं य ॥१४॥ ११९१. जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं तु जो करे । जहन्नेणेगसिथ्याई एवं दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥ ११९२. गामे नगरे तह रायहाणि-निगमे य आगरे पल्ली । खेडे कब्बड-दोणमुह-पट्टण-मडंब-संबाहे ॥१६॥ ११९३. आसमपए विहारे सन्निवेसे समाय-घोसे य । थलि सेणा-खंधारे सत्थे संवट्ट-कोट्टे य ॥१७॥ ११९४. वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमेत्तियं खेत्तं । कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥ ११९५. पेडा य अद्धपेडा गोमुत्ति पयंगवीहिया चेव । संबुक्कावट्टाययगंतुपच्चागया छट्टा ॥१९॥ ११९६. दिवसस्स पोरिसीणं चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो । एवं चरमाणो खलु कालोमाणं मुणेयव्वं ॥२०॥ ११९७. अहवा तइयाए पोरिसीए ऊणाए घासमेसंतो । चउभागूणाए वा एवं कालेण ऊ भवे ॥२१॥ ११९८. इत्थी वा पुरिसो वा अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि । अन्नतरवयत्थो वा अन्नतरेणं व वत्थेणं ॥२२॥ ११९९. अन्नेण विसेसेणं वण्णेणं भावमणुमुयंतं उ । एवं चरमाणो खलु भावोमाणं मुणेयव्वं ॥२३॥ १२००. दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य आहिया उ जे भावा । एएहिं ओमचरओ पज्जवचरओ भवे भिक्खू २ ॥२४॥ १२०१. अट्टविहगोयरगं तु तहा सत्तेव एसणा । अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ३

॥२५॥ १२०२. खीर-दहि-सप्पिमाई पणीयं पाण-भोयणं । परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ४ ॥२६॥ १२०३. ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जंति कायकिलेसं तमाहियं ५ ॥२७॥ १२०४. एगंतमणावाए इत्थी-पसुविवज्जिए । सयणासणसेवणया विवित्तसयणासणं ६ ॥२८॥ १२०५. एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ । अब्भंतरं तवं एत्तो वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥ १२०६. पायच्छित्तं १ विणओ २ वेयावच्चं २ तहेव सज्झाओ ४ । झाणं ५ च/ विउस्सग्गो ६ एसो अब्भंतरो तवो ॥३०॥ १२०७. आलोयणारिहादीयं पायच्छित्तं तु दसविहं । जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं १ ॥३१॥ १२०८. अब्भुद्धानं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं । गुरुभत्ति-भावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ २ ॥३२॥ १२०९. आयरियमाईए वेयावच्चम्मि दसविहे । आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ३ ॥३३॥ १२१०. वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा । अणुपेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ४ ॥३४॥ १२११. अट्ट-रोद्दाणि वज्जेत्ता झाएज्जा सुसमाहिए । धम्म-सुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ५ ॥३५॥ १२१२. सयणासण ठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे (?डे) । कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ६ ॥३६॥ १२१३. एयं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी । से खिप्पं सब्बसंसारा विप्पमुच्चइ पंडिए ॥३७॥ ति बेमि । **☆☆☆ ॥ तवमग्ग ?**

ग इज्जं समत्तं ३० ॥ ३० ॥ ☆☆☆ ३१ इगतीसइमं चरणविहिअज्ज्ञयणं ☆☆☆ १२१४. चरणविहिं पवक्खाभि जीवस्स उ सुहावहं । जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥१॥ १२१५. एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं । असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥२॥ १२१६. राग-दोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रंभई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥३॥ १२१७. दंडाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं । जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥४॥ १२१८. दिव्वे य उवसग्गे तहा तेरिच्छ-माणुसे । जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥५॥ १२१९. विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा । जे भिक्खू वज्जए निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥६॥ १२२०. वएसु इंदियत्थेसु समितीसु किरियासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥७॥ १२२१. लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥८॥ १२२२. पिंडोग्गहपडिमासू भयट्टाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥९॥ १२२३. मएसु बंभगुत्तीसु भिक्खुधम्मम्मि दसविहे । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१०॥ १२२४. उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥११॥ १२२५. किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१२॥ १२२६. गाहासोलसएहिं तहा असंजमम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१३॥ १२२७. बंभम्मिनायज्ज्ञयणेसु ठाणेसु असमाहिए । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१४॥ १२२८. एकवीसाए सबलेसुं बावीसाए परीसहे । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१५॥ १२२९. तेवीसइसूयगडे रूवाहिएसु सुरेसु य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१६॥ १२३०. पणुवीसा भावणाहिं उदेसेसु दसादिणं । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१७॥ १२३१. अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव उ । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१८॥ १२३२. पावसुयपसंगेसु मोहट्टाणेसु चेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥१९॥ १२३३. सिद्धाइगुण-जोगेसु तेत्तीसासायणासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ॥२०॥ १२३४. इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया । खिप्पं से सब्बसंसारा विप्पमुच्चइ पंडिए ॥२१॥ ति बेमि ॥ **☆☆☆ ॥ चरणविहिअज्ज्ञयणं समत्तं ॥ ३१ ॥ ☆☆☆ ३२ बत्तीसइमं पमायट्टाणं अज्ज्ञयणं ☆☆☆ १२३५.** अच्चंतकालस्स समूलगस्स सब्बस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो । तं भासओ मे पडिपुण्णाचित्ता ! सुणेह एगंतहियं हियत्थं ॥१॥ १२३६. नाणस्स सब्बस्स पगासणाए अन्नाण-मोहस्स विवज्जणाए । रागस्स दोसस्स य संखएणं एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥२॥ १२३७. तस्सेस मग्गो गुरु-विद्धसेवा विवज्जणा बालजणस्स दूरा । सज्झायएगंतनिसेवणा य सुत्तत्थसंचित्तणया धिती य ॥३॥ १२३८. आहारमिच्छे मितमेसणिज्जं सहायमिच्छे निउणट्टुबुद्धिं । निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं समाहिकामे समणे तवस्सी ॥४॥ १२३९. न वा लभेज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणतो समं वा । एक्को वि पावांइ विवज्जयंतो विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥५॥ १२४०. जहा य अंडप्पभवा बलागा अंडं बलागप्पभवं जहा य । एमेव मोहायतणं खु तण्हं मोहं च तण्हायतणं वयंति

॥६॥ १२४१. रागो य दोसो वि य कम्मबीयं कम्मं च मोहप्पभवं वदंति । कम्मं च जाई-मरणस्स मूलं दुक्खं च जाई मरणं वयंति ॥७॥ १२४२. दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा । तण्हा हया जस्स न होइ लोहो लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥८॥ १२४३. रागं च दोसं च तहेव मोहं उद्धत्तुकामेण समूलजालं । जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा ते कित्तियिस्सामि अहाणुपुब्बिं ॥९॥ १२४४. रसा पगामं न निसेवियव्वा पायं रसा दित्तिकरा नराणं । दित्तं च कामा समभिद्वंति दुमं जहा सादुफलं व पक्खी ॥१०॥ १२४५. जहा दक्खी पउरिंधणे वणे समारुओ नोवसमं उवेइ । एविदियग्गी वि पगामभोइणो न बंभचारिस्स हियाय कस्सई ॥११॥ १२४६. विवित्तसेज्जासणजंतियाणं ओभासणाणं दमिइंदियाणं । न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥१२॥ १२४७. जहा बिरालावसहस्स मूले न मूसगाणं वसही पसत्था । एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे न बंभचारिस्स खमो निवासो ॥१३॥ १२४८. न रूव-लावण-विलास-हासं न जंपियं इंगिय पेहियं वा । इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता दडुं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥ १२४९. अदंसणं चेव अपत्थणं च अचित्तणं चेव अकित्तणं च । इत्थीजणस्सारियझाणजोगं हियं सया बंभचरे रयाणं ॥१५॥ १२५०. कामं तु देवीहिं वि भूसियाहिं न चाइया खोभइतुं तिगुत्ता । तहा वि एगंतहियं ति नच्चा विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥ १२५१. मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मो । नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥ १२५२. एए य संगे समइक्कमित्ता सुहुत्तरा चेव भवंति सेसा । जहा महासागरमुत्तरित्ता नदी भवे अवि गंगासमाणा ॥१८॥ १२५३. कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स । जं काइयं माणसियं च किंचि तस्संतगं गच्छइ वीयरगो ॥१९॥ १२५४. जहा व किंपागफला मणोरमा रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा । ते खुद्दए जीविए पच्चमाणा एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥ १२५५. जे इंदियाणं विसया मणुत्ता न तेसु भावं निसिरे कयाइ । न यामणुत्तेसु मणं पि कुज्जा समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥ १२५६. चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुत्तमाहु । तं दोसहेउं अमणुत्तमाहु, समो उ जो तेसु स वीयरगो ॥२२॥ १२५७. रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुत्तमाहु, दोसस्स हेउं अमणुत्तमाहु ॥२३॥ १२५८. रूवेसु जो गेहिमुवेइ तिब्बं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे से जह वा पयंगे आलोगलोलो समुवेइ मच्चुं ॥२४॥ १२५९. जे यावि दोसं समुवेइ तिब्बं तस्सिं खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुदंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि रूवं अवरज्जई से ॥२५॥ १२६०. एगंतरत्तो रुइरंसि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥२६॥ १२६१. रूवाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तडुगुरू किलिद्वे ॥२७॥ १२६२. रूवाणुवाए ण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥२८॥ १२६३. रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुद्विं । अतुद्विदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥ १२६४. तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुसं वड्डइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥ १२६५. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो रूवे अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥ १२६६. रुवाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥३२॥ १२६७. एमेव रूवम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोघपरंपराओ । पदुद्वचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥ १२६८. रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोघपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥३४॥ १२६९. सोयस्स सद्धं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुत्तमाहु । तं दोसहेउं अमणुत्तमाहु समो य जो तेसु स वीयरगो ॥३५॥ १२७०. सद्धस्स सोयं गहणं वयंति, सोयस्स सद्धं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुत्तमाहु, दोसस्स हेउं अमणुत्तमाहु ॥३६॥ १२७१. सद्धेसु जो गेहिमुवेइ तिब्बं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे हरिणमिए व्व मुद्धे सद्धे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥३७॥ १२७२. जे यावि दोसं समुवेइ तिब्बं तस्सिं खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुदंतदोसेण सएण जंतू न किंचि सद्धं अवरज्जई से ॥३८॥ १२७३. एगंतरत्तो रुइरंसि सद्धे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥३९॥ १२७४. सद्धाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तडुगुरू किलिद्वे ॥४०॥ १२७५.

सद्धानुवाए ण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥४१॥ १२७६. सद्दे अतित्ते य परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥४२॥ १२७७. तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥४३॥ १२७८. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥ १२७९. सद्धानुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥४५॥ १२८०. एमेव सद्दम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोघपरंपराओ । पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥ १२८१. सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोघपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥४७॥ १२८२. घाणस्स गंधं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु । तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरगो ॥४८॥ १२८३. गंधस्स घाणं गहणं वयंति, घाणस्स गंधं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥ १२८४. गंधेसु जो गेहिमुवेइ तिक्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे ओसहिगंधगिद्धे सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥५०॥ १२८५. जे यावि दोसं समुवेइ तिक्वं तस्सिं खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुद्धंतदोसेण सएण जंतू न किंचि गंधं अवरज्जई से ॥५१॥ १२८६. एगंतरत्तो रुइरंसि गंधे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥५२॥ १२८७. गंधाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरुवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तड्ढगुरु किलिट्ठे ॥५३॥ १२८८. गंधाणुवाए ण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥५४॥ १२८९. गंधे अतित्ते य परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥ १२९०. तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥ १२९१. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥ १२९२. गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥५८॥ १२९३. एमेव गंधम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोघपरंपराओ । पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥ १२९४. गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोघपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥६०॥ १२९५. जिब्भाए रसं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु । तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरगो ॥६१॥ १२९६. रसस्स जिब्भं गहणं वयंति, जिब्भाए रसं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥६२॥ १२९७. रसेसु जो गेहिमुवेइ तिक्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे बडिसविभिन्नकाए मच्छे जहा आभिसभोगगिद्धे ॥६३॥ १२९८. जे यावि दोसं समुवेइ तिक्वं तस्सिं खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुद्धंतदोसेण सएण जंतू रसं न किंची अवरज्जई से ॥६४॥ १२९९. एगंतरत्तो रुइरे रसम्मि अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥६५॥ १३००. रसाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरुवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तड्ढगुरु किलिट्ठे ॥६६॥ १३०१. रसाणुवाए ण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥६७॥ १३०२. रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥६८॥ १३०३. तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥ १३०४. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥ १३०५. रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥७१॥ १३०६. एमेव रसम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोघपरंपराओ । पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥ १३०७. रसे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोघपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥७३॥ १३०८. कायस्स फासं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु । तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरगो ॥७४॥ १३१०.

फासेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे सीयजलावसन्ने गाहग्गहीए महिसे व रत्ते ॥७६॥ १३११. जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तस्सिं खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुद्धंतदोसेण सएण जंतू न किंचि फासं अवरज्झई से ॥७७॥ १३१२. एगंतरत्तो रुइरंसि फासे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥७८॥ १३१४. फासाणुवाए ण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥८०॥ १३१५. फासे अतित्ते य परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥ १३१६. तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो फासे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥ १३१७. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥ १३१८. फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥८४॥ १३१९. एमेव फासम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोघपरंपराओ । पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८५॥ १३२०. फासे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोघपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥८६॥ १३२१. मणस्स भावं गहणं वयंति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु । तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरगो ॥८७॥ १३२२. मणस्स भावं गहणं वयंति भावस्स मणं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥ १३२३. भावेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे करेणमग्गाऽवहिए गए वा ॥८९॥ १३२४. जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तस्सिं खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुद्धंतदोसेण सएण जंतू न किंचि भावं अवरज्झई से ॥९०॥ १३२५. एगंतरत्तो रुइरंसि भावे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥९१॥ १३२६. भावाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे । चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तद्दगुरू किलिट्ठे ॥९२॥ १३२७. भावाणुवाए ण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे । वए विओगे य कहिं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥९३॥ १३२८. भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥९४॥ १३२९. तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो भावे अतित्तस्स परिग्गहे य । मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥ १३३०. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥ १३३१. भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥९७॥ १३३२. एमेव भावम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोघपरंपराओ । पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥९८॥ १३३३. भावे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोघपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥९९॥ १३३४. एविदियत्था य मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो । ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं न वीयरगस्स करेति किंचि ॥१००॥ १३३५. न कामभोगा समयं उवेति, न यावि भोगा विगइं उवेति । जे तप्पदोसी य परिग्गही य सो तेसु मोहा विगइं उवेति ॥१०१॥ १३३६. कोहं च माणं च तहेव मायं लोभं दुगुंछं अरइं रइं च । हासं भयं सोग-पुमुत्थिवेयं नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥ १३३७. आवज्जई एवमणेगरूवे एवंविहे कामगुणेषु सत्तो । अन्ने य एयप्पभवे विसेसे कारुणदीणे हिरिमे वइस्से ॥१०३॥ १३३८. कप्पं न इच्छेज्ज सहायलिच्छू पच्छाणुतावेण तवप्पभावं । एवं विकारे अमियप्पकारे आवज्जई इंदियचोरवस्से ॥१०४॥ १३३९. तओ से जायति पओयणाइं निमज्जिउं मोहमहणवम्मि । सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ॥१०५॥ १३४०. विरज्जमाणस्स य इंदियत्था सद्दाइया तावइयप्पयारा । न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥ १३४१. एवं ससंकप्पविकप्पणासुं संजायती समयमुवद्वियस्स । अत्थे, य संकप्पयतो तओ से पहीयए कामगुणेषु तण्हा ॥१०७॥ १३४२. स वीयरगो कयसव्वकिच्चो खवेइ नाणावरणं खणेणं । तहेव जं दंसणमावरेइ जं चंतरायं पकरेइ कम्मं ॥१०८॥ १३४३. सव्वं तओ जाणइ पासई य अमोहणे होइ निरंतराए । अणासवे ज्ञाणसमाहिजुत्ते आउक्खए मोक्खमुवेति सुद्धे ॥१०९॥ १३४४. सो तस्स

सव्वस्स दुहस्स मुक्को जं बाहई सययं जंतुमेयं । दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो तो होइ अच्चंत सुही कयत्थो ॥१००॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ पमायट्टाणं समत्तं ॥३२॥ ☆☆☆ ३३ तेत्तीसइमं कम्मपयडिअज्झयणं ☆☆☆ १३४६. अट्ट कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहक्कमं । जेहिं बद्धे अयं जीवे संसारे परिवत्तई ॥१॥ १३४७. नाणस्सावरणिज्जं दरिसणावरणं तहा । वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥२॥ १३४८. नामकम्मं च गोयं च अंतरायं तहेव य । एवमेताइं कम्माइं अट्टेव उ समासओ ॥३॥ १३४९. नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिनिबोहियं । ओहनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥४॥ १३५०. निदानिदा तहेव पयला निदा य पयलपयला य । तत्तो य थीणगिद्धी उ पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥ १३५१. चक्खु-मचक्खू-ओहिस्स दरिसणे केवले य आवरणे । एवं तु नवविकप्पं नायव्वं दरिसणावरणं ॥६॥ १३५२. वेयणीयं पि य दुविहं सायमसायं च आहियं । सायस्स उ बहू भेया एमेव असायस्स वि ॥७॥ १३५३. मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तहा । दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥८॥ १३५४. सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्माभिच्छत्तमेव य । एयाओ तिन्नि पगडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥ १३५५. चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं । कसायवेयणिज्जं च नोकसायं तहेवय ॥१०॥ १३५६. सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं । सत्तविह नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ॥११॥ १३५७. नेरइय-तिरिक्खाउं मणुस्साउं तहेव य । देवाउयं चउत्थं तु आउकम्मं चउव्विहं ॥१२॥ १३५८. नामकम्मं च दुविहं सुहं असुहं च आहियं । सुहस्स उ बहू भेया एमेव असुहस्स वी ॥१३॥ १३५९. गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं । उच्चं अट्टविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥१४॥ १३६०. दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तहा । पंचविहमंतरायं समासेण वियाहियं ॥१५॥ १३६१. एयाओ मूलपगडीओ उत्तराओ य आहिया । पएसग्गं खेत्त-काले य भावं चादुत्तरं सुण ॥१६॥ १३६२. सव्वेतसं चेव कम्माणं पएसग्गं अणंतगं । गंठिगसत्ताइयं अंतो सिद्धाण आहियं ॥१७॥ १३६३. सव्वजीवाणं कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं । सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण वद्धगं ॥१८॥ १३६४. उदहिसरिसनामाणं तीसतिं कोडिकोडीओ । उक्कोसिया होइ ठिई अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥ १३६५. आवरणिज्जाण दोणहं पि वेयणिज्जे तहेव य । अंतराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥ १३६६. उदहिसरिसनामाणं सत्तरिं कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥ १३६७. तेत्तीससागरोवम उक्कोसेण वियाहिया । ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥ १३६८. उदहिसरिसनामाणं विसतिं कोडिकोडीओ । नाम-गोयाण उक्कोसा, अट्टमुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥ १३६९. सिद्धाणऽणंतभागो अणुभागा भवन्ति उ । सव्वेसु वि पएसग्गं सव्वजीवेसऽइच्छियं ॥२४॥ १३७०. तम्हा एएसिं कम्माणं अणुभागे वियाणिया । एएसिं संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥२५॥ त्ति बेमि ॥ ☆☆☆ ॥ कम्मपगडी समत्ता ॥३३॥ ☆☆☆ ३४ चउत्तीसइमं लेसऽज्झयणं ☆☆☆ १३७१. लेसज्झयणं पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कमं । छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥१॥ १३७२. नामाइं १ वण्ण-रस-गंध-फास-परिणाम-लक्खेणं २-७ । ठाणं ८ ठिई ९ गइं १० चाउं ११ लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥ दारगाहा १३७३. किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य । सुक्कलेसा य छट्ठा उ नामाइं तु जहक्कमं ॥३॥ दारं १ १३७४. जीमूतनिद्धसंकासा गवल-रिद्धगसन्निभा । खंजंजण-नयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥ १३७५. नीलासोगसंकासा चासपिंछसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥ १३७६. अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा । पारेवयगीर्वाभा काउलेसा उ वण्णओ ॥६॥ १३७७. हिंगुलुयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा । सुयतुंड-पईवन्निभा तेउलेसा उ वण्णओ ॥७॥ १३७८. हरियालभेयसंकासा हलिद्धाभेयसन्निभा । सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥ १३७९. संखंक-कुंदसंकासा खीरपूरसमप्पभा । रयय-हारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥९॥ दारं २ १३८०. जह कडुयतुंबगरसो निंबरसो कडुयरोहिणिरसो वा । एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ किण्हाए नायव्वो ॥१०॥ १३८१. जह तिगडुगस्स य रसो तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा । एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥ १३८२. जह तरुणअंबगरसो तुवरकविट्ठस्स वा वि जारिसओ । एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ काऊए नायव्वो ॥१२॥ १३८३. जह परिणयंबगरसो पक्ककविट्ठस्स वा वि जारिसओ । एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ तेऊए

नायव्वो ॥१३॥ १३८४. वरवारुणीए व रसो विविहाण व आसवाण जारिसओ । महु-मेरगस्स व रसो एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥ १३८५. खज्जूर-मुद्दियरसो खीररसो खंड-सक्कररसो वा । एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥ दारं ३ १३८६. जह गोमडस्स गंधो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स । एत्तो वि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥ १३८७. जह सुरहिकुसुमसुगंधो गंध-वासाण पिस्समाणाणं । एत्तो वि अणंतगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१७॥ दारं ४ १३८८. जह करगयस्स फासो गोजिब्भाए व सागपत्ताणं । एत्तो वि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥ १३८९. जह बूरस्स व फासो नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं । एत्तो वि अणंतगुणो पसत्थलेसाणं तिण्हं पि ॥१९॥ दारं ५ १३९०. तिविहो व नवविहो वा सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा । दुसओ तेयालो वा लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥ दारं ६ १३९१. पंचासवप्पवत्तो तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य । तिब्बारंभपरिणओ खुद्धो साहसिओ नरो ॥२१॥ १३९२. निब्बंधसपरिणामो निस्संसो अजिइंदिओ । एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥ १३९३. ईसा-अमरिस-अतवो अविज्ज माया अहीरिया । गिब्धी पओसे य सढे पमत्ते रसलोलुए ॥२३॥ सायगवेसए य ॥ १३९४. आरंभाओ अविरओ खुद्धो साहसिओ नरो । एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥ १३९५. वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए । पलिउंचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥२५॥ १३९६. उप्फालग-दुट्टुवाई य तेणे यावि य मच्छरी । एयजोगसमाउत्तोकाउलेसं तु परिणमे ॥२६॥ १३९७. नीयावत्ती अचबले अमाई अकुतूहले । विणीयविणए दंते जोगवं उवहाणवं ॥२७॥ १३९८. पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए । एयजोगसमाउत्तो तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥ १३९९. पयणुकोह-माणे य माया लोभे य पयणुए । पसंतचित्ते दंतप्पा जोगवं उवहाणवं ॥२९॥ १४००. तहा पयणुवाई य उवसंते जिइंदिए । एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥ १४०१. अट्ट-रोद्दाणि वज्जेत्ता धम्म-सुक्काणि साहए । पसंतचित्ते दंतप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥ १४०२. सरागे वीयरगे वा उवसंते जिइंदिए । एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥३२॥ दारं ७ १४०३. असंखेज्जाणोसप्पिणीण उस्सप्पिणीण जे समया । संखाईया लोगा लेसाण हवंति ठाणाई ॥३३॥ दारं ८ १४०४. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तऽहिया । उक्कोसा होइ ठिती नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥ १४०५. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥ १४०६. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥ १४०७. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥ १४०८. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही हुंति मुहुत्तमब्भहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥ १४०९. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥ १४१०. एसा खलु लेसाण ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ । चउसु वि गईसु एत्तो लेसाणं ठितं तु वोच्छामि ॥४०॥ १४११. दस वाससहस्साइं काऊए ठिई जहन्निया होइ । तिण्णुदही पलियमसंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥ १४१२. तिण्णुदही पलियमसंखभागो जहन्न नीलठिई । दस उदही पलियमसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥ १४१३. दस उदही पलियमसंखभागं जहन्निया होइ । तेत्तीससागराइं उक्कोसा होइ किण्हाए ॥४३॥ १४१४. एसा नेरइयाणं लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ । तेण परं वोच्छामी तिरिय-मणुस्साण देवाणं ॥४४॥ १४१५. अंतोमुहुत्तमद्धं लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ । तिरियाणं च नराणं वज्जेत्ता केवलं लेसं ॥४५॥ १४१६. मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ । नवहिं वरिसेहिं ऊणा नायव्वा सुक्कसाए ॥४६॥ १४१७. एसा तिरिय-नराणं लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ । तेण परं वोच्छामी ठिती उ देवाणं ॥४७॥ १४१८. दस वाससहस्साइं किण्हाए ठिती जहन्निया होइ । पलियमसंखेज्जइमो उक्कोसा होइ किण्हाए ॥४८॥ १४१९. जा किण्हाए ठिती खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया । जहन्नेणं नीलाए नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥४९॥ १४२०. जा नीलाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया । जहन्नेणं काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥५०॥ १४२१. तेण परं वोच्छामी तेउलेसा जहा सुरगणाणं । भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं च ॥५१॥ १४२२. पलिओवमं जहन्नं, उक्कोसा सागरा उ दोण्णऽहिया । पलियमसंखेज्जेणं होई भागेण तेऊए ॥५२॥ १४२३. दस वाससहस्साइं तेऊए ठिई जहन्निया होइ । दोण्णुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥५३॥ १४२४. जा तेऊए ठिती खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेणं पम्हाए, दस मुहुत्तऽहियाइं उक्कोसा ॥५४॥ १४२५. जा पम्हाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया । जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीस मुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥
 दारं ९ १४२६. किण्हा नीला काऊ तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ । एयाहिं तिहिं वि जीवो दोग्गइं उववज्जई ॥५६॥ १४२७. तेऊ पम्हा सुक्का तिन्नि वि एयाओ
 धम्मलेसाओ । एयाहिं तिहिं वि जीवो सोग्गइं उववज्जई ॥५७॥ दारं १० १४२८. लेसाहिं सव्वाहिं पढमे समयम्मिपरिणयाहिं तु । न हु कस्सइ उववाओ परे भवे
 होइ जीवस्स ॥५८॥ १४२९. लेसाहिं सव्वाहिं चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु । न हु कस्सइ उववाओ परे भवे हवइ जीवस्स ॥५९॥ १४३०. अंतोमुहुत्तम्मि गए
 अंतमुहुत्तम्मि सेसए चेव । लेसाहिं परिणयाहिं जीवा गच्छंति परलोगं ॥६०॥ दारं ११ १४३१. तम्हा एयासि लेसाणं अणुभावं वियाणिया । अप्पसत्थाओ वज्जेत्ता
 पसत्थाओ अहिट्ठए ॥६१॥ ति बेमि ॥ **☆☆☆** ॥ लेसऽज्झयणं समत्तं ॥३४॥ **☆☆☆** ३५ पंचतीसइमं अणगारमग्गइयं अज्झयणं **☆☆☆**
 १४३२. सुणेह मे एगगमणा मग्गं बुद्धेहिं देसियं । जमायरंतो भिक्खू दुक्खाणंतकरो भवे ॥१॥ १४३३. गिहवासं परिच्चज्ज पव्वज्जामासिओ मुणी । इमे संगे
 वियाणेज्जा जेहिं सज्जंति माणवा ॥२॥ १४३४. तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अब्बंभसेवणं । इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ॥३॥ १४३५. मणोहरं चित्तघरं
 मल्ल-धूवेण वासियं । सकवाडं पंडरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥४॥ १४३६. इंदियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए । दुक्कराई निवारेउं कामरागविवह्णो
 ॥५॥ १४३७. सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगगो । पइरिक्के परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥६॥ १४३८. फासुयम्मि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए । तत्थ
 संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥७॥ १४३९. न सयं गिहाइं कुव्वेज्जा नेव अत्तेहिं कारणे । गिहकम्मसमारंभे भूयाणं दिस्सए व्हो ॥८॥ १४४०. तसाणं थावराणं
 च सुहुमाणं बायराण य । तम्हा गिहसमारंभं संजओ परिवज्जए ॥९॥ १४४१. तहेव भत्त-पाणेसु पयणे पयावणेसु य । पाण-भूयदयद्वाए न पए न पयावए ॥१०॥
 १४४२. जल-धन्ननिस्सिया जीवा पुडवी-कट्टनिस्सिया । हम्मंति भत्त-पाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥ १४४३. विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
 नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥ १४४४. हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए । समलेट्टु-कंचणे भिक्खु विरए कय-विक्कए ॥१३॥ १४४५.
 किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ । कय-विक्कयम्मि वट्टंतो भिक्खू होइ न तारिसो ॥१४॥ १४४६. भिक्खियव्वं, न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवित्तिणा । कय-
 विक्कओ महादोसो भिक्खावित्ति सुहावहा ॥१५॥ १४४७. समुयाणं उंछमेसेज्जा जहासुतमणिदियं । लाभालाभम्मि संतुट्टे पिंडवायं चरे मुणी ॥१६॥ १४४८. अलोले,
 न रसे गिद्धे जिब्भादंते अमुच्छिणए । न रसद्वाए भुंजेज्जा, जावणद्वा महामुणी ॥१७॥ १४४९. अच्चणं रयणं चेव वंदणं पूयणं तहा । इट्ठी-सक्कार-सम्माणं मणसा वि
 न पत्थए ॥१८॥ १४५०. सुक्कज्झाणं झियाएज्जा अनियाणे अकिंचणे । वोसट्टुकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥ १४५१. निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मो
 उवट्टिए । चइऊण माणुसं बोदिं पहू दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥ १४५२. निम्ममो निरहंकारो वीयरागो अणासवो । संपत्तो केवलंनाणं सासयं परिनिव्वुडे ॥२१॥ ति
 बेमि ॥ **☆☆☆** ।अणगारमग्गं समत्तं ॥३५॥ **☆☆☆** ३६ छत्तीसइमं जीवाजीवविभत्तिअज्झयणं **☆☆☆** १४५३. जीवाजीवविभत्तिं सुणेह मे
 एगमणा इओ । जं जाणिऊण भिक्खू सम्मं जयइ संजमे ॥१॥ १४५४. जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए । अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए ॥२॥
 १४५५. दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥३॥ १४५६. रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा
 वुत्ता, रूविणो वि चउव्विहा ॥४॥ १४५७. धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पदेसे य आहिए । अधम्मो तस्स देसे य तप्पदेसे य आहिए ॥५॥ १४५८. आगासे तस्स देसे य
 तप्पएसे य आहिए । अब्बासमए चेव अरूवी दसहा भवे ॥६॥ १४५९. धम्माधम्मो य दो वेए लोगमेत्ता वियाहिया । लोगालोगे य आकासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥
 १४६०. धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणादिया । अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया ॥८॥ १४६१. समए वि संतइं पप्प एवमेव वियाहिए । आएसं पप्प
 साईए अप्पज्जवसिए वि य ॥९॥ १४६२. खंधा य खंधदेसा य तप्पएसा तहेव य । परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥ १४६३. एगत्तेण पुहत्तेण खंधा
 य परमाणुणो । लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ । एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥११॥ १४६४. संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य । ठिई

पडुच्च सादीया सपज्जवसिया वि य ॥१२॥ १४६५. असंखकालमुक्कोसा एकं समयं जहन्निया । अजीवाण य रूवीणं ठिती एसा वियाहिया ॥१३॥ १४६६. अणंतकालमुक्कोसं एकं समयं जहन्नयं । अजीवाण य रूवीणं अंतरेयं वियाहियं ॥१४॥ १४६७. वण्णओ गंधओ चैव रसओ फासओ तहा । संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पंचहा ॥१५॥ १४६८. वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया । किण्हा नीला य लोहिया हलिद्धा सुक्किला तहा ॥१६॥ १४६९. गंधओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया । सुब्धिगंधपरिणामा दुब्धिगंधा तहेव य ॥१७॥ १४७०. रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया । तित्त-कडुय-कसाया अंबिला महुरा तहा ॥१८॥ १४७१. फासओ परिणया जे उ अट्टहा ते पकित्तिया । कक्खडा मउया चैव गरुया लहुया तहा ॥१९॥ १४७२. सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया । इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥२०॥ १४७३. संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया । परिमंडला य वट्टा तंसा चउरंसमायया ॥२१॥ १४७४. वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२२॥ १४७५. वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२३॥ १४७६. वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२४॥ १४७७. वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२५॥ १४७८. वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२६॥ १४७९. गंधओ जे भवे सुब्धी भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२७॥ १४८०. गंधओ जे भवे दुब्धी भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२८॥ १४८१. रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥२४॥ १४८२. रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३०॥ १४८३. रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३१॥ १४८४. रसओ अंबिले जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३२॥ १४८५. रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३३॥ १४८६. फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३४॥ १४८७. फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३५॥ १४८८. फासओ गरुए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३६॥ १४८९. फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३७॥ १४९०. फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३८॥ १४९१. फासओ उण्हा जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥३९॥ १४९२. फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥४०॥ १४९३. फासओ लुक्खाए जे उ भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए संठाणओ वि य ॥४१॥ १४९४. परिमंडलसंठाणे भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥४२॥ १४९५. संठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥४३॥ १४९६. संठाणओ भवे तंसे भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥४४॥ १४९७. संठाणओ य चउरंसे भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥४५॥ १४९८. जे आययसंठाणे भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥४६॥ १४९९. एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया । एत्तो जीवविभत्तिं वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥४७॥ १५००. संसारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया । सिद्धा णेगविहा वूत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥४८॥ १५०१. इत्थी-पुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा । सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य ॥४९॥ १५०२. उक्कोसोगाहणाए य जहन्न-मज्झिमाए य । उहं अहे य तिरियं च समुद्धम्मि जलम्मि य ॥५०॥ १५०३. दस य नपुंसएसुं वीसतिं इत्थियासु य । पुरिसेसु य अट्टसयं समएणेगेण सिज्झई ॥५१॥ १५०४. चत्तारि य गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेव य । सलिंगेण य अट्टसयं समएणेगेण सिज्झई ॥५२॥ १५०५. उक्कोसोगाहणाए उ सिज्झंते जुगवं दुवे । चत्तारि जहन्नाए जवमज्झाऽट्टुत्तरं सयं ॥५३॥ १५०६. चउरुहलोगे य दुवे समुदे तओ जले वीसमहे तहेव । सयं च अट्टुत्तरं तिरियलोए समएणेगेण उ सिज्झई धुवं ॥५४॥ १५०७. कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पडिहिया ? । कहिं बोदिं चइत्ताणं कत्थ

गंतूण सिज्झई ? ॥५५॥ १५०८. अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्टिया । इहं बोदिं चइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झई ॥५६॥ १५०९. बारसहिं जोयणेहिं सव्वद्वस्सुवरिं भवे । ईसीपब्भारनामा पुढवी छत्तसंठिया ॥५७॥ १५१०. १५१०. पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया । तावइयं चव वित्थिण्णातिगुणो तस्सेव परिरओ ॥५८॥ १५११. अट्टजोयणबाहल्लासा मज्झम्मि वियाहिया । परिहायंती चरिमंते मच्छियपत्ताओ तणुययरी ॥५९॥ १५१२. अज्जुणसुवण्णगमई सा पुढवी निम्मला सहावेण । उत्ताणगछत्तयसंठिया य भणिया जिणवरेहिं ॥६०॥ १५१३. संखंक-कुंदसंकासा पंडरा निम्मला सुभा । सीयाए जोयणे तत्तो लोयंतो उ वियाहिओ ॥६१॥ १५१४. जोयणस्स उ जो तत्थ कोसो उवरिमो भवे । तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६२॥ १५१५. तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्टिया । भवपवंचउम्मुक्का सिद्धिं वरगइं गया ॥६३॥ १५१६. उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ । तिभागहीणां तत्तो य सिद्धाणोगाहा भवे ॥६४॥ १५१७. एगत्तेण सादीया अपज्जवसिया वि य । पुहत्तेण अणादीया अपज्जवसिया वि य ॥६५॥ १५१८. अरुविणो जीवघणा नाण-दंसणसन्निया । अतुलं सुह संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥६६॥ १५१९. लोएगदेसे ते सव्वे नाण-दंसणसन्निया । संसारपारनित्थिण्णा सिद्धिं वरगइं गया ॥६७॥ १५२०. संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया । तसा य थावरा चव, थावरा तिविहा तहिं ॥६८॥ १५२१. पुढवी-आउजीवा य तहेव य वणस्सई । इच्चेते थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥६९॥ १५२२. दुविहा पुढविजीवा उ सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेव दुहा पुणो ॥७०॥ १५२३. बायरा जे पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया । सण्हा खरा य बोद्धव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७१॥ १५२४. किण्हा नीला य रुहिरा य हालिद्दा सुक्किला तहा । पंडू पणगमट्टीया, खरा छत्तीसईविहा ॥७२॥ १५२५. पुढवी १ य सक्करा २ वालुया ३ य उवले ४ सिला ५ य लोणूसे ६-७ । अय ८ तंब ९ तउय १० सीसग ११ रूप १२ सुवण्णे १३ य वइरे य १४ ॥७३॥ १५२६. हरियाले १५ हिंगुलुए १६ मणोसिला १७ सासगंजण १८-१९ पवाले २० । अब्भपडल-ऽब्भवालुय २१-२२, बादरकाए मणिविहाणे ॥७४॥ १५२७. गोमेज्जए य रुयए अंके फलिहे य लोहियक्खे य । मरगय मसारगल्ले भुयमोयग इंदनीले य ॥७५॥ १५२८. चंदण गेरुय हंसगब्भ पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे । चंदप्पभ वेरुलिए जलकंते सुरफंते य ॥७६॥ १५२९. एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया । एगविहमनाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७७॥ १५३०. सुहुमा सव्वलोगम्मि लोएगदेसे य बायरा । एत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥७८॥ १५३१. संतइं पप्पऽणादीया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥७९॥ १५३२. बावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे । आउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८०॥ १५३३. असंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया । कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अमुंचओ ॥८१॥ १५३४. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढम्मि सए काए पुढविजीवाण अंतरं ॥८२॥ १५३५. एएसिं वण्णओ चव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥८३॥ १५३६. दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥८४॥ १५३७. बादरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया । सुद्धोदए य उस्से हरतणु महिया हिमे ॥८५॥ १५३८. एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया । सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोएगदेसे य बायरा ॥८६॥ १५३९. संतइं पप्पऽणादीया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया वि य ॥८७॥ १५४०. सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे । आउठिती आऊणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८८॥ १५४१. असंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया । कायठिती आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥८९॥ १५४२. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढम्मि सए काए आउजीवाण अंतरं ॥९०॥ १५४३. एएसिं वण्णओ चव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥९१॥ १५४४. दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥९२॥ १५४५. बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया । साहरणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥९३॥ १५४६. पत्तेयसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया । रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा ॥९४॥ १५४७. वलय पव्वया कुहणा जलरुहा ओसही तहा । हरियकाया य बोद्धव्वा पत्तेया इति आहिया ॥९५॥ १५४८. साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया । आलुए मूलए चव सिंगबेरे तहेव य ॥९६॥ १५४९. हिरिली सिरिली सिस्सिरिली जावई केयकंदली । पलंडु-लसणकंदे य कंदली य कुहुव्वए

॥९७॥ १५५०. लोहिणीहूयथीहूयतुहगायतहेवय। कण्हेयवज्जकंदेयकंदेसूरणेतहा॥९८॥ १५५१. अस्सकण्णीयबोद्धव्वासीहकण्णीतहेवय। मुसुंठीयहलिद्दायणेगहाएवमायओ॥९९॥ १५५२. एगविहमणाणत्तासुहुमातत्थवियाहिया। सुहुमासव्वलोगम्मि, लोदेसेयबायरा॥१००॥ १५५३. संतइं पप्पण्णार्इयाअपज्जवसियाविय। ठिइं पडुच्चसादीयासपज्जवसियाविय॥१०१॥ १५५४. दसचेवसहस्साइंवासाणुक्कोसियाभवे। वणप्फईणआउं तु, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं॥१०२॥ १५५५. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। कायठिईपणगाणं तं कायं तु अमुंचओ॥१०३॥ १५५६. असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। विजढम्मिसएकाएपणजीवाणअंतरं॥१०४॥ १५५७. एसिं वण्णओचेवगंधओरस-फासओ। संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो॥१०५॥ १५५८. इच्चेएथावरातिविहासमासेणवियाहिया। एत्तोउतसेतिविहेवोच्छामिअणुपुव्वसो॥१०६॥ १५५९. तेऊवाऊयबोधव्वाओरालातसातहा। इच्चेएतसातिविहा, तेसिंभेएसुणेहमे॥१०७॥ १५६०. दुविहातेउजीवाउसुहुमाबायरातहा। पज्जत्तमपज्जत्ताएवमेएदुहापुणो॥१०८॥ १५६१. बायराजेउपज्जत्ताणेगहातेवियाहिया। इंगालेमुम्मुरेअगणीअच्चीजालातहेवय॥१०९॥ १५६२. उक्काविज्जूयबोधव्वाणेगहाएवमायओ। एगविहमणाणत्तासुहुमातेवियाहिया॥११०॥ १५६३. सुहुमासव्वलोगम्मिलोदेसेयबायरा। एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं॥१११॥ १५६४. संतइं पप्पण्णार्इयाअपज्जवसियाविय। ठिइं पडुच्चसाईयासपज्जवसियाविय॥११२॥ १५६५. तिण्णेवअहोरत्ताउक्कोसेणवियाहिया। आउठितीतेऊणं, अंतोमुहुत्तंजहन्निया॥११३॥ १५६६. असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। कायठिईतेऊणं तं कायं तु अमुंचओ॥११४॥ १५६७. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। विजढम्मिसएकाएतेउजीवाणअंतरं॥११५॥ १५६८. एसिं वण्णओचेवगंधओरस-फासओ। संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो॥११६॥ १५६९. दुविहावाउजीवाउसुहुमाबायरातहा। पज्जत्तमपज्जत्ताएवमेएदुहापुणो॥११७॥ १५७०. बायराजेउपज्जत्तापंचहातेपकित्तिया। उक्कलिया-मंडलिया-घण-गुंजा-सुद्धवायाय॥११८॥ १५७१. संवट्टगवाएयणेगहाएवमायओ। एगविहमणाणत्तासुहुमातत्थवियाहिया॥११९॥ १५७२. सुहुमासव्वलोगम्मिलोदेसेयबायरा। एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं॥१२०॥ १५७३. संतइं पप्पण्णार्इयाअपज्जवसियाविय। ठिइं पडुच्चसाईयासपज्जवसियाविय॥१२१॥ १५७४. तिन्नेवसहस्साइंवासाणुक्कोसियाभवे। आउठिईवाऊणं, अंतोमुहुत्तंजहन्निया॥१२२॥ १५७५. असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। कायठिईवाऊणं तं कायं तु अमुंचओ॥१२३॥ १५७६. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। विजढम्मिसएकाएवाउजीवाणअंतरं॥१२४॥ १५७७. एसिं वण्णओचेवगंधओरस-फासओ। संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो॥१२५॥ १५७८. ओरालातसाजेउचउहातेपकित्तिया। बेइंदियतेइंदियचउरोपंचेदियाचेव॥१२६॥ १५७९. बेइंदियाउजेजीवादुविहातेपकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्तातेसिंभेएसुणेहमे॥१२७॥ १५८०. किमिणोसोमंगलाचेवअलसामाइवाहया। वासीमुहायसिप्पीयासंखासंखणगातहा॥१२८॥ १५८१. घल्लोयाअणुल्लयाचेवतहेवयवराडगा। जलूगाजालगाचेवचंदणातहेवय॥१२९॥ १५८२. इइबेइंदियाएणेगहाएवमादओ। लोएगदेसेतेसव्वेनसव्वत्थवियाहिया॥१३०॥ १५८३. संतइं पप्पण्णार्इयाअपज्जवसियाविय। ठिइं पडुच्चसाईयासपज्जवसियाविय॥१३१॥ १५८४. वासाइंबारसेवउउक्कोसेणवियाहिया। बेइंदियआउठिईअंतोमुहुत्तंजहन्निया॥१३२॥ १५८५. संखेज्जकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तंजहन्निया। बेइंदियकायठिईतं कायं तु अमुंचओ॥१३३॥ १५८६. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। बेइंदियजीवाणअंतरेयं वियाहियं॥१३४॥ १५८७. एसिं वण्णओचेवगंधओरस-फासओ। संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो॥१३५॥ १५८८. तेइंदियाउजीवादुविहातेपकित्तिया। पज्जत्तमपज्जत्तातेसिंभेएसुणेहमे॥१३६॥ १५८९. कुंथूपिवील्लिउइंसाउक्कलुइंदियातहा। तणहारकडुहारायमालूगापत्तहारगा॥१३७॥ १५९०. कप्पासट्ठिमिंजायतिंदुगतुउसमिंजगा। सतावरीयगुम्मीयबोद्धव्वाइंदगाइया॥१३८॥ १५९१. इंदगोवगमाईयाणेगहाएवमायओ। लोएगदेसेतेसव्वेनसव्वत्थवियाहिया॥१३९॥ १५९२. संतइं पप्पण्णार्इयाअपज्जवसियाविय। ठिइं पडुच्चसाईयासपज्जवसियाविय॥१४०॥ १५९३. एगूणपण्णहोरत्ताउक्कोसेणवियाहिया। तेइंदियआउठिई,

अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४१॥ १५९४. संखेज्जकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया । तेइंदियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥१४२॥ १५९५. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । तेइंदियजीवाणं अंतरेयं वियाहियं ॥१४३॥ १५९६. एएसिं वण्णओ चैव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥१४४॥ १५९७. चउरिदिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥१४५॥ १५९८. अंधिया पोत्तिया चैव मच्छिया मसगा तथा । भमरे कीडपयंगे य ढेंफुणे कुक्कुडे तथा ॥१४६॥ १५९९. कुक्कुडे(हे) सिगिरीडी य नंदावत्ते य विच्छिए । डोले भिंगारी य पिरिली अच्छिवेहए ॥१४७॥ १६००. अच्छिले माहए अच्छिरोडए विचित्ते चित्तपत्तए । ओहिंजलिया जलकारी य नीया तंतवगाइया ॥१४८॥ १६०१. इइ चउरिदिया एए णेगहा एवमायओ । लोगस्स एगदेसम्मि ते सब्बे परिकित्तिया ॥१४९॥ १६०२. संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१५०॥ १६०३. छुच्चेव य मासा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । चउरिदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५१॥ १६०४. संखेज्जकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया । चउरिदियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥१५२॥ १६०५. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । चउरिदियजीवाणं अंतरेयं वियाहियं ॥१५३॥ १६०६. एएसिं वण्णओ चैव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥१५४॥ १६०७. पंचिदिया उ जे जीवा चउहा ते वियाहिया । नेरइय तिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया ॥१५५॥ १६०८. नेरइया सत्तविहा पुढवीसू सत्तसू भवे । रयणाभ सक्कराभा वालुयामा य आहिया ॥१५६॥ १६०९. पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तथा । इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥१५७॥ १६१०. लोगस्स एगदेसम्मि ते सब्बे उ वियाहिया । एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१५८॥ १६११. संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठियं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१५९॥ १६१२. सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया । पढमाए, जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥१६०॥ १६१३. तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । दोच्चाए, जहन्नेणं एगं तू सागरोवमं ॥१६१॥ १६१४. सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । तइयाए, जहन्नेणं तिन्नेव सागरोवमा ॥१६२॥ १६१५. दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । चउत्थीए, जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा ॥१६३॥ १६१६. सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । पंचमाए, जहन्नेणं दस चैव उ सागरोवमा ॥१६४॥ १६१७. बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । छट्ठीए, जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥१६५॥ १६१८. तेत्तीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया । सत्तमाए, जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥१६६॥ १६१९. जा चैव य आउठिई नेरइयाणं वियाहिया । सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६७॥ १६२०. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढम्मि सए काए नेरइयाणं तु अंतरं ॥१६८॥ १६२१. एएसिं वण्णओ चैव गंधओ रस-फासओ । संठाणादंसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥१६९॥ १६२२. पंचिदियतिरिक्खा ऊ दुविहा ते वियाहिया । सम्मुच्छिमतिरिक्खा ऊ गब्भवक्कंतिया तथा ॥१७०॥ १६२३. दुविहा ते भवे तिविहा जलयरा थलयरा तथा । खहयरा य बोद्धव्वा तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७१॥ १६२४. मच्छा य कच्छभा या गाहा य मगरा तथा । सुंसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा जलयराऽऽहिया ॥१७२॥ १६२५. लोएगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया । एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१७३॥ १६२६. सतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१७४॥ १६२७. एगा य पुव्वकोडी ऊ उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७५॥ १६२८. पुव्वकोडीपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया । कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥ १६२९. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढम्मि सए काए जलयराणं तु अंतरं ॥१७७॥ १६३०. एएसिं वण्णओ चैव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥१७८॥ १६३१. चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे । चउप्पया चउविहा उ ते मे कित्तयओ सुण ॥१७९॥ १६३२. एगखुरा दुखुरा चैव गंडीपय सणप्पया । हयमाई गोणमाई गयमाई सीहमाइणो ॥१८०॥ १६३३. भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे । गोहाई अहिमाईया एक्केक्का णेगहा भवे ॥१८१॥ १६३४. लोएगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया । एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१८२॥ १६३५. संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१८३॥ १६३६. पलिओवमा उ तिन्नि उ उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं

जहन्निया ॥१८४॥ १६३७. पलिओवमा उ तिन्नि उक्कोसेण वियाहिया । पुव्वकोडीपुहत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥ १६३८. कायठिई थलयराणं; अंतरं तेसिमं भवे । कालं अणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१८६॥ १६३९. एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥१८७॥ १६४०. चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खी य । विततपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८८॥ १६४१. लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया । एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१८९॥ १६४२. संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१९०॥ १६४३. पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे । आउठिई खहयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९१॥ १६४४. असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ । पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९२॥ १६४५. कायठिई खहयराणं; अंतरं तेसिमं भवे । कालं अणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१९३॥ १६४६. एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्सासो ॥१९४॥ १६४७. मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण । समुच्छिमा य मणुया गभ्वक्कंतिया तहा ॥१९५॥ १६४८. गभ्वक्कंतिया जे उ तिविहा ते वियाहिया । अकम्म-कम्मभूमा य अंतरदीवया तहा ॥१९६॥ १६४९. पन्नरस-तीसइविहा भेया य अट्टवीसइं । संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया ॥१९७॥ १६५०. सम्मुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहिओ । लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९८॥ १६५१. संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठिइं पडुच्च साइया सपज्जवसिया वि य ॥१९९॥ १६५२. पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२००॥ १६५३. पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया । पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥ १६५४. कायठिई मणुयाणं; अंतरं तेसिमं भवे । अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२०२॥ १६५५. एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो ॥२०३॥ १६५६. देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण । भोमेज्ज वाणमंतर जोइस वेमाणिय तहा ॥२०४॥ १६५७. दसहा उ भवणवासी, अट्टहा वणचारिणो । पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०५॥ १६५८. असुरा नाग सुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया । दीवोदहि दिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥२०६॥ १६५९. पिसाय भूय जक्खा य रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा । महोरगा य गंधव्वा अट्टहा वाणमंतरा ॥२०७॥ १६६०. चंदा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा । दिसाविचारिणो चेव पंचहा जोइसालया ॥२०८॥ १६६१. वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया । कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥२०९॥ १६६२. कप्पोवगा बारसहा-सोहम्मिसाणगा तहा । सणंकुमार माहिंदा बंभलोगा य लंतगा ॥२१०॥ १६६३. महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा । आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥२११॥ १६६४. कप्पाईया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया । गेवेज्जाऽणुत्तरा चेव जेवेग्गा नवविहा तहिं ॥२१२॥ १६६५. हेट्टिमाहेट्टिमा चेव हेट्टिमामज्झिमा तहा । हेट्टिमाउवरिमा चेव, मज्झिमहेट्टिमा तहा ॥२१३॥ १६६६. मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा । उवरिमाहेट्टिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥२१४॥ १६६७. उवरिमाउवरिमा चेव इइ गेवेज्जगा सुरा । विजया वेजयंता य जयंता अपराजिया ॥२१५॥ १६६८. सव्वट्टिसिद्धगा चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा । इइ वेमाणिया एए णेगहा एवमादओ ॥२१६॥ १६६९. लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया । एत्तो कालविभागं तु तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥२१७॥ १६७०. संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य । ठियं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥२१८॥ १६७१. साहीयं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे । भोमेज्जाण, जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥२१९॥ १६७२. पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे । वंतराणं, जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥२२०॥ १६७३. पलिओवमं तु एगं वासलक्खेण साहियं । पलिओवमट्टभागो जोइसेसु जहन्निया ॥२२१॥ १६७४. दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया । सोहम्मम्मि, जहन्नेणं एगं तु पलिओवमं ॥२२२॥ १६७५. सागरा साहिया दोण्णि उक्कोसेण वियाहिया । ईसाणम्मि, जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥२२३॥ १६७६. सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिती भवे । सणंकुमारे, जहन्नेणं दोन्नि ऊ सागरोवमा ॥२२४॥ १६७६. साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे । माहिंदम्मि, जहन्नेणं साहिया दोन्नि सागरा ॥२२५॥ १६७८. दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिती भवे । बंभलोए, जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२६॥ १६७९. चोदस उ सागराइं उक्कोसेण ठिती भवे ।

लंतगम्मि, जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥२२७॥ १६८०. सत्तरस सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । महासुक्के, जहन्नेणं चोदस सागरोवमा ॥२२८॥ १६८१. अट्टारस सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । सहस्सारे, जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥२२९॥ १६८२. सागरा अऊणवीसं तु उक्कोसेण ठिती भवे । आणयम्मि, जहन्नेणं अट्टारस सागरोवमा ॥२३०॥ १६८३. वीसं तु सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । पाणयम्मि, जहन्नेणं सागरा अऊणवीसई ॥२३१॥ १६८४. सागरा एकवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे । आरणम्मि, जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥२३२॥ १६८५. बावीस सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । अचुयम्मि, जहन्नेणं सागरा एकवीसई ॥२३३॥ १६८६. तेवीस सागराई उक्कोसेण ठिई भवे । पढमम्मि, जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥२३४॥ १६८७. चउवीस सागराई उक्कोसेण ठिई भवे । बिइयम्मि, जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥२३५॥ १६८८. पणवीस सागराई उक्कोसेण ठिई भवे । तइयम्मि, जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥२३६॥ १६८९. छव्वीस सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । चउत्थम्मि, जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥२३७॥ १६९०. सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिती भवे । पंचमम्मि, जहन्नेणं सागरा उ छवीसई ॥२३८॥ १६९१. सागरा अट्टावीसं तु उक्कोसेण ठिती भवे । छट्ठम्मि, जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥२३९॥ १६९२. सागरा अऊणतीसं तु उक्कोसेण ठिती भवे । सत्तमम्मि, जहन्नेणं सागरा अट्टवीसई ॥२४०॥ १६९३. तीसं तु सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । अट्टमम्मि, जहन्नेणं सागरा अऊणतीसई ॥२४१॥ १६९४. सागरा एकतीसं तु उक्कोसेण ठिती भवे । नवमम्मि, जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥२४२॥ १६९५. तित्तीस सागराई उक्कोसेण ठिती भवे । चउसुं पि विजयाईसुं जहन्नेणं एगतीसई ॥२४३॥ १६९६. अजहन्नमणुक्कोसा तित्तीसं सागरोवमा । महाविमाणसव्वट्ठे ठिती एसा वियाहिया ॥२४४॥ १६९७. जा चेव य आउठिई देवाणं तु वियाहिया । सा तेसिं कायठिई जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥२४५॥ १६९८. अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढमि सए काए देवाणं होज्जं अंतरं ॥२४६॥ १६९९. एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रस-फासओ । संठाणादेसओ वा वि विहाणाई सहस्ससो ॥२४७॥ १७००. संसारत्था य सिद्धा य इति जीवा वियाहिया । रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥२४८॥ १७०१. इति जीवमजीवे य सोच्चा सद्वहिऊण य । सव्वनयाणं अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी ॥२४९॥ १७०२. तओ बहूणि वासाणि सामणमणुपालिया । इमेण कमजोएणं अप्पाणं संलिहे मुणी ॥२५०॥ १७०३. बारसेव उ वासाई संलेहुक्कोसिया भवे । संवच्छर मज्झिमिया छम्मासे य जहन्निया ॥२५१॥ १७०४. पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहणं करे । बितिए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥२५२॥ १७०५. एगंतरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे । तओ संवच्छरऽद्धं तु नाऽइविगिट्ठं तवं चरे ॥२५३॥ १७०६. तओ संवच्छरऽद्धं तु विगिट्ठं तु तवं चरे । परिमियं चेव आयामं तम्मि संवच्छरे करे ॥२५४॥ १७०७. कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी । मासऽद्धमासिएणं आहारेणं तवं चरे ॥२५५॥ १७०८. कंदप्पमाभिओगं किब्बिसियं मोहमासुरुत्तं च । एयाओ दोग्गईओ मरणम्मि विराहिया होति ॥२५६॥ १७०९. मिच्छादंसणरंता सनियाणा हु हिंसगा । इय जे मरंति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५७॥ १७१०. सम्मदंसणरत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा सुलभा तेसिं भवे बोही ॥२५८॥ १७११. मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा किण्हलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५९॥ १७१२. जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करेति भारेणं । अमला असंकिलिद्धा ते होति परित्तसंसारी ॥२६०॥ १७१३. बालमरणाणि बहुसो अकाममरणाणि चेव य बहूणि । मरिहिति ते वराया जिणवयणं जे न याणंति ॥२६१॥ १७१४. बहुआगमविन्नाणा समाहिउप्पायगा य गुणगाही । एएण कारणेणं अरिहा आलोयणं सोउं ॥२६२॥ १७१५. कंदप्प-कोक्कुयाई तहसील-सहाव-हसण-विकहाहिं । विम्हाविंतो य परं कंदप्प भावणं कुणइ ॥२६३॥ १७१६. मंताजोगं काउं भुईकम्मं च जे पउंजंति । साय-रस-इड्ढिहेउं अभिओगं भावणं कुणइ ॥२६४॥ १७१७. नाणस्स केवलीणं धम्मायरियस्स संघ-साहूणं । माई अवण्णवाई किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥२६५॥ १७१८. अणुबद्धरोसपसरो तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी । एएहिं कारणेहिं आसुरियं भावणं कुणइ ॥२६६॥ १७१९. सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो य । अणायारभंडसेवा जम्मण-मरणाणि बंधंति ॥२६७॥ १७२०. इति पादुकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए । छत्तीसं उत्तरऽज्झाए भवसिद्धियसम्मए ॥२६८॥ त्ति बेमि ॥ ॥ जीवाजीवविभत्ती ॥३६॥ ५५५५ ॥ उत्तरज्ज्ञयणसुयक्खंधो समत्तो ॥५५५५ उत्तरज्ज्ञयणाणि समत्ताणि ५५५५